मासिक
jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

नवम्बर 2015, वर्ष : 10 अंक : 7

**आतिशबाजी नहीं...
अहंकार को जलाएं...
पर्यावरण को बचाएं...**

दीपावली पर्व पर सभी नागर समाजजनों को हार्दिक बधाई

नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास के तत्वावधान में अन्नकूट महोत्सव समिति के सहयोग से

अन्नकूट महोत्सव-2015 (56 भोग)

का भव्य आयोजन

विशेष :
14 नवम्बर 2015, शनिवार
को श्री सुन्दरकांड का पाठ
रात्रि 8 से 11 बजे

आप सादर आमंत्रित हैं...

स्थान : श्री हाटकेश्वर धाम, हरसिद्धि की पाल, उज्जैन

दिनांक : 15 नवम्बर 2015, रविवार

समय : प्रातः 8 बजे - अभिषेक पूजन

11 बजे - अन्नकूट दर्शन

11.30 बजे - महाप्रसादी

-निवेदक-

विजयप्रकाश मेहता, सौ. शैल मेहता

गाँधीग्राम कॉलोनी, नागदा जं. (म.प्र.)

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा

वितरण एवं शिकायत
दीपक शर्मा-9425063129

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

बुराईयों को जलाने से होने वाली रोशनी से मनेगी दीपावली

दशहरा अर्थात् विजय पर्व, वास्तव में आजकल त्यौहार प्रतिकात्मक रूप से मनाएं जाने लगे हैं, जबकि प्रत्येक त्यौहार को मनाने का एक मकसद होता है, मतलब होता है। इसी प्रकार विजयादशमी बुराई को भस्म कर देने का दिन है, काम-क्रोध, लोभ मोह जो इंसान के सबसे बड़े शत्रु है, इनका नाश किया जाना चाहिए। इसके बाद मनुष्य को बीस दिन का अवसर मिलता है। यह तय करने के लिए कि वास्तव में तन-मन की बुराईयों का नाश हुआ है कि नहीं?

दीपावली का त्यौहार मनाने का हक केवल उसी को है जो विजयादशमी पर बुराइयों को जलाकर राख कर चुका है। बल्कि उन बुराईयों को जलाने से आंतरिक एवं बाह्य रोशनी होती है, उसी से असली दीपावली मनती है। घर की देहरी पर दीपक जला देना ही दीपावली नहीं है। मन की देहरी पर भी एक दीपक जलना चाहिए और वह तभी जलेगा जब हम प्रत्येक इंसान के साथ प्रेम एवं भाईचारे का सम्बंध जोड़ेंगे। उसके दुख-सुख में साथ रहेंगे। क्रोध नहीं करेंगे, लोभ नहीं करेंगे, ईर्ष्या नहीं करेंगे। नारी को माँ के समान सम्मान देंगे। शास्त्रानुकूल कर्म एवं आचरण करेंगे।

रावण अत्यंत विद्वान ब्राह्मण था, परन्तु अहंकार की वजह से उसका नाश हो गया। मनुष्य को यशस्वी बनने के लिए बहुत सारे गुणों को अर्जित करना पड़ता है, परन्तु सत्यानाश के लिए एक ही अवगुण काफी होता है, अतः हमारे अवगुणों का नाश अत्यावश्यक है, वही वास्तविक विजय है। विजयादशमी से पूर्व नौ दिन माँ की आराधना में भी दुष्टों के नाश का ही प्रसंग है, नौ दिनों तक अवगुण रुपी दुष्टों का नाश किया जाकर दसवें दिन विजय पर्व मनाया जाए, उसके पश्चात् बीस दिन तक कसौटी पर कसा जाए कि क्या वास्तव में बुराईयों रुपी रावण का अंत हो गया है तो उसके बाद दीपावली मनाई जाए। प्रतिवर्ष यही सिलसिला चलता रहे, आप देखिए कि वास्तव में जब ज्ञान का दीप जलता है तो हमारे एवं आसपास के वातावरण में कितना परिवर्तन आता है। एक सुखमय जीवन की शुरुआत होगी जो वास्तव में प्रकाशमान होगा। फिर तो दीपावली का इंतजार भी सालभर करने की जरूरत नहीं, रोज दीपावली मनेगी। स्वयं प्रकाशमान बनेंगे तथा जिनके सम्पर्क में आएंगे उन्हें भी प्रकाशमान कर देंगे।

-संगीता दीपक शर्मा

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो.9425063129, 9826095995, 9926285002

मूल्य 10/-रुपये

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

समाचार पत्र और सामाजिक पत्रिका में अन्तर

समाचार पत्र और एक सामाजिक पत्रिका में बड़ा अंतर होता है, समाचार पत्र के लिए प्रकाशन सामग्री स्वयं को जुटाना पड़ती है, जगह-जगह संवाददाताओं की नियुक्ति करना पड़ती है तथा देश-विदेश की खबरे प्राप्त करने के लिए टेलीप्रिन्टर सेवा की मदद लेना पड़ती है। उसमें एक कालम जरुर होता है जो पाठकों की राय से सम्बंधित होता है तथा पाठक अपने विचार उस कालम में छपवा सकते हैं। परन्तु सामाजिक पत्रिका में समाजजनों द्वारा भेजे गए लेख एवं रचनाएं प्रकाशित की जाती है।

जो समाजजन इस भ्रम में है कि सामाजिक पत्रिका को भी स्वयं आयोजनों एवं अवसरों की खबरें जुटाना चाहिए तो यह गलत है। कईं संगठन आयोजनों के संबंध में सूचनाएं नहीं भेजते तथा यह आशा करते हैं कि प्रकाशन होगा तो यह कैसे संभव है। याद रहे कि जो सूचनाएं एवं रचनाएं जय हाटकेश वाणी कार्यालय तक पहुंचेगी वे अवश्य ही प्रकाशित होगी, क्योंकि यही तो मुख्य उद्देश्य है। समाज के लेखकों को ही पत्रिका में प्रमुख स्थान प्रदान किया जा रहा है। ज्यादा से ज्यादा पाठक अपने विचार एवं समाचार भेजें, उन्हें अवश्य स्थान दिया जाएगा। ई-मेल पर यदि रचनाएं भेजते हैं तो मनीष शर्मा से मो.9926285002 पर अवश्य कन्फर्म कर लेवें कि मेल आया है या नहीं? कईं बार मेल मिल नहीं पाते एवं पाठकों की शिकायत रहती है कि हमारी रचनाएं छपी नहीं। मेरा समाज के सभी संगठनों एवं पाठकों से निवेदन है कि वे अपनी गतिविधियों, कार्यक्रमों की खबरें एवं विचार अवश्य भेजें उनका प्रकाशन किया जाएगा, क्योंकि यह सूचना का माध्यम है, प्रचार का माध्यम है, जितना अधिक प्रचार होगा, उतना कार्यक्रम सफल होगा। इस भ्रम को भी दूर करें कि पत्रिका वाले स्वयं लेकर खबरें छापेंगे, क्योंकि स्वयं लेने में कईं बार गड़बड़ी हो जाती है।

अतः अपने संगठन के जिम्मेदार पदाधिकारी को जवाबदारी दें कि वे हाटकेश वाणी तक हर गतिविधि की सूचना भेजते रहें। वे संगठन भी जिनके मुखपत्र प्रकाशित हो रहे हैं, क्योंकि पत्र-पत्रिका का उद्देश्य प्रचार करना है, वह जितना अधिक होगा लाभ उतना ही अधिक होगा।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

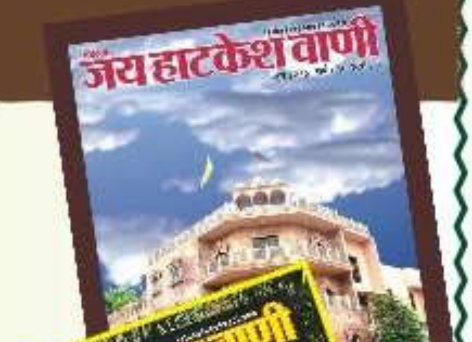

मैं ....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) ....

....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड़, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com

E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

श्री हाटकेश्वर परिषद् कोलकाता द्वारा शैक्षिक प्रतिभाओं का सम्मान

श्री हाटकेश्वर परिषद् कोलकाता के तत्वावधान में शारदीय नवरात्र के अवसर पर रास-गरबा का भव्य आयोजन 25 अक्टूबर 2015, रविवार को कलकत्ता गुजराती समाज 14 माधव चटर्जी लेन (पद्मोपुकुर) में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अंतर्गत पहले पारम्परिक गरबा एवं तदुपरान्त विशेष आमंत्रित गरबा गायक श्री जितेन भाई कलवानी एवं उनके समूह द्वारा लोकप्रिय गरबो की प्रस्तुति दी गई। गरबे में सामूहिक गरबा एवं डांडिया रास का आयोजन हुआ। इस अवसर पर 2014-15 में परिषद् द्वारा शैक्षिक पुरस्कारों की घोषणा तथा विवरण किया गया। आयोजन में महानगर के नागर सपरिवार उपस्थित थे। आयोजन का समापन अल्पाहार के साथ हुआ। यह जानकारी अध्यक्ष श्री प्रवीण झा एवं सचिव श्री केशवलाल मेहता ने दी।

पुरस्कार मां नगद राशी तथा मानपत्र द्वारा निम्न विषयों मां उच्चतम अंकों थी उत्तीर्ण थया विद्यार्थीयों ने सम्मानित करवा मां आवशे।

क्र.	पुरस्कार	श्रेणी	राशी रु.	विषय
1.	श्रीमती कुसुम झा स्मृति पुरस्कार	10वीं बोर्ड	1500	सर्वोच्च अंक
2.	श्री पशुपति नाथ झा पुरस्कार	10वीं बोर्ड	1800	गणित
		12वीं बोर्ड	1800	गणित
3.	श्री माधवलाल मेहता पुरस्कार	12वीं बोर्ड	750	सर्वोच्च अंक
4.	स्व.अनन्त ठाकौर तथा श्रीमती उमेद ठाकौर पुरस्कार	10वीं बोर्ड	300	इंग्लिश
5.	श्री श्यामदेव झा पुरस्कार	12वीं बोर्ड	1500	इंग्लिश एवं प्रांतीय भाषा
6.	श्री श्रीकान्त मेहता तथा	10वीं बोर्ड	600	हिन्दी
	श्रीमती उमा देवी पुरस्कार	12वीं बोर्ड	600	हिन्दी
7.	श्री केशव राम दवे पुरस्कार	10वीं बोर्ड	750	इंग्लिश
		12वीं बोर्ड	750	इंग्लिश
8.	स्व.जगदीश्वर झा पुरस्कार	12वीं बोर्ड	660	सर्वोच्च अंक
9.	डॉ.बी.आर. झा अवार्ड	12वीं बोर्ड	6000	सर्वोच्च अंक बायलॉजी
10.	श्री लक्ष्मण राम नागर	10वीं बोर्ड	1000	सर्वोच्च अंक विज्ञान
	मेमोरियल अवार्ड	12वीं बोर्ड	1000	सर्वोच्च अंक विज्ञान
11.	श्रीमती गोमती देवी एवं कृष्णशंकर याज्ञनिक	10वीं बोर्ड	1600	सर्वोच्च अंक फिजिक्स
12.	श्रीमती सरला मेहता एवं पुरुषोत्तम मेहता	12वीं बोर्ड	1600	सर्वोच्च अंक केमिस्ट्री

अध्यक्ष
श्री प्रवीण झा
मो.9830622095

सचिव
श्री केशवलाल मेहता
मो.9830053297

नासिक से बांसवाड़ावासियों का खास नाता

14 जुलाई 2015 को ध्वजारोहण के साथ जिस रामकुण्ड, पंचवटी नासिक में सिंहस्थ पर्वकाल कुंभ मेले का आगाज हुआ वहीं 11 अगस्त 2016 को ध्वजावतरण के साथ विश्राम करेगा। इस दौरान पहला शाही स्नान 29 अगस्त, दूसरा शाही स्नान 13 सितम्बर और तीसरा शाही स्नान 18 सितम्बर 2015 को सम्पन्न हुआ। गुरु गृह का सिंह राशि में प्रवेश करने की महत्वपूर्ण घटना में माँ गोदावरी का भी जन्म दिवस मनाया जाता है। पूरे भारतवर्ष से अखाड़ों के साधु संत, अपने शिष्यों के साथ बड़े ठाट-बाट से नासिक आते हैं और पंचवटी तपोवन में विशेष सिंहस्थ ग्राम बसाया जाता है, कई महंत राजसी मुद्राओं में हाथी, ऊंट, और पालखियों में बैठकर रामकुंड में आते हैं।

अखाड़ों में गोसावी, बैरागी, उदासी, संन्यासी, निमोही, नागा, दिगम्बर, रामानुज एवं अन्य कई संन्यासी भाग लेते हैं, जिसमें विदेशी पर्यटकों की संख्या भी कम नहीं होती। यहाँ गंगा गोदावरी का मंदिर है जो 12 वर्षों में इसी सिंहस्थ पर्व पर खुलते हैं, ये वहाँ अपना शीश नवाते हैं और उसके बाद ही अन्य भाविक तथा पर्यटकों को रामकुण्ड में उतरने की सुविधाएं उपलब्ध होती है। व्यवस्था की दृष्टि से तपोवन से रामघाट तक स्नान के लिये उपयुक्त घाटों का निर्माण करवा दिया गया है और इसी मार्ग से अखाड़ों के महंत स्नान हेतु आते हैं। अतः इसे शाही मार्ग के नाम से ही जाना-पहचाना जाता है।

यह पंचवटी भगवान राम के वनवास सीता गुफा और रावण द्वारा सीताहरण की ऐतिहासिक यादों को समेटे हुए है। यहाँ गोरे राम और काले राम के भव्य मंदिरों की प्राचीनता हमारा ध्यान बरबस खींच लेती है। प्रति 12 वर्षों में यह आयोजन दोहराया जाता है। जब पुनः गुरु (बृहस्पति) गृह राशि सिंह राशि ने प्रवेश करते हैं और बाद में कन्या राशि में प्रस्थान करते हैं।

बांसवाड़ा नागर समाज के लिये चारों कुम्भ स्थल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ही है, परन्तु नासिक में चतुर्सम्प्रदाय अखाड़ा और महंत दीन-बंधुदासजी की कर्मस्थली अधिक आकर्षण पैदा कर रही है।

यह संयोग है कि श्री दीनबंधुदासजी ने नासिक को बांसवाड़ा से जोड़ा। इतिहास गवाह है कि बचपन से रुपा पढ़ाई में मन न लगा सके और मार के डर से 11 वर्ष की उम्र में घर छोड़कर निकल पड़े पंचवटी नासिक पहुँचकर घाट पर बने नीलकंठ मंदिर पर बैठे थे कि अचानक एक साधु आए और उनसे पूछा कि साधु बनना चाहते हो, उन्हें तो मन की मुराद मिल गई। साधु ने उन्हें पंचवटी में चतुर्सम्प्रदाय अखाड़ा के महंत से मिलवाया और इन्होंने उन्हें अपना गुरु बना लिया।

गुरु माता को चिंता हुई कि यह अगर इसी प्रकार सेवा करता रहा तो इस सम्पत्ति का मालिक हो जाएगा। अतः उसे यातना देनी शुरु की वे वहाँ से परेशान होकर अयोध्या आए और नागा साधुओं ने उन्हें दीक्षित करने का प्रयास किया। पुनः रामसुंदरजी उन्हें अपने आश्रम लाए हनुमान चालीसा से पढ़ना सिखाया, धार्मिक पुस्तकों से शिक्षण प्रारम्भ हुआ, वृन्दावन नवद्वीप से प्रहाप्रभूजी और बंगला साहित्य को आत्मसात किया और आप स्वामी करपात्रीजी, शंकराचार्यजी निरंजनदेव तीर्थ और कृष्ण बोधाश्रम के सम्पर्क में आए।

राम राज्य परिषद और धर्मसंघ को सहयोग करने लगे, गोवध बंदी आंदोलन में लाठियों के प्रहार भी झेले, और सभी ने उनकी इच्छा के विपरित अखाड़े का महंत बना दिया। बालाजी की विशाल मूर्ति की प्रतिष्ठा और उसी अनुरुप विशाल मंदिर बनवाया, अब बांसवाड़ा आकर माता की आज्ञा से दीक्षा ली और बांसवाड़ा-नासिक

का परस्पर सम्बंध बन गया। गुरु बिहारीदासजी के ब्रह्मलीन होने पर यही रूपा दीनबंधुदासजी हुए और अखंड बाल ब्रह्मचारी और भक्त शिरोमणी होने से गुरु की शादी पर बैठाया, यह गादी अद्वेत-द्वेत, विशिष्टद्वेत और शुद्धाद्वेत का संगम चतुःसम्प्रदाय है।

अ.भा. गौ सम्प्रदाय के अध्यक्ष बने नासिक कुम्भ की महती जिम्मेदारियों को वहन करते उज्जैन प्रयाग में भी अपने अखाड़ों की सक्रिय भूमिका अदा करते और बांसवाड़ा निवासियों को सदा भगवत् नाम और संकीर्तन, कुम्भ मेले और धार्मिक यात्रात्रों के लिये प्रेरित करते रहे। स्वयं अपने साथ ही यात्राओं की व्यवस्था करवाते और वही परम्परा बांसवाड़ा में आज भी बरकरार है, सम्पत्ति से उन्हें कभी मोह नहीं रहा और स्वस्थ अवस्था में ही बंगाली साधु को अपना कार्यभार सौंप कर भ्रमण को ही प्राथमिकता दी। उज्जैन कुम्भ में आज भी अखाड़े का टेंट रहता है परन्तु उत्तम स्वामीजी के केम्प में लोगों की साधना बढ़ी है। हाटकेश्वर धाम के नवनिर्माण से उसकी तरफ भी लगाव बढ़ेगा यह निश्चित ही हमारा प्रेरणा स्त्रोत रहेगा।

-श्रीमती मंजू प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा मो.09413947938

नवरात्रि महोत्सव का हीरो-यश जानी

नागर समाज के कई कार्यक्रमों में यश जानी को ढोलक पर संगत करते हुए देखा था, परन्तु इस वर्ष नवरात्रि महोत्सव में अम्बा माता मंदिर में जहाँ पूरे बांसवाड़ा के श्रद्धालु एकत्र होते हैं और गरबों में घूमने का आनंद प्राप्त करते हैं, वहां यश ने हमारे यहाँ ढोल पर संगत करने वाले कलाकार श्री कन्हैयाभाई को अपने हुनर से चकित किया, वरन् मंजिरे और प्यानों पर भी अपना कौशल दिखाया। यश मात्र 11 वर्ष के हैं तथा कक्षा चौथी में अध्ययनरत है। परन्तु गरबा की प्रस्तुति जहाँ हजारों की संख्या में खेलने वालों की और उतनी ही दर्शकों की संख्या रहती है, वहाँ ताल और लय बद्ध प्रस्तुति देकर सभी को मोहित कर दिया। उसने चाचर चौक में गरबा खेलकर सभी विधाओं में पारंगत होने का प्रमाण पेश किया। वह समाज के श्री गजेन्द्र पंड्या और संदीप पंड्या के साथ संगत एवं रियाज कर कला को निखारता भी रहता हैं। परिवार एवं समाज उनकी उपलब्धि से गौरवान्वित है।

उदयपुर में दो सौ साल से चल रही है गरबे की परम्परा

नागरों की पोल में तालियां बजाकर खेले जाते हैं गरबा

मेवाड़ा में आज भी कई पर्व और त्यौहार अपनी अलग ही संस्कृति से पृथक पहचान बनाए हुए हैं। एक ओर जहाँ नवरात्र के दिनों में डीजे की धुन पर डांडिया लेकर महिला-पुरुष रमते हैं वहीं दूसरी ओर शहर में नागरों की पोल ऐसी जगह है, जहाँ महिलाएँ तालियां बजाती है और लोग गरबा रमते हैं। यह परंपरा पिछले दो सौ साल से चली आ रही है। इस दौरान मूर्ति की स्थापना के बजाय प्रतिमा को स्थापित किया जाता है। आयोजन को लेकर नागर समाज ने एक समिति का भी गठन कर रखा है।

नागर समाज के गोपाल नागर ने बताया कि आज से दो सौ साल पहले मेवाड़ के महाराणा प्रतापसिंह के शासनकाल के दौरान उन्हें उदयपुर लाकर बसाया गया था। मेवाड़ की धरा उस काल में सूखी धरती के रूप में विख्यात थी तो नागर समाज ने महाराणा के कहने पर इन्द्र देवता को प्रसन्न करने के लिये यज्ञ-हवन और अनुष्ठान किया, तब भरपूर बारिश हुई थी और चारो तरफ हरियाली आच्छादित हो गई। इस दौरान श्यामवेद, युजर्वेद के ज्ञाता शिवदत्त नागर, पन्नालाल नागर, सवाईलाल नागर आदि थे, जिन्होंने एक अनुष्ठान किया, जिसका नाम गरबा रखा गया। इसे माँ की आराधना के रूप में कालांतर में जाना गया। बताया गया कि परिवार में पुत्र या पुत्री के जन्म पर गरबा माताजी को पदराने की परंपरा भी शुरु हुई। वहीं किसी के परिवार में शादी होती तो वह परिवार गरबा लिवाता था। इस दौरान महिलाएं तालियां बजाकर गरबा गाती और लोग झूमते थे। आज भी यही परंपरा अक्षुण्ण रूप से जीवंत है। बताते हैं कि इन गरबों का आनंद उठाने के लिए मेवाड़ के महाराणा अपना रानियों के साथ पहुँचते थे। नवरात्र में महिलाएँ गरबा और गरबियां गाती है।

-विजय नागर, उदयपुर

आद्यशक्ति शक्तिपीठ आरासुरी
अम्बाजी पद यात्रा का रजत जयंती वर्ष

बोल मारी अंबे, जय-जय अम्बे और अम्बा भवानी जय जगदम्बे के गगनभेदी जयकारों के बीच मस्ती में झूमते गाते गले में फूल-मालाएं और गुलालों से भरे चेहरे माँ अंबा को मिलने को आतुर भक्तजन वडनगरा नागर मंडल बांसवाड़ा के पूनम मंडल द्वारा आयोजित रजत जयंती अंबाजी पदयात्रा नागरवाड़ा स्थित ज्वालामुखी मंदिर से 18 सितम्बर 2015 को रवाना हुई बांसवाड़ा के अंबाजी मंदिर तक समाज जन बिदाई देने पहुँचे।

विगत 25 वर्षों से इन श्रद्धालुओं के रात्रि विश्राम हेतु निरंतर चर्चा और मंत्रणा होती रहती है। इस दौरान कार्यक्रमों और विश्राम स्थलों का परिवर्तन भी होता रहा है। इस वर्ष प्रथम रात्रि विश्राम वजवाणा, द्वितीय विश्राम- भिलोड़ा राम मंदिर, तीसरा- आंतरी, चौथा- भुवनेश्वर महादेव मंदिर, पांचवा- शामलाजी मंदिर, गुजरात, छठां- कानपुर, सातवां- खेडब्रह्मा का रहा। रास्ते भर विभिन्न समाज के भक्तों ने विभिन्न स्थानों पर चाय-पानी, नाश्ते व भोजन की व्यवस्था की थी। मंडल भी अपने साथ एक ट्रक में भोजन बनाने की व्यवस्थाएं लेकर चलता ही है। ताकि असुविधा न हो।

विगत पाँच वर्षों से हमारे समाज जन भी इडर और आसपास के स्थानों पर पानी के पाउच, बिस्किट लेकर उपस्थित रहते हैं जिनका नेतृत्व निर्मल कुमार त्रिवेदी करते आ रहे हैं। साथ में चिकित्सा सुविधाओं से लैस डॉ.मधूसुदन दवे अपना केम्प लगाते हैं। पद यात्रियों का जत्था 26 सितम्बर 2015 को सुबह पांच बजे शक्तिपीठ अंबाजी पहुँचकर बांसवाड़ा से साथ ले जाई गई धर्मध्वजा माताजी को अर्पण की गई।

पश्चात् पिताम्बर पहनकर माताजी के पूजन एवं चंडीपाठ का आयोजन किया एवं अम्बाजी कार्यालय से थाल प्राप्त कर महाभोग धराया गया। यही क्रम तीन दिन पूनम तक दोहराया गया। पदयात्रा में वडनगरा नागर समाज के अध्यक्ष (वर्तमान) श्री दिलीप दवे के अलावा अधिकतम यात्राओं में उपस्थित दर्ज करवाने वाले राकेश पण्डया और पीयूष भाई झा थे तो डॉ.नागेश दवे, नीलेश, हरेश, हेमांग, क्षितीज, तिलक झा, संजय त्रिवेदी, देवेन्द्र त्रिवेदी, उमेश पंचोली, बलवंत पंड्या, जगदीश पंड्या, अंकित पवित्र झा, मिलाप, विक्रम, मित, पर्व, जयदेव, कुणाल, उपलब्ध शिवांग सम्मिलित हुए। देवेन्द्र पंड्या जैसे उत्साही अधिकतम यात्राओं में उपस्थिति देने वालों की अनुपस्थिति खल रही थी। ऐसे भक्तों में डॉ. मधूसुदन दवे, प्रजेन्द्र पंड्या, जानकीवल्लभजी निर्मल त्रिवेदी, यतीष, हिमेश, हिमांशु, देवांग और एकमात्र महिला प्रतिनिधि श्रीमती चेतना याज्ञिक स्वागतार्थ उपस्थित थे। वडनगरा नागर समाज की इस धर्मशाला (म्हाड़) में एक हाल ही होने से प्रारंभिक वर्षों में खेड़ब्रह्मा से अम्बाजी पैदल आने वाली महिलाओं को सुविधाओं के अभाव में नहीं आने की अपील करनी पड़ी थी। जिसे बहुत ही अनमने ढंग से उन्होंने स्वीकार किया था। पिछले वर्षों में एक ही रंग की टी-शर्ट जैसे कई उत्साहवर्द्धक निर्णय लिए गए। इस वर्ष युवाओं का जोश देखने योग्य था। 28 सितम्बर 2015 का दिन अंबाजी से विदाई हेतु तय था। सभी अपनी यादें लेकर बांसवाड़ा पहुंचे जहाँ माँ ज्वाला की आरती उतार कर यात्रा सकुशल होने पर माँ जगदम्बा और वडिलो से आशीर्वाद लिया।

-चेतना नागर
नागरवाड़ा, बांसवाड़ा (राज.)

श्री गणेशाम्बिकेभ्यो नमः

गर्व से कहो हम नागर हैं।

समग्र गुजरात नागर परिषद (महामंडल)

Email : sgnagarparishad@yahoo.com

कार्यालय : C/o रीता नरेश राजा 458 , जेठाभाइनी पोल, पोस्ट ऑफिस के सामने, खाडिया, अहमदाबाद 380 001 (गुज.)

दूरभाष - 079-22140688 मोबाईल : 09974034466, 9426749833

दिनांक : 014-10-2015

प्रिय हाटकेशबंधु /भगिनी

जयहाटकेश

हार्दिक शुभ कामनासह सहर्ष विदित किया जाता है कि "समग्र गुजरात नागर परिषद" महामंडल, अहमदाबाद द्वारा सन 1998 से प्रतिवर्ष आयोजित जीवनसाथी पसंदगी संमेलन की नवमदश वीं कडी का आयोजन दिनांक 3-1-2016 रविवार को अहमदाबाद में प्रस्तावित है ।

हमें अत्यंत प्रसन्नता होगी यदि आपकी सहभागिता की जानकारी आप हमें संलग्न प्रपत्र को सम्पूर्ण रुप से भरकर दिनांक 20-12-2015 तक ही उपर वर्णित कार्यालयीन पते पर भिजवाकर सुनिश्चित करें । इसके पश्चात, प्राप्त होने वाले आवेदनपत्र स्वीकार करना संभव नहीं होगा, कृपया नोट लेंवे । जरुरत पर इसी फोर्म की फोटो कोपी भी भरकर भेज सकेंगे । यदी आपको इस आवेदनपत्र की आवश्यकता ना हो तो आप अन्य जरुरतमंद नागर ब्राह्मण परिवार को देकर आभारी करें । आवेदन पत्र सुवाच्य हींदी लीपी में स्पष्ट लीखाई में ही भरे ।

उमेदवारी पत्रक - युवक/युवती

अहमदाबाद कार्यालय पर आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तारीख 20-12-2015

कृपया पासपोर्ट साइज का हाल ही में खिंचा हुआ रंगीन (2) फोटो यहां चिपकायें (स्टेपलर ना करें.)

नाम ______

(सरनेम) (प्रथम नाम) - (पिता का नाम)

सम्पर्क हेतु पूरा पता ______

______ पिनकोड : ______

दूरभाष (STD कोड सहित) ______ मोबाइल क्र. ______

नागर व ब्राह्मण / गृहस्थ / उपज्ञाति - विसनगरा / वड़नगरा / साठोदरा /चित्रोडा / प्रश्नोरा /दशोरा ______ मूलवतन / शहर ______

अभ्यास ______ व्यवसाय ______ पोस्ट/पद ______ मासिक आय ______

उमेदवार का : वजन ______ किलोग्राम ______ ऊँचाई ______ रंग ______ चश्मा है/नही ______

जन्म दिनांक ______ जन्म स्थल ______ जन्म समय (Am/Pm) दिवस, / रात्रे) ______

(निकटस्थ शहर एवं प्रदेश का नाम भी लिखे)

अपरणित / विधुर / विधवा / तलाकसुदा)

विकलांग (यदि लागू हो तो सम्पूर्ण जानकारी देवे)

क्या जन्माक्षर मानते है ______ मंगल है / नहीं ______ शनि है /नहीं ______

गोत्र ______ नाडी ______ नक्षत्र ______

E-mail का पता : Add ______

जीवन साथी से अपेक्षाएं (संक्षेप में)

पिता का नाम– माता का नाम व सही ______ उम्मीदवार की सही ______

रु. 300/- आवेदक के रु 150/- प्रथम अभीभावके और उसके बाद प्रत्येक अभिभावकके २००/- के कुल रु. हम घोषित करते हैं । कुल रुपये

चैन्नई में विशाल भक्ति जागरण

चैन्नई में नवरात्रि के अन्तर्गत गरबे एवं विशाल भक्ति जागरण का कार्यक्रम 17 अक्टूबर 2015 को श्री नरेशजी (नैनमलजी) नागर के निवास पर किया गया।

25 अक्टूबर को कुलदेवी माताजी की पूजा तथा भोजन प्रसादी का कार्यक्रम हुआ, जिसमें नागर ब्राह्मण समाज के सभी परिवार एवं इष्ट मित्रों को आमंत्रित किया गया। ज्ञातव्य है कि नागर परिवार द्वारा प्रतिवर्ष नवरात्रि के अंतर्गत गरबे आयोजित किए जाते हैं।

हाटकेश्वरनाथ नागर ब्राह्मण मंडल के चुनाव सम्पन्न

हाटकेश्वरनाथ नागर ब्राह्मण मंडल **नईदिल्ली** की निर्वाचन बैठक 3 अक्टूबर 2015 को जेसीओ क्लब डिफैंस कॉलोनी में सम्पन्न हुई, जिसमें केप्टन सी.एम. व्यास प्रेसीडेंट श्री आनन्द दवे, श्रीमती कल्पना व्यास वाईस प्रेसीडेंट, प्रदीप व्यास जनरल सेक्रेटरी, श्री अमिताभ पंड्या एडी. सेक्रेटरी, श्रीमती प्रीति याज्ञिक जॉईंट सेक्रेटरी, श्रीमती रेखा दवे, कल्चरल सेक्रेटरी, श्री बसंत दवे ट्रेजरर चुने गए, जबकि कार्यकारिणी सदस्य में श्री अखिलेशचन्द्र नागर, श्री अरुण नागर, श्री प्रशांत व्यास, श्री शशिकांत, श्री एस.सी. नागर एवं श्री पवन नागर तय किए गए।

कैसा हो हमारा नागर ब्राह्मण समाज?

एक विचार

क्रांति अभियान

दिसम्बर 2015 अंक से

लगातार सिलसिलेवार

प्रबुद्ध नागरिकों की जुबानी

सुनहरे कल की कहानी

अपने विचार भी अवश्य भेजें।

बून्दी में नागर समाज की महिलाओं ने परम्परागत रीति-रिवाज से 9 दिन तक हाटकेश्वर भवन में गरबे किए। दूज के दिन से प्रारंभ गरबा समारोह की पूर्णाहूति विजयादशमी पर हुई। विजयादशमी पर सामूहिक रूप से नवलसागर झील में गरबे बोड़ाए (विसर्जन) गए। दशहरे के दिन सामूहिक भोज भी हुआ।

एकादशी के दिन समाज की महिलाओं और पुरुषों ने बीजासन माताजी के मंदिर पर गरबे किए। -पीयूष पाचक

अहमदाबाद सिविल हॉस्पिटल जाने वालोंके लिए बहुत अच्छी खबर

अगर किसी कारणवश आपको अहमदाबाद सिविल हॉस्पिटल या आसपास कोई हॉस्पिटल जाना पड़ता है तो आपको रहने और खाने की सुविधा एक सेवाभावी संस्था बिलकुल किफ़ायत भावसे दे रही है इनकी सेवाका आप अवश्य लाभ ले सकते हो। सिर्फ 20 रूपया प्रति व्यक्ति आपको वहाँ अच्छा खाना मिलता है और प्रति दो व्यक्ति एक रूम 20 रुपये में मिलता है। अगर किसीका हॉस्पिटल में दाखिला हुआ है तो भी रूपया 20 प्रति व्यक्ति टिफिन सेवा भी दी जाती है ।

ये सेवा आप दिए एड्रेस से ले सकते हो - अन्नपूर्णा भवन, दिग्विजय लायंस फाउन्डेशन, सिविल हॉस्पिटल गेट नं 3 के सामने, असारवा, अहमदाबाद

जयपुर में 10वां गरबा महोत्सव सम्पन्न

जयपुर में गौरव नागर द्वारा छोटे स्तर पर प्रारंभ किया गया गरबा महोत्सव जो माँ भगवती की कृपा से भव्य रूप धारण कर चुका है जो दिनॉंक 21/10/2015 को सम्पन्न हुआ। आयोजन को भव्यता प्रदान करने में कॉलोनीवासियो का तन-मन व धन से सहयोग रहा । श्री नागर के नानाजी रतलाम निवासी श्री दुर्गाशंकर जी रावल के निधन पर भी इस आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी का सहयोग रहा ।

-भगवती लाल नागर

उज्जैन में भव्य अन्नकूट महोत्सव 15 नवम्बर को

नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास के तत्वावधान में एवं अन्नकूट महोत्सव समिति के सहयोग से अन्नकूट महोत्सव 56 भोग) का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

कार्यक्रम के अन्तर्गत 14 नवम्बर 2015 शनिवार को रात्रि 8 से 11 बजे तक सुंदरकांड पाठ का आयोजन है, तथा 15 नवम्बर 2015 रविवार को प्रातः 8 बजे अभिषेक पूजन, अन्नकूट दर्शन 11 बजे, महाआरती 11.30 बजे एवं उसके पश्चात् महाप्रसादी का कार्यक्रम है। श्री हाटकेश्वर धाम, हरसिद्धि की पाल पर आयोजित इस कार्यक्रम में श्रीमती शैल-विजय प्रकाशजी मेहता नागदा द्वारा अपने माता-पिता श्रीमती सुशीला देवी मेहता, स्व.श्री कांतिलालजी मेहता (स्वतंत्रता संग्राम सैनानी) की स्मृति में विशेष सहयोग प्रदान किया गया। श्री विकास रावल श्रीमती मधुलिका रावल वृन्दावन धाम उज्जैन द्वारा अन्नकूट महोत्सव में भगवान श्री हाटकेश्वर को 56 पकवानों का भोग लगाया जाएगा।

अन्नकूट महोत्सव समिति, नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास (हरसिद्धि की पाल) उज्जैन, म.प्र. नागर प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति उज्जैन, म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा उज्जैन म.प्र. नागर ब्राह्मण महिला परिषद् शाखा उज्जैन, म.प्र. नागर ब्राह्मण युवा परिषद शाखा, उज्जैन के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में अधिकाधिक समाजजनों से उपस्थित होने की विनय की है।

उज्जैन में दमारोगियों का मेला

इन्दिरा सहयोगी मित्र मण्डल द्वारा प्रतिवर्षानुसार आयोजित शरद पूर्णिमा 26-10-2015 को निःशुल्क दमा रोग चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

इस चिकित्सा शिविर की विशेषता है कि औषधियुक्त खीर एवं कर्णवेधन चिकित्सा पद्धति द्वारा दमा रोगियों का इलाज किया जाता है। यह 20वाँ चिकित्सा शिविर था, इन शिविरों में 40 हजार से ज्यादा रोगी लाभान्वित हो चुके हैं। इस चिकित्सा शिविर में शिविर स्थल पर रोगियों को रात्रि जागरण करना अनिवार्य होता है। प्रातः 4 बजे औषधियुक्त खीर का वितरण किया जाता है। तत्पश्चात् कर्ण वेधन चिकित्सा की जाती है। उक्त चिकित्सा आयुर्वेद के त्रिदोष सिद्धांत पर आधारित है। दोषों को समान अवस्था में लाना ही चिकित्सा का मूल उद्देश्य है। क्योंकि शरद पूर्णिमा पर चन्द्रमा सोलह कलाओं से युक्त होता है। कफ प्रधान व्याधियों का राजा चन्द्रमा होता है। चन्द्रमा की जो किरणें औषधियुक्त खीर पर पड़ती है तो स्वतः ही इस रोग को शमन करने की क्षमता आ जाती है। इसलिए खीर पीने का विधान बताया गया है। बिहार, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा मालवा प्रांत के अनेक रोगी इस चिकित्सा का लाभ ले चुके हैं। उक्त जानकारी शिविर संयोजक डॉ.प्रकाश जोशी ने दी।

श्री हाटकेश्वर धाम में दानराशि भेंट

श्री सुनील दशोरा, राऊ	5001/-
श्री उमेशचन्द्र शर्मा, राऊ	5001/-
श्री हरिनारायणजी नागर 'पत्रकार' देवास (माताजी श्रीमती दुर्गादेवी नागर की स्मृति में)	2501/-
श्रीमती मुन्नीदेवी नागर, उज्जैन -	1100/-
श्रीमती गीता नागर स्व.श्री रामगोपालजी नागर, इन्दौर	1001/-

श्री नागर का स्थानांतरण

श्री कृष्णकांत नागर अलखधाम नगर उज्जैन का स्थानांतरण शाखा प्रबंधक बैंक ऑफ महाराष्ट्र देवास से शाखा प्रबंधक के पद पर बैंक ऑफ महाराष्ट्र यू.सी.टी.एच. शाखा सांवेर रोड़, उज्जैन हो गया है। आपके निवास का नया फोन नं. 2526071 है।

-सुरेशचन्द्र नागर, उज्जैन

लालू ने अमेरिका जाने से पहले अंग्रेजी की ट्रेनिंग ली।

ट्रेनर बोले- जब आप अमेरिका जाकर ओबामा से मिलें तो उनसे हाथ मिलाएं और पूछें कि हाओ आर यू? मतलब, आप कैसे हैं। इस पर ओबामा कहेंगे कि आई एम फाइन, एंड यू? इसका मतलब हुआ कि मैं ठीक हूं, आप कैसे हैं। आप जवाब दीजिएगा, मी टू। मतलब कि मैं भी। इसके आगे की बातचीत ट्रांसलेटर संभाल लेंगे।

लालू अमेरिका गए... उन्होंने हाओ आर यू की जगह पूछ लिया, हू आर यू! (आप कौन हैं?)

यह सुनकर ओबामा थोड़े सकपकाए, लेकिन फिर मुस्कुराते हुए बोले- आई एम मिशेल्स हज्बंड। (मैं मिशेल का पति हूं।) फिर लालू मुस्कुराते हुए बोले- मी टू!

मध्यप्रदेश नागर परिषद शाखा उज्जैन
द्वारा
नवरात्री के अवसर पर
स्थानीय **शर्मा परिसर** में
गरबों का भव्य आयोजन किया।
जिसमें उज्जैन निवासी सभी
नागर परिवारों ने हिस्सेदारी की।

उज्जैन में आयोजित मध्यप्रदेश स्टेट
ऑप्थोल्मिक कांफ्रेंस के
वार्षिक अधिवेशन में
उज्जैन नागर समाज के
अध्यक्ष डॉ.प्रदीप व्यास
एम.पी.एस.ओ.एस.
के प्रादेशिक अध्यक्ष मनोनित किये गए

नागर समाज भोपाल का नवरात्रि उत्सव एवं गरबा

भोपाल नागर समाज द्वारा नवरात्रि उत्सव 16अक्टूबर 2015 को काफी उत्साह और धूम-धाम से मनाया गया। अरेरा कॉलोनी ई-2 में स्थित दुर्गा मंदिर पर शहर के अधिकांश महिलाओं, पुरुषो और बच्चों ने भाग लिया। माँ दुर्गा की पूजा और आरती उपरान्त गरबा नृत्य का आयोजन किया गया जिसमे समाज के अनेक युवक युवतियों, महिलाओ पुरुषों और बच्चों ने आकर्षक परिधानों के साथ डांडिया और गरबा किया। इस अवसर पर भोपाल नागर समाज के अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार मेहता सहित वरिष्ठजन सर्वश्री सुभाष जी व्यास, रामकृष्णजी मेहता, ओमप्रकाश जी मेहता जयकुमार जी दवे, एवं श्री अशोक व्यास, ओमप्रकाश शर्मा, पंकज रावल सहित कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

-ओ.पी. शर्मा

भोपाल में दीपावली मिलन समारोह 6 दिसम्बर को

भोपाल नागर समाज द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी 6दिसंबर 2015 को दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया जा रहा है। उक्त कार्यक्रम राजधानी के श्यामला हिल्स स्थित आंचलिक विज्ञान केंद्र के सभागार में प्रात: 10 बजे से प्रारम्भ होगा।

इस अवसर पर समाज द्वारा भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमो, गायन, वादन, बच्चों के मनोरंजक खेलों का भी आयोजन किया जा रहा है। दिन भर चलने वाले इस कार्यक्रम में सभी समाजजन एकदूसरे से रूबरू होंगे तथा कार्यक्रमों का आनंद लेंगे।

कार्यक्रम के अंत में प्रतिभाशाली बच्चों को प्रोत्साहन स्वरुप समाज के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा पुरस्कार वितरण भी लिया जायेगा। दोपहर भोज के उपरान्त कार्यक्रम का समापन होगा।

-ओ.पी. शर्मा, 9826047546

रतलाम के गरबा महोत्सव ने अनूठी छाप छोड़ी

रतलाम। नागर (ब्राह्मण) समाज की महिला परिषद् द्वारा नवरात्री पर्व पर गरबा आयोजन उत्साह व धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। गरबा महोत्सव के अंतिम दिवसर पर रंग-गुलाल, पुष्प वर्षा एवं महाआरती का आयोजन विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा।

कारजू नगर स्थित जैन स्कूल के प्रांगण में माँ अम्बे की आराधना में नागर समाज की महिलाओं ने प्रतिदिन विभिन्न रंगों की ड्रेस कोड में मनोहारी गरबे प्रस्तुत किये। गरबा गीतों के संगीत हेहुत आर्केस्ट्रा की व्यवस्था थी। महिला परिषद् की अध्यक्ष सुश्री मंगला दवे ने बताया कि गरबा आयोजन में प्रतिदिन नागर समाज के वरिष्ठ जनों का सम्मान किया गया। अंतिम दिवस पर फेन्सी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन जिसमें माँ कालिका का रूप धारण करने वाली वैभवी शैलेन्द्र व्यास को प्रथम स्थान मिला तथा इसी दिन श्री महेश व्यास एवं श्रीमती हेमा व्यास द्वारा 51 दीपों से महाआरती एवं प्रसादी का आयोजन किया गया।

गरबा आयोजन को सफल बनाने में सुश्री मंगला दवे के निर्देश में श्रीमती कल्पना मेहता, प्रज्ञा दीक्षित, अनुराधा दवे, ज्योति मेहता, रानी दवे, अमिता मेहता, रंजना नागर, अलका मेहता, प्रज्ञा मेहता, पुष्पा मेहता, प्रमिला त्रिवेदी, ऋचा दवे, सुभद्रा मेहता, अर्चना मेहता, ऋतु नागर, रीना नागर, रानू मेहता, हर्षा भट्ट, मिनाक्षी व्यास, यामिनी शुक्ल, शर्मिला भट्ट, अंजू पंड्या, स्नेहलता नागर, अपूर्वा दवे, आयुषी दवे ने सहभागिता प्रदान की।

नौ दिवसीय इस आयोजन को सफल बनाने में पुरुष वर्ष ने भी अपनी अहम भूमिका अदा की। उनमें प्रमुख रूप से सर्वश्री विभाष मेहता, सुशील नागर, संजय दवे, नवनीत मेहता, धर्मेन्द्र नागर, गिरीश भट्ट, सत्येन्द्र मेहता, विष्णुदत्त नागर, प्रकाश व्यास, कृष्णकान्त व्यास तथा ओम त्रिवेदी थे।

शरद पूर्णिमा पर हुआ महारास

गरबा आयोजन के पुरुस्कार शरद पूर्णिमा के दिन वितरित किये गए, साथ ही महारास एवं केसरिया दूध वितरण का भी इसी दिन भव्य आयोजन किये गए।

-ओम त्रिवेदी, रतलाम

रतलाम में प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न

म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा रतलाम द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह वेद व्यास कॉलोनी स्थित सूरज हाल में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में कु.नंदीनी व्यास ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती आभा विजय शंकर मेहता (प्रांतीय अध्यक्ष म.प्र. नागर महिला परिषद) थी तथा अध्यक्षता डॉ.मनोज शर्मा (बेरछा) ने की, विशिष्ट अतिथि श्री केदार रावल प्रांतीय उपाध्यक्ष थे। अतिथियों का परिचय श्री नवनीत मेहता, श्री विष्णुदत्त नागर एवं श्री सुशील नागर ने दिया।

परिषद् शाखा रतलाम के अध्यक्ष श्री विभाष मेहता ने 'स्वागत उद्‌बोधन' के साथ वर्ष भर की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि श्रीमती आभा मेहता ने कहा कि हमें अपने आसपास की प्रतिभाओं को पहचान कर उन्हें विकास की राह में बढ़ाने की पहल करना चाहिए। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री मनोज शर्मा ने कहा कि बच्चों की प्रतिभा को कभी-कभी माता-पिता पहचान नहीं पाते, इसलिए हमें ऐसी प्रतिभाओं को खोजकर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। इस कार्यक्रम में रतलाम जिले के 60 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया साथ ही खेलकूद व अन्य गतिविधियों में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। सामाजिक क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए पं. महेश रावल (सैलाना) द्वारा श्री सुशील नागर, श्री हरीश मेहता, श्रीमती कृष्णकांता व्यास, श्रीमती रुकमणी मेहता एवं सुश्री मंगला दवे का शाल श्रीफल द्वारा सम्मान किया गया।

हौसलों की उड़ान

श्रीमती शिखा नागर भोपाल ने अपनी अन्य सहकर्मियों के साथ मुख्यमंत्री की युवा उद्यमी योजना मध्यप्रदेश के सौजन्य से महिला उद्यमी संस्था 'एसएफए' साल्युशन फार ऑल के माध्यम से भोपाल में आईटी कम्पनी लांच की है। जिसका उद्घाटन मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने दिनांक 20 अक्टूबर 2015 को किया है। एसएफए कम्पनी की सीईओ श्रीमती शिखा नागर ने मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान का स्वागत करते हुए कहा कि हमारी आईटी कम्पनी लगभग 1.5 करोड़ की लागत से सौ सीटर आईटी कम्पनी प्रारंभ कर रही है।

संस्था का उद्देश्य प्रदेश में आईटी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराना है। संस्था का यह प्रयास रहेगा कि जल्द से जल्द आईटी पार्क में भूमि प्राप्त कर अपना सेटअप प्रारंभ करेगी। इस प्रोजेक्ट की लागत लगभग 5 करोड़ की रहेगी एवं इसमें लगभग 200 युवाओं को रोजगार प्राप्त हो सकेगा। आगे श्रीमती नागर ने बताया कि प्रदेश की युवा महिलाएं आईटी की पढ़ाई पूरी करने के बाद देश के अन्य शहरों की तरफ देखना होता था या परिवार की जिम्मेदारी की वजह से प्रदेश की योग्य महिलाएं परिवार तक ही सीमित होकर रह जाती थी। किंतु माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा इस दिशा में जो निर्णय लिया गया है उससे सारे प्रदेश की युवा महिलाओं को आत्मबल मिला है। हमारी संस्था मध्यप्रदेश शासन के उद्योग नीति आईटी विभाग की आईटी पालीसी के कारण आज हमें विकास का अवसर प्राप्त हुआ है। इस संस्था द्वारा डिजीटल इंडिया हेतु आवश्यक प्रोडक्ट्स तैयार किए जाएंगे, जैसे 1. डिजीटल ऑफिस, 2. डिजीटल मुद्रा, 3 डिजीटल हेल्थ, 4. डिजीटल एज्युकेशन, 5. डिजीटल मॉनिटरिंग आदि। हमारी संस्था का लक्ष्य देश की सफल आईटी कम्पनी की सूची में शामिल होना है। जो प्रदेश में महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करेगी।

इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री ने अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि प्रदेश सरकार हरसंभव इस संस्था को सहयोग करेगी तथा संस्था के लिए स्वीकृत किए गए लोन की ग्यारंटी भी मध्यप्रदेश सरकार ने दी है। उन्होंने संस्था के उज्जवल भविष्य की कामना की। निश्चित रूप से प्रदेश की महिला उद्यमियों की ये हौंसलों की उड़ान है। एसएफए कम्पनी भोपाल की सीईओ श्रीमती शिखा नागर को बहुत शुभकामनाएं वे निश्चित रूप से नागर महिलाओं के गौरव को बढ़ाएंगी। श्रीमती नागर के लिए ये पंक्तियां उपयुक्त रहेंगी -

'हम तो दरिया हैं, हमें अपना हूनर मालूम है
जिधर भी जाएंगे, उधर रास्ते बनते चले जाएंगे'।

-सुरेश दवे 'मामा'
38, नीमवाड़ी, शाजापुर मो. 94240-27500

गोवंश की रक्षा के लिए पर्वतों और जंगलों को बचाना होगा - पं. मेहता

गोवर्धननाथ हम अनाथों के नाथ हैं। पूर्व में जगन्नाथ जी दक्षिण में रामेश्वर, पश्चिम में द्वारिकानाथ और उत्तर में बद्रीनाथ है। इन चारों के मध्य में हैं गोवर्धननाथ वह हम सब का स्वामी है। वह चारों दिशाओं का देव है।

यह उद्गार भागवत सप्ताह के अंतर्गत गोवरर्धननाथ मंदिर (हवेली) में भागवत कथा के समापन अवसर पर प्रसिद्ध कथावाचक पंडित लालशंकर मेहता ने रखे। आपने कहा भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत की पूजा करने का संदेश दिया और कहा जिस पर्वत पर गाय एवं गोवंश हरा चारा खाकर हमें अमृतमयी दूध पिलाकर दही व मक्खन खिलाती है इसकी पूजा करना हमारा धर्म और संस्कृति है। गोवरधन की परिक्रमा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि पर्यावरण को शुद्ध रखना और गोवंश की रक्षा करना है तो पर्वतों और जंगलों को बचाना होगा।

कथा विराम के पश्चात् मंदिर हवेली के मुखिया परिवार श्री मुखिया प्रो. सुरेश मेहता, मुकेश मेहता, ब्रजगोपाल मेहता, योगेश मेहता, सुरेन्द्र मेहता, निकुंज मेहता (समस्त मेहता मुखिया परिवार हवेली) द्वारा भागवत पुराण का पूजन व आरती उतारी। जिसमें हाटकेश्वर देवालय न्यास के अध्यक्ष एवं मंदिर समिति के प्रमुख श्री वीरेन्द्र व्यास ने भी पुराण का पूजन किया व आरती उतारी। पंडित मेहता का शाल, श्रीफल पुष्पमाला एवं दक्षिणा द्वारा मुखिया मेहता परिवार ने सम्मान किया। शाम 5.00 बजे भागवत जी भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। बैंडबाजों की धार्मिक धून पर श्रोता झूमते गाते चल रहे थे। नगर में जगह-जगह भागवत जी का पूजन एवं पुष्पवर्षा से चहूंओर श्रीकृष्ण भक्ति की रंगत बिखर गई। चल समारोह के बाद मंदिर में पहुंच कर भागवतजी की आरती उतारी। प्रसाद वितरण किया मेहता, मुखिया परिवार ने सभी का आभार माना। उल्लेखनीय है कि पंडित लालशंकर मेहता हाटकेश्वर देवालय न्यास के प्रमुख न्यासी भी हैं।

-मुखिया पं. सुरेन्द्र मेहता द्वारा

जय हाटकेश प्रदेश स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता सम्पन्न

जय हाटकेश प्रदेश स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजन समिति के श्री अभिनव दवे, केदार रावल ने बताया कि म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद के तत्वावधान में दि. 25-10-2015 को विद्या सागर स्कूल मैदान पर जय हाटकेश प्रदेश स्तरीय टेनिस बाल क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ पूर्व मंत्री एवं चेयरमेन विद्यासागर स्कूल माननीय श्री रामेश्वरजी पटेल के मुख्य आतिथ्य म.प्र. नागर परिषद् के संरक्षक युवा उद्योगपति श्री अमिताभ मंडलोई की अध्यक्षता, दूरदर्शन भोपाल के डायरेक्टर श्री विनोदजी नागर, औद्योगिक न्यायालय के पूर्व चेयरमेन एवं वर्तमान सदस्य श्री प्रवीण त्रिवेदी, समाजसेवी श्री रविशंकरजी दवे, श्री भोलेश्वरजी रावल, पं.अशोक भट्ट, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष श्री विरेन्द्रजी व्यास, श्रीमती शारदा मंडलोई अध्यक्ष नागर महिला मंडल इन्दौर, हेमन्त व्यास अध्यक्ष म.प्र. नागर युवक परिषद के विशेष आतिथ्य में संपन्न हुआ। प्रतियोगिता में प्रदेश के जिला भोपाल, उज्जैन, खंडवा, शाजापुर, रतलाम, इन्दौर, देवास, बेरछा की टीमों ने हिस्सा लिया। सेमी फायनल उज्जैन-इन्दौर तथा खंडवा-शाजापुर के मध्य हुआ, जिसमें उज्जैन व शाजापुर की टीम विजेता रही।

फायनल उज्जैन-शाजापुर में हुआ, जिसमें रोमांचक मैच में अंतिम कुछ गेंदे शेष रहते शाजापुर की टीम ने जीत दर्ज करते हुए जय हाटकेश ट्राफी पर कब्जा किया। पुरस्कार वितरण पूर्व मंत्री एवं चेयरमेन विद्यासागर स्कूल माननीय श्री रामेश्वरजी पटेल के मुख्य आतिथ्य म.प्र. नागर परिषद् प्रदेशाध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी (टमटा) की अध्यक्षता, श्री सुनीलजी मेहता एस.पी. स्पेशल ब्रांच उज्जैन, समाजसेवी रविशंकरजी दवे, श्रीमती कृष्णा रावल, श्री शिवराज मेहता, श्री दीवान पार्षदद्वय खंडवा एवं श्री चन्द्रसिंह पटेल के विशेष आतिथ्य में हुआ। कार्यक्रम में प्रदेश उपाध्यक्ष श्री हेमंत त्रिवेदी, कोषाध्यक्ष श्री योगेन्द्र नागर, टूर्नामेंट कोआर्डिनेटर श्री सुनील नागर, हिमांशु पुराणिक, यतींद्र मेहता, अनुशासन समिति के दिनेश मेहता, दीपक जोशी, अशोक पंचोली पुरस्कार चयन समिति दिलीम मेहता, आर.सी. शर्मा, राजेन्द्र व्यास, विभाष मेहता, अध्यक्ष रतलाम नागर समाज, सचिव श्री संजय दवे, एन.पी. भट्ट, भगवतीलाल भट्ट, संजय नागर शाजापुर, प्रसून मेहता, अभिलाष मेहता, सुनील मेहता एड्वोकेट, राजेन्द्र रावल, चंदू रावल, योगेश मेहता, विवेक मेहता, प्रदीप मेहता, के.के. व्यास अध्यक्ष नागर समाज लसूडिया, टीम मेनेजर बेरछा विजय शर्मा सहित प्रदेश के अनेक नागरजन भी उपस्थित रहे। अंपायरिंग की भूमिका राजेश शर्मा पप्पू, हिमांशु पुराणिक, आशीष मिश्रा, हर्ष मेहता ने तथा स्कोरर की श्री आशीष मेहता व कामेंट्रेटर की भूमिका श्री योगेन्द्र नागर ने संभाली। कार्यक्रम का संचालन राजीव व्यास, प्रभात नागर, दीपक रावल ने किया। आभार मनोज मेहता ने माना।

-केदार रावल

इन्दौर में नवदुर्गोत्सव के अंतर्गत

रंगारंग गरबे एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन सम्पन्न

म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा इन्दौर एवं म.प्र. नागर महिला मंडल शाखा इन्दौर के संयुक्त तत्वावधान में नवरात्रि के दौरान 13 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2015 तक कंचनबाग स्थित गार्डन में रंगारंग गरबा एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। गरबा आयोजन अत्यंत प्रभावी रहा। वैसे तो इन्दौर में गरबों के अनेक आयोजन होते हैं परन्तु नागर समाज के गरबे में विशिष्टताएं हैं।

गुजराती गरबा गीतों एवं आर्केष्ट्रा की सुमधूर धुन पर कुलदेवी माँ अम्बाजी की वास्तविक भक्ति हेतु शालीन एवं प्रभावशाली गरबों की प्रस्तुति दी जाती है। गरबे प्रतिदिन तय समय पर रात्रि 8.45 बजे आरती के पश्चात् प्रारम्भ होते तथा 10.45 बजे समापन हो जाता।

गरबा गायन में श्रीमती सुषमा मंडलोई, श्री आशीष त्रिवेदी, श्री विवेक जोशी, कु.सलोनी मंडलोई, कु.अमीषा नागर, श्री हर्ष मेहता का विशेष सहयोग रहा। म्हारी हुंडी सीकारो महाराज फेम श्री संजय शुक्ल की अनुपस्थिति खली एवं अंतिम दो दिन मोंटू व्यास एवं साथियों के मधुर जोशीले गरबा गायन से कार्यक्रम का समापन हुआ। समापन दिवस महिला मंडल द्वारा सभी गरबा करने वाले प्रतिभागियों को श्रीमती दुर्गा जोशी, श्रीमती उषा दवे, श्रीमती संगीता शर्मा, श्रीमती प्रमिला त्रिवेदी के करकमलो द्वारा उपहार वितरित किए गए। श्रीमती शारदा मंडलोई ने सक्रिय कार्यकर्ताओं का आभार माना।

श्रीमती सोनिया मंडलोई, श्रीमती नीता नागर, श्रीमती पल्लवी झा, श्रीमती पल्लवी व्यास, अध्यक्ष श्री जयेश झा, सचिव श्री राजेन्द्र व्यास आदि के भरपूर सहयोग एवं प्रयासों के लिए सराहना के साथ आभार व्यक्त किया। प्रतिदिन गरबा आरती समापन के पश्चात् फलाहार एवं दूध की व्यवस्था श्री नीलेश नागर द्वारा की गई। आगामी त्यौहारों के लिए शुभकामना दी गई। इस वर्ष श्रीमती गायत्री मेहता की अनुपस्थिति सभी को महसूस हुई।

-श्रीमती शारदा मंडलोई
श्रीमती सोनिया मंडलोई

नवदुर्गोत्सव 2015 के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं भी सम्पन्न

निम्नलिखित प्रतियोगी विजयी हुए

फलाहारी व्यंजन प्रतियोगिता

मीठा

मखाने के लड्डू- श्रीमती चारुमित्रा नागर
एपल पाक - श्रीमती बिन्दू मेहता
परवल की मिठाई - श्रीमती कुमुद नागर
आलू गुलाब जामुन - श्रीमती प्रमिला त्रिवेदी
मैसूर पाक (नारियल) - श्रीमती रीता मेहता
मैसूर पाक (मूंगफली) - श्रीमती अरुणा व्यास
फलाहारी बूंदी - श्रीमती मंजू नागर

नमकीन

लौकी राजगीरा टिक्की - श्रीमती बिन्दू मेहता
पेटिस - श्रीमती मंजू नागर
फूल (ओपन) कचोरी - श्रीमती अरुणा व्यास
फलाहारी कढ़ी - श्रीमती दिव्या मंडलोई
चाट पापड़ी - श्रीमती कुमुद नागर
कोथमीर रोल - कु. आयुषी नागर
त्रिकुट - श्रीमती सोनिया मंडलोई
पकोड़ी - श्रीमती मीना त्रिवेदी
फरियाली बर्गर - श्रीमती चारुमित्रा नागर

इनके अतिरिक्त सीताफल रबड़ी, मैंगों स्टार, लौकी चाकलेट, शकरकंद चाट, फलाहारी मिक्चर फ्रूट सलाद, आदि व्यंजन भी आकर्षण का केन्द्र रहे, उन्हें प्रतियोगिता में शामिल न करने का अनुरोध किया गया था।

आरती थाली सज्जा प्रतियोगिता- (1) श्रीमती भक्ति शर्मा, (2) श्रीमती राजेश्वरी शुक्ल, (3) श्रीमती अरुणा व्यास, (4) श्रीमती चारु मित्रा नागर, (5) श्रीमती नीता नागर

फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता 10 वर्ष तक के बच्चों की- (1) देविना नागर, (2) गौरांगी मेहता, (3) आराध्य पुराणिक, (4) सान्वी नागर, (5) रायना रावल

चित्रकला प्रतियोगिता- (1) अबीर मेहता, (2) स्योना नागर, (3) अक्षत त्रिवेदी, (4) गौरांगी मेहता (5) सान्वी नागर (6) आशीषजी त्रिवेदी (बड़े ग्रुप में)

रांगोली- कु.शुभांगी व्यास, श्रीमती चारुलता नागर, कु. हर्षिता व्यास, अक्षत त्रिवेदी, अबीर मेहता

मेहंदी- श्रीमती भक्ति शर्मा, कु. आयुषी नागर, कु. शुभांगी व्यास, कु. हर्षिता त्रिवेदी, श्रीमती प्रियंका

आरती थाली सज्जा प्रतियोगिता- (1) श्रीमती भक्ति शर्मा, (2) श्रीमती राजेश्वरी शुक्ल, (3) श्रीमती अरुणा व्यास, (4) श्रीमती चारु मित्रा नागर, (5) श्रीमती नीता नागर

नागर महिला मंडल की बैठक दीपावली के बाद

नागर महिला मंडल की बैठक नवम्बर माह के अंतिम सप्ताह में 20 से 28 तारीख के बीच तय की गई है, बैठक की निश्चित दिनांक की घोषणा दीपावली के पश्चात् की जावेगी। सभी सदस्याएं इस सम्बन्ध में अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई मो. 9425085052 या सचिव श्रीमती सोनिया मंडलोई मो. 9826344266 से सम्पर्क में रहे। दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

सखी सहेली ने मनाई नवरात्रि

राऊ (इन्दौर) में सखी सहेली ग्रुप ने नवरात्रि के अंतर्गत गरबे, भजन एवं मनोरंजक गेम्स का आयोजन किया।

ग्रुप के प्रथम प्रयास में बहनों एवं बच्चों ने उत्साह से हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुवात भजन से की गई तत्पश्चात् बच्चों एवं बड़ों के मनोरंजक गेम एवं गरबे का आयोजन हुआ। दीपावली त्यौहार के बाद ग्रुप ने अन्नकूट एवं दीपावली मिलन कार्यक्रम किए जाने की रुपरेखा बनाई।

उपरोक्त कार्यक्रम में सौ.अर्चना-बसंत शर्मा, सौ.मोनिता-शैलेष जोशी, पुष्पा व्यास, सौ.किरण-हेमन्त शर्मा, सौ.सुनीता-अनिल नागर, किरण नागर, सौ.विनिता चिन्मय पंड्या, सौ.विजयलक्ष्मी संजय नागर, श्यामा नागर, सौ. पारुल गोपी नागर, सुश्री आशा नागर, सौ.माया प्रकाश नागर व सभी बहनों ने हिस्सा लिया।

सौ.बिन्दु मेहता सम्मानित

नित्याज्योतिर्विद मातृ-शक्ती सामाजिक कल्याण समिति उज्जैन द्वारा सौ.बिन्दुबाला प्रदीप मेहता इन्दौर को पर्यावरण जागरुकता के क्षेत्र में एवं अनाथ तथा असमर्थ व्यक्तियों की सेवार्थ सतत् 10 वर्षों के योगदान स्वरूप, शाल, हार, श्रीफल, प्रमाण-पत्र एवं नकद मुद्रा भेंट कर नारी ज्योति भूषण अलंकरण से सम्मानित किया गया। समिति संस्थापक श्रीमती भारती वर्मा तथा अध्यक्ष श्रीमती कविता मेहता ने बतलाया कि यह सम्मान श्रीमती मेहता को उनके द्वारा प्रतिवर्ष मिट्टी से हस्त निर्मित गणेश की मूर्तियों के न्यौछावर में प्राप्त राशी दरिद्रनारायण की सेवा में अर्पित की जाती है तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों के संचालन स्वरूप प्रदान किया गया है।

सौ.मेहता की इस उपलब्धि पर माता-पिता सौ.शकुन्तला हरिनारायण नागर वरिष्ठ पत्रकार, ताई श्रीमती मनोरमा नागर एवं सभी के परिवार तथा ईष्ट मित्रों ने हार्दिक बधाई देते हुए इसी प्रकार दरिद्रनारायण की सेवा में रत रहने की अपेक्षा की है।

-मनमोहन नागर, देवास

मो. 9827316788, 07272-222822

सौ.कविता रावल का सुयश

सौ.कविता संदीप रावल रामबाग, इन्दौर ने प्रथम बार 12+4 मास्टर्स तैराकी की राष्ट्रीय प्रतियोगिता जो 9-10-11 अक्टूबर 2015 को भोपाल के तरणताल शिवाजी नगर में आयोजित हुई में भागीदारी की। ज्ञातव्य है कि विगत कईं वर्षों से तैराकी प्रतियोगिता हेतु सौ.कविता ने अनेक राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को तैयार किया है। वे वर्तमान में एडवांस्ड एकेडमी विद्यालय इन्दौर एवं सायंकाल में प्रतिदिन रेसीडेंसी क्लब में तैराकी का प्रशिक्षण देती है। सौ.कविता ने राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सेदारी कर समाज एवं परिवार का नाम रोशन किया है। बधाई।

कु.कौशिकी रावल ने राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लिया

कु.कौशिकी रावल (सुपुत्री-सौ.कविता-संदीप रावल) रामबाग इन्दौर ने 46वीं केन्द्रीय विद्यालय संगठन राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता जो कि 13 से 16 सितम्बर तक दिल्ली छावनी स्थित केन्द्रीय विद्यालय में सम्पन्न हुई। में अपने केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 (द्वितीय पाली) तथा भोपाल संभाग की ओर से कबड्डी खेल का प्रतिनिधित्व कर अपने परिवार एवं समाज को गौरवान्वित किया। बधाई

श्रीमती अर्चना त्रिवेदी को केन्द्र सरकार की प्रशस्ति

श्रीमती अर्चना त्रिवेदी पति श्री प्रबल त्रिवेदी, रतलाम गुरु तेग बहादुर एकेडमी में कार्यरत वाणिज्य व्याख्याता को केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली से उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए वर्ष 2014-15 के लिये प्रशस्ति-पत्र प्राप्त हुआ है। श्रीमती स्मृति ईरानी, मानव संसाधन मंत्री, भारत सरकार ने स्वयं इनके अध्ययन कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की है।

-प्रो.आर.एस.नागर

477, काटजू नागर, रतलाम

पदोन्नति पर बधाई

श्री वरुण व्यास पुत्र श्रीमती संगीता - अरुण व्यास (प्राचार्य) **शाजापुर** की पदोन्नति असिस्टेंट मैनेजर प्लानिंग के पद पर L&T कंपनी रेवाड़ी हरियाणा में हुई। वरुण व्यास पीपलरावा के प्रसिद्ध चिकित्सक रहे स्व. डॉ. शिवेशचन्द्र जी व्यास एवं श्रीमती विद्यावती व्यास के पौत्र है एवं प्रारम्भ से ही मेधावी छात्र रहे है। बी. ई. (सिविल) परीक्षा ऑनर्स के साथ उत्तीर्ण करने के पश्चात आपने National Institute of Construction Management and Reserch (NICMAR) पुणे से एडवांस कंस्ट्रक्शन मैनेजमेंट में M.B.A. की उपाधि प्राप्त की।

पदोन्नति पर बधाई

श्री एस.एन.नागर सुपुत्र पं. श्रीनाथजी नागर (अजमेर) को कारखाना-प्रबंधन, पुणे ने पदोन्नति प्रदान कर एम.डी. (प्रबंध संचालक) के पद पर पदोन्नत किया है। श्री नागर ने गत माह अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया।

-प्रो.आर.एस.नागर

477, काटजू नगर, रतलाम

शरभनाथ नागर का सुयश

शरभनाथ नागर सुपौत्र पं.श्रीनाथ नागर (अजमेर) एवं सुपुत्र श्री एस.एन. नागर, पुणे ने पूना विश्वविद्यालय पुणे से बी.ई. (कम्प्यूटर विज्ञान) 70 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की एवं वह वर्तमान में मुंबई के श्रेष्ठ संस्थान बेलूंगकर प्रबंध संस्थान में एम.बी.ए. में अध्ययनरत है। बधाई

रेडीमेड कपड़ा उत्पादकों के लिए वरदान है

बैंगलोर का सरप्लस मार्केट

दक्षिणी राज्य कर्नाटक की राजधानी बैंगलोर में एक ऐसा भी मार्केट है जहाँ रेडिमेड कपड़ा उत्पादकों के लिए प्रचुर अवसर है, क्योंकि यहाँ रेडिमेड उत्पादन में प्रयुक्त होने वाली सारी सामग्री एक ही स्थान पर थोक भाव में मिल जाती है, इसे सरप्लस मार्केट कहा जाता है जहाँ एक्सपोर्ट क्वालिटी का सरप्लस माल उपलब्ध है।

बैंगलोर में रामचन्द्रपूरम बाजार में रेडीमेड कपड़ों से सम्बंधित पूरा रॉ मटेरियल उपलब्ध है, ज्ञातव्य है कि यहाँ रेडिमेड कपड़ों की एक्सपोर्टर लगभग तीन हजार से ज्यादा फेक्ट्रियां हैं, ये फेक्ट्रियां एक्सपोर्ट हेतु बनाए जाने वाले रेडिमेड कपड़ों के लिए कपड़ा मिलों से विशेष कपड़ा बनवाती हैं, जिनसे एक्सपोर्ट किए जाने वाले रेडीमेड कपड़े तैयार करने के बाद बचा हुआ कपड़ा यहाँ सरप्लस के रूप में उपलब्ध होता है। ये फेक्ट्रियां एक्सपोर्ट आर्डर के अतिरिक्त कुछ रेडीमेड कपड़े तैयार करती है वे सभी कपड़े जेन्ट्स, लेडिस एवं बच्चों के सरप्लस मार्केट में बिक्री हेतु आते हैं, बकायदा ब्रांडेड कपड़े यहाँ कम भाव में विक्रय हेतु उपलब्ध है।

रेडिमेड कपड़ों के निर्माण में लगने वाला रॉ मटेरियल (धागा, बटन, लैस, जीप, कटपीस, अस्तर का कपड़ा आदि) भी यहां उपलब्ध है। इस बाजार में फेब्रिक कटपीस कर्टन्स नेट, शूज, जेन्ट्स, लेडिस एवं बच्चों के रेडीमेट, ब्रांडेट गारमेन्ट्स एक्सपोर्ट में रिजेक्टेड मटेरियल उपलब्ध है। यहाँ से सम्पूर्ण भारत के रेडीमेड कपड़ा उत्पादक एवं रीसेलर खरीदी करते हैं तथा यह नकद का मार्केट है। नागर ब्राह्मण समाज के श्री दशरथभाई नागर विगत 16 वर्षों से इस मार्केट में कार्यरत है तथा ब्रांडेड रेडीमेड कपड़े एवं रॉ मटेरियल का व्यवसाय करते हैं।

जय हाटकेश वाणी में इस जानकारी को प्रकाशित करने का यही उद्देश्य है कि नागर समाज के जातिबंधु जो वर्तमान में रेडीमेड कपड़ों के व्यवसाय में है, अथवा यह व्यवसाय शुरु करना चाहते हैं तो इस जानकारी का लाभ उठावें। वे इस सम्बंध में श्री दशरथ भाई से उनके मोबाइल नं.09343833656 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

वैवाहिक युवक

कविश डॉ.बी.एस. दशोरा
जन्मदि. 2-11-1985
स्थान- उदयपुर गौत्र- मांडव्य
शिक्षा- एम.टेक.
सी.एस., फ्रॉम एनआईटी
भोपाल कद- 6 फीट
कार्यरत- युनिसिस
ग्लोबल एट बैंगलोर
सम्पर्क- उदयपुर (राज.) मो. 9461915274
फोन 0294-2464110

अक्षय शैलेन्द्र मिश्रा
जन्मदि. 20-9-1986 (3.45 ए.एम., उज्जैन)
शिक्षा- बी.ई. मैकेनिकल, एमबीए
कार्यरत- असिस्टेंट मैनेजर, वॉल्वो आयशर, इन्दौर, सैलेरी- 5,50000 प्रतिवर्ष
सम्पर्क- मो. 8866102170, 9909957845,
फोन 0265-2351677

अंकित राकेश दवे (मांगलिक)
जन्मदि. 18-5-1987
(8.10 पी.एम., उज्जैन)
शिक्षा- एम.सी.ए.,
कद- 5'8''
कार्यरत- सॉफ्टवेअर
इंजीनियर इन्दौर
सम्पर्क- उज्जैन मो.
09926059358, 09926186796

सुधांशु प्रदीपकुमार पारिख
जन्मदि. 11-01-1984 (5.58 पी.एम.)
शिक्षा- बी.ई. (कम्प्यूटर
साईंस)
कार्यरत- नेटवर्क
एनॉलिस्ट इन बार्कले
टेक्नालॉजी, सेन्ट्रल
इंडिया, पुणे
सम्पर्क- मो.
09975702706, 09580391554

पलाश राजेन्द्र दशोरा
जन्मदि. 2-08-1992
प्रश्नोरा नागर ब्राह्मण
कद- 6 फीट
शिक्षा- बी.ई. (इलेक्ट्रॉनिक्स एंड
कम्यूनिकेशन)
कार्यरत- कॉग्नीजेंट मल्टीनेशनल कंपनी
सम्पर्क- मो. 9926021478

कौस्तुभ दिनेश व्यास
जन्मदि. 2-9-1985
(5.3 ए.एम., उज्जैन)
शिक्षा- बी.कॉम.,
एम.बी.ए.
कार्यरत- स्वव्यवसाय
मेडिकल स्टोर्स
सम्पर्क- उज्जैन मो. 9425094792,
9479887792

गौरव महेश नागर
जन्मदि. 14-5-1993
कद- 5'10'' मांगलिक
शिक्षा- बी.कॉम. बी.पी.एड. अध्ययनरत
कार्यरत- स्पोर्ट्स टीचर (शारदा विहार भोपाल)
मासिक आय- पाँच अंकों में
सम्पर्क- मो. 9893474182, 9179313313

अखिल अशोक नागर
जन्मदि. 23-4-1983
(8.20 रात्री, उज्जैन)
शिक्षा- एम.फार्मा, डीडीपी (पीएचडी)
कद- 5'6''
कार्यरत- पारुल कॉलेज, बड़ौदा
विशेष- तलाकशुदा-2015
सम्पर्क- 8989051649, 9752844118

वैवाहिक युवती

कु.सोना महेश नागर (मांगलिक)
जन्मदि. 27-9-1989
(5.5 पीएम) शाजापुर
शिक्षा- एलएलएम,
पीएचडी अध्ययनरत
कद- 5'3''
सम्पर्क- 9893474182,
9179313313

कु. मालती महेश नागर
जन्मदि. 23-3-1991
(4.00 ए.एम.) मंगलाज
शिक्षा- बी.कॉम. एम.ए.
हिन्दी साहित्य
कार्यरत- म.प्र. पुलिस
सम्पर्क- 9893474182, 9179313313

प्रिया महेन्द्र दशोरा
जन्मदि. 26-05-1992
(मांगलिक) कद- 5'3''
प्रश्नोरा नागर ब्राह्मण
शिक्षा- एम.सी.ए.,
कार्यरत- कॉग्नीजेंट
कंपनी, सम्पर्क- मो. 9926021478

अरुणा रामगोपाल नागर
जन्मदि. 11-06-1986
समय- 9.55 ए.एम.,
झालावाड़
कद- 5'3'', वजन- 55
शिक्षा- एम.एस.सी.,
बी.एड. एम.फिल, सम्पर्क- झालावाड़ (राज.)
मो. 9829182412, 07432-232344

मिताली प्रभाशंकर मेहता (मांगलिक)
जन्मदि. 08-09-1989
(5.55 ए.एम.) मंदसौर
शिक्षा- बी.एस.सी.
बायोटेक्नालॉजी बी.एड.
एम.बी.ए.
कार्यरत- ए.पी.सी.
स्कूल प्रतापगढ़
सम्पर्क- 12, हाजी कॉलोनी,
संजित नाका मन्दसौर

निकिता शैलेन्द्र कुमार मंडलोई
जन्मदि. 24-07-1988 (जबलपुर)
शिक्षा- एम.कॉम., पी.जी.डी.सी.ए.
सम्पर्क- फोन 0761-4064500,
मो. 09329003583

आरती सोमदत्त नागर
जन्मदि. 7-10-1987
(7.55 ए.एम. जयपुर)
शिक्षा- एम.ए. संस्कृत
एंड पॉल
कद-5'5'', गौत्र- गौतम
सम्पर्क- जयपुर मो. 9352905048

कु.श्रद्धा दिलीप नागर
जन्मदि. 15-10-1988 देवास
शिक्षा- एम.बी.ए.
सम्पर्क- इन्दौर मो. 9826857093

कु.यामिनी एम.एस. नागर जन्मदि. 15-12-1991, (2.18 ए.एम.)
कद- 5'3'' शिक्षा- एम.ए. इंग्लिश लिट,
सम्पर्क- सवाई माधोपुर, मो. 8233923337, 9460778351

सिद्धी रावल

श्रीमती प्रीति धीरज रावल को पुत्री रत्न प्राप्ति 17-9-15 गणेश चतुर्थी पर हार्दिक बधाई। पुत्री का नामकरण सिद्धि रावल (परी) किया गया। **बधाई-** शर्मा परिवार (नामली) रावल परिवार (उज्जैन)।

कु.सृष्टि रावल

प्रथम जन्मदिन की शुभकामनाएँ

समस्त रावल एवं नागर परिवार

प्रषेक- नीरज रावल, महानंदानगर, उज्जैन 9826520610

जन्मदिन की बधाई

श्री मनोज तिवारी, महू - 3 नवम्बर

श्रीमती अरुणा शास्त्री, इन्दौर - 7 नवम्बर

श्री अपूर्व नागर, गोवा, 9 नवम्बर

श्रीमती मोनिका नागर, उदयपुर 13 नवम्बर

कु.तन्मय (प्रिंशु) नागर, उदयपुर 15 नवम्बर

श्रीमती अंकिता-जतिन भट्ट की बिटिया, सूरत 28 नवम्बर

शुभाकांक्षी- जोशी, नागर, जाधव, त्रिवेदी, तिवारी, शरद परिवार

प्रेषक- पी.आर. जोशी

तृतीय विवाह वर्षगांठ की बधाई

पूजा एवं अर्पित 30 नवम्बर

एवं जन्मदिन 6 नवम्बर पूजा मेहता

समस्त मेहता एवं नागर परिवार

चि. हर्षिल नागर

सौ. काजल-दिनेश नागर

21 अक्टूबर 2008

शुभाकांक्षी- समस्त नागर परिवार

चित्रदुर्गा, कर्नाटक

मो. 09448948665

सुश्री मिष्टी दशोरा

सुपुत्री- सौ.आस्था-तमिश दशोरा

17 नवम्बर

शुभाकांक्षी- दशोरा परिवार चित्तोड़गढ़

त्रिवेदी परिवार बांसवाड़ा

याज्ञवल्क्य ऋषि

याज्ञवल्क्य शुक्ल यजुर्वेद संहिता के प्रणेता विद्वान ऋषि हैं जिन्हें आचार्य उद्दालक आरुणि का और वैशंपायन का शिष्य बताया गया है। उद्दालक से इन्होंने दर्शनशास्त्रों की और वैशंपायन से वैदिक संस्कार शास्त्रों की शिक्षा ग्रहण की थी। 'शुक्ल यजुर्वेद' का निर्माण करने के साथ-साथ इन्होंने 'शतपथ ब्राह्मण' और 'ईशावास्य उपनिषद्' की रचना की।

कृष्ण यजुर्वेद का शुद्धिकरण करके शुक्ल यजुर्वेद की रचना में याज्ञवल्क्य को अपने गुरु वैशंपायन का भी विरोध करना पड़ा। इस संबंध में पुराणों में एक कथा मिलती है। एक बार सब ऋषियों को एक नियत समय पर एकत्र होना था। जो विलंब से आता उसे ब्रह्म हत्या का पाप लगता। संयोग से वैशंपायन ही विलंब से पहुँचे। उन्होंने सब शिष्यों से अपनी पाप मुक्ति के लिए प्रायश्चित करने को कहा इस पर याज्ञवल्क्य बोले- इस काम के लिए तो मैं अकेला पर्याप्त हूँ। उनकी इस गर्वोक्ति से रूष्ट होकर गुरु ने कहा- तुम मुझसे सीखी सब विद्याएं वापस लौटा दो। याज्ञवल्क्य ने सारी विद्याएं उगल दी। जिन्हें वैशंपायन के अन्य शिष्यों ने तीतर बनकर चुग लिया। इसी से उनकी शाखा तैत्तिरीय कहलाई। ज्ञान से रहित याज्ञवल्क्य ने सूर्य की उपासना से पुनः ज्ञान प्राप्त कर लिया। इन्हें अपने समय का युग-प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। विदेह देश के राजा देवरात जनक के यज्ञ में उपस्थित सब विद्वानों को इनके द्वारा निरुत्तर करने का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में है। जनक के साथ भी इनका संवाद हुआ था। याज्ञवल्क्य की दो पत्नियां थी- मैत्रेयी और कात्यायिनी। मैत्रेयी विदुषी थीं और पति के संन्यास लेते समय उसने जो वाद-विवाद किया उससे बाध्य होकर याज्ञवल्क्य को उसे भी साथ ले जाना पड़ा था। इनके नाम से दस ग्रंथ मिलते हैं जिनमें 'शुक्ल यजुर्वेद', 'ईशावास्योपनिषद्' 'सांग शतपथ ब्राह्मण', बृहदारण्यक उपनिषद्, 'याज्ञवल्क्य स्मृति' विशेष उल्लेखनीय है। मनुस्मृति के बाद याज्ञवल्क्य स्मृति की ही सर्वाधिक मान्यता है। इन्हें शुक्ल यजुर्वेद के द्रष्टा भी मानते हैं। इस स्मृति का रचनाकाल प्रथम शताब्दी ई.पू. से तीसरी शताब्दी के बीच माना जाता है।

यह स्मृति मनुस्मृति के बाद की तथा उससे प्रगतिशील विचारों की है। इसमें आचार, राजधर्म, व्यवहार, प्रायश्चित आदि की विवेचना की गई है। इसने पुत्रहीन विधवा को पति के धन पर अधिकार के लिए प्रमुख उत्तराधिकारी माना है। इस स्मृति पर ज्ञानेश्वर की टीका, जो मिताक्षरा के नाम से प्रसिद्ध है, हिन्दू कानून के संबंध में आज भी सबसे अधिक प्रामाणिक मानी जाती है।

-डॉ.रवीन्द्र नागर

एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना...

विगत दस वर्षों से लगातार 'जय हाटकेश वाणी' का प्रकाशन, प्रचार क्षेत्र पूरा भारत एवं ई-पत्रिका के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व, निरन्तर सुधार, पृष्ठ संख्या में बढ़ोत्तरी, पूरी किताब रंगीन, ज्यादा-से-ज्यादा समाज सुधार की बातें, रिश्ते-ही-रिश्ते, समाज सम्बंधि निर्माणों में सहभागी, वास्तव में कामयाबी का जश्न मनाने का वक्त आ गया है।

'जय हाटकेश वाणी' केवल एक किताब छपकर घर-घर पहुंच जाने का नाम नहीं है। इस किताब ने समाज को यह बताया है कि एक किताब क्या-क्या कर सकती है। जो अच्छा काम कर रहे हैं उन्हें सम्मान, स्थान मिल रहा है, जो नहीं कर रहे हैं वे स्व-प्रमाणित है कि वे निष्क्रिय है। इस वाणी के माध्यम से बहुत सारे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होते हैं जिनकी सूचना हम आप तक पहुँच भी नहीं पाती। परन्तु इतना सब करने के पीछे कोई 'एक' है। वह 'एक' है ईश्वर का आशीर्वाद, बड़े-बड़ों का आशीर्वाद 'एक' ही परिवार है 'एक' ही उद्देश्य है समाज की भलाई। एक ही ड्रॉज है, चैतन्यलोक अखबार के कार्यालय में जहाँ 'जय हाटकेश वाणी' की डाक किसी के भी हाथ में आए वह उस टेबल के ड्रॉज में पहुँच जाती है।

एक ही दिन है प्रतिमाह की 20 तारीख, एक साथ डाक निकालकर जमाई जाती है तथा सम्पादन, कांट-छांट का सिलसिला शुरु हो जाता है। 'एक' ही है जो कम्प्यूटर पर बैठता है वह पूरे महिने आए ईमेल निकाल कर सम्पादक की टेबल पर पहुँचा देता है। कोरियर एवं मेल से प्राप्त सूचनाओं को समायोजित करना संवारना, सजाना, कम्प्यूटर पर तैयार करवाना, पेज बनवाना एवं फिर प्रुफ रीडिंग, फिर छपवाना, छपवाने के बाद पुनः 'एक' पूरा परिवार डाक टिकिट एवं पते चिपका कर 'एक' व्यक्ति रेलवे के आर.एम.एस. तक डाक पहुँचाता है।

'एक' काम जो नेक काम है। उसमें अनेक व्यक्ति लगे हैं तथा उसी अनुपात में पैसा भी खर्च होता है, सम्पादक तो समाज का ही है वह तो क्या सेवा शुल्क मांगेगा, परन्तु कम्प्यूटर पर पेज बनाने वाला 'एक' सशुल्क सेवादार है। कागज का, छपाई का, बाइंडिंग का, डाट टिकिट का सबका पैसा लगता है और महंगाई के इस दौर में खूब लगता है, केवल 550 रु. आजीवन शुल्क में किताब घर-घर पहुंचती है। यह सब आसान नहीं है। हमारा निवेदन है कि यह 'एक' पुनीत उद्देश्य को लेकर अपना काम कर रहा है, परन्तु उसकी भी अपनी सीमाएं हैं क्षमता है, परन्तु 'एक' अकेला थक जाएगा मिलकर बोझ उठाना, प्रत्येक समाजजन का कर्त्तव्य है कि वह उस 'एक' के बोझ को बांटे।

एक नई स्कीम इस हेतु बनाई गई है। मात्र 3000 रु. देकर एक साल के लिए डेढ़ पेज विज्ञापन हेतु आरक्षित कर लेवें, यह राशि हमें अग्रिम प्राप्त हो जाए ताकि पुस्तक प्रकाशन में सहयोग मिल सके। आप जिम्मेदार समाजजन हैं। इस विज्ञापन स्कीम को अपना कर 'एक' के अनेक सहयोगी बनें। ज्ञातव्य है कि हम अपने सहयोगियों के नाम भी प्रकाशित करेंगे।

सम्पादक

जय हाटकेश वाणी की आकर्षक साजसज्जा एवं बहुरंगी छपाई के सहयोगी

श्रीमती शारदाजी स्व.श्री विनोदजी मंडलोई अध्यक्ष नागर महिला मंडल, इन्दौर
74 नं. स्कीम, विजय नगर, इन्दौर

श्री चन्द्रप्रकाशजी नागर- 4/7, एल.पी. भार्गव नगर, उज्जैन

श्रीमती श्यामादेवी स्व.हरिवल्लभजी नागर- अनूप नगर, इन्दौर

श्री दयाशंकर रणछोड़जी रावल- खजराना, इन्दौर

पं.श्री अशोक स्व.प्रहलादजी भट्ट- खजराना गणेश मंदिर, इन्दौर

श्री योगेश स्व.श्री शिवरतनजी शर्मा- खजराना, इन्दौर

जय हाटकेश वाणी परिवार एवं नागर ब्राह्मण समाज आपका सदैव आभारी रहेगा।

बिहारी

लालू से एक एयर होस्टेस ने पूछा- आर यू वेजिटेरियन ऑर नॉन वेजिटेरियन?

लालू- आई एम इंडियन।

एयर होस्टेस- नो, नो सर, यू आर शाकाहारी या मांसाहारी?

लालू- आई एम बिहारी।

आपकी खुशियों के अवसर, स्मृति दिनांक हम याद रखेंगे

मासिक जय हाटकेश वाणी ने अपने निखरे रूप हेतु पाठकों को ही सहभागी बनाने की स्कीम तैयार की है। आप 3000 रुपये अग्रिम भेजकर एक वर्ष के लिए डेढ़ पेज आरक्षित करवा सकते हैं तथा निम्नलिखित आवेदन प्रपत्र में वर्षभर के खुशियों के अवसर एवं स्मृति दिनांक अंकित कर भेज देवें। उस प्रपत्र के आधार पर हम याद रखकर आपके विज्ञापन निर्धारित माह में प्रकाशित करेंगे।

जय हाटकेश वाणी को आपका यह सहयोग विस्तार में उपयोग किया जाएगा तथा हम आपके सदैव आभारी रहेंगे।

आवेदन प्रपत्र

मैं .... पता...

....मो.. जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन सहयोगी सदस्य बनना चाहता हूँ। मैं निर्धारित शुल्क नकद/चेक/ड्राफ्ट द्वारा जमा कर रहा हूँ तथा मेरे निम्नलिखित विज्ञापन दर्शाई गई दिनांक एवं माह पर प्रकाशित करने का कष्ट करें।

नाम	दिनांक/माह	विषय
(1) पिता/माता का नाम-		
(2) पिता/माता का नाम-		
(3) पिता/माता का नाम-		
(4) पिता/माता का नाम-		
(5) पिता/माता का नाम-		
(6) पिता/माता का नाम-		

मैं उपरोक्त दिनांक/माह में प्रकाशित विज्ञापन हेतु फोटो एवं अन्य सामग्री उपलब्ध करवा दूंगा।

हस्ताक्षर

प्रकाशन सहयोगी

ये कैसा दान?

शास्त्रों में उल्लेख है कि कड़ी मेहनत से कमाए हुए धन का एक हिस्सा दान किए जाने के पश्चात् शेष धन उपभोग के लायक हो पाता है। कई लोग है जो इस नियम का पालन करते हैं तथा निर्धारित राशि का दान अवश्य करते हैं जबकि हमारे समाज में दान देने के बाद उसका प्रतिफल पाने की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है।

पहली बात तो यह है कि यदि कोई व्यक्ति आपके घर आकर कल्याणकारी गतिविधि हेतु दान की मांग करता है, तो उसका सम्मान भगवान की तरह करना चाहिए कि वह आपको एक पुनीत कार्य करने का अवसर प्रदान कर रहा है। उस व्यक्ति को दान देने के बाद भूल जाना सबसे अच्छी प्रक्रिया है, कहा तो यह जाता है कि एक हाथ से दान हो तो दूसरे हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए। इसके विपरित दान देने वाले लोग स्वयं उसके उपभोग हेतु उतारु रहते हैं।

लोग यदि किसी धर्मशाला में कमरा निर्माण हेतु राशि दान करते हैं तो चाहते हैं कि उस कमरे में रहने के लिए उनसे शुल्क नहीं लिया जाए या वह कमरा उनके मेहमानों के लिए आरक्षित रखा जाए, यह कैसी प्रवृत्ति है? यदि कोई धार्मिक आयोजन किसी स्थान विशेष पर होता है तो दूसरी जगह के समाजजन यह कह कर दान देने से इंकार कर देते हैं कि वहाँ के कार्यक्रम के लिए हम क्यों दान दें? जबकि धार्मिक अनुष्ठान पूरे समाज के कल्याण के उद्देश्य से किया जाता है, तथा उसका लाभ पूरे समाज को मिलता है यह कह कर कि हम तो उस कार्यक्रम में जा ही नहीं पाते हैं तो हम दान भी क्यों दें? यह याद रहे कि हम जो दान दे रहे हैं उससे स्वयं का कल्याण कर रहे हैं।

उस दान के बाद उसका प्रतिफल या लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्ति को आप क्या कहेंगे? इसी प्रवृत्ति की वजह से समाज उन्नति नहीं कर पा रहा है। उदाहरण के लिए किसी स्थान विशेष पर धर्मशाला या मंदिर का निर्माण किया जाना है तो उसी स्थान के समाजजन पचते रहते हैं, बाहर के लोग वहाँ इसीलिए दान नहीं देते कि हमें क्या फायदा? दान का अर्थ व्यापक है, हमारे दान से अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो यह भावना होनी चाहिए, न कि यह कि हमें क्या फायदा होगा? फलां जगह धार्मिक या सामाजिक आयोजन हेतु हम क्यों पैसा दें, हम तो वहाँ जा ही नहीं पाएंगे। इसके उलट होना यह चाहिए कि कहीं भी कार्यक्रम हो कहीं भी निर्माण हो हमें यथाशक्ति भावनानुरुप दान अवश्य करना ही चाहिए। ऐसे दान से हमारा कल्याण निश्चित ही होगा।

इस सम्बंध में अपने विचार हमें 25 नवम्बर 2015 तक अवश्य लिख भेजें, आगामी अंक में उन्हें प्रकाशित किया जाएगा।

-सम्पादक

पत्थर का दिल

कैसा शोक हो गया पहले पशुओं, अब इन्सान ही इन्सान को मारता है
क्या पत्थर का दिल बना है, जो एक बार भी नहीं पिघलता है।
कितने निर्दोषों के खून से प्यास बुझाई है।
मेरा देश महान था, किसका अभिशाप लगा।
घर का भेदी लंका ढाये, अपनों ने आग लगाई है।
गर्म लोहा है, लोहा ही लोहे को काटता है।
आतंकवाद, भ्रष्टाचार, गुण्डागिर्दी का राग है।
कानून रात भर सोता है। जनता से हक छीनकर
अब तो जाग जाओ कोई इंसान है, एसा जो अकेले में रोता है।
शर्म नहीं आती उनको, अपनों की चिता पर
तनिक आँसु बहाओ, भाइयों की लाश पर
हमने तो आदम खोरो की, आँखों में प्यार देखा है।
याद रखो जहर के सरफिरो जहर से ही जहर कटता है

तुम्हारे लिये कोई, आसु न बहायेगा।
तुम भी लावारिस की तरह पड़े रहोगे।
किस धरा पर तुम दफन होंगे.
कौन तुम्हारी अर्थी पर फूल चढ़ायेगा।
स्वर्ग तो क्या नर्क भी नसीब नहीं होगा।
तुम्हारे जाने से शैतान भी शुकुन मनायेगा।

-चारुमित्रा नागर, मो. 9826667053

अनुकरणीय जो नहीं है, उनके दम पर चल रहे हैं कारोबार

हम नागरजन मूलरूप से गुजरात के निवासी हैं, बहुत वर्षों पहले हम वहाँ से निकलकर देश के विभिन्न हिस्सों में फैल गए तथा जहाँ बसे वहीं के रीति रिवाजों को अपना लिया, परन्तु अपने मूल निवास स्थान की विशेषताओं पर हमने कभी ध्यान नहीं दिया। गुजरात में आज भी जो लोग नहीं है, उनके दम पर करोड़ों का व्यवसाय चल रहा है। वह है अपने परिजनों को पुण्य स्मरण पर श्रद्धांजलि देने का।

गुजरात में बहुत अच्छी परम्परा है, ज्यादा-से-ज्यादा लोग अपने परिजनों के पुण्य स्मरण के विज्ञापन अखबारों और पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाते हैं। वहाँ के पत्र-पत्रिकाओं का मुख्य कारोबार ही पुण्य स्मरण के विज्ञापन से है, जबकि हमारे यहाँ बहुत कम लोग या सम्पन्न परिवार ही पुण्य स्मरण के विज्ञापन प्रकाशित करवाते हैं। पुण्य स्मरण के मामले में अवधि का भी बड़ा महत्व है। परिजनों के देहावसान के बाद कुछ लोग दो-तीन साल तक उन्हें विज्ञापनों के माध्यम से स्मरण कर लेते हैं, परन्तु गुजरात में सालो-साल यह सिलसिला चलता रहता है। इस अवधि में विज्ञापनों के साईज भी कोई विशेष घटते बढ़ते नहीं है। एक निश्चित राशि प्रत्येक परिवार वहाँ इस काम के लिए तय कर लेता है।

इस बात को यहाँ रखने का एक ही मकसद है कि हम नागर हैं एवं मूल रूप से गुजरात के हैं तो हमें इस प्रवृत्ति का अनुकरण करना चाहिए। स्थानीय अखबारों में विज्ञापन के बहुत ज्यादा रेट हैं, परन्तु अपने परिजनों की स्मृति को अक्षुण्ण बनाएं रखने एवं एक प्रांतीय उत्कृष्ट परम्परा को सहेजने के उद्देश्य से समाज की पत्रिका में विज्ञापन देने की शुरुआत करना चाहिए। इससे दो लाभ होंगे, एक तो हम अपने गुजरात की परम्परा को जारी रख सकेंगे तथा दूसरा समाज की पत्रिका को भी इससे जीवनदान मिल सकेगा। याद करते रहिए उन्हें जिन्होंने जीवन दिया, पहचान दी, सम्मान दिया, सब कुछ दिया। जय हाटकेश...

-सम्पादक

रोजगार का अवसर

**जो भी नागर ब्राह्मण नवयुवक
चित्रदुर्गा (कर्नाटक) में
कपड़ों (साड़ी, रेडिमेड, आदि)
का काम करना या सीखना चाहते हों
वे अवश्य सम्पर्क करें-**

पद रिक्त हैं

**रेडीमेड गारमेन्ट्स की मार्केटिंग - 2 पद
शोरुम में साड़ी हेतु सेल्समेन - 2 पद
अकाउंटेंट - 1 पद, हेल्पर - 6 पद**

**-सम्पर्क सूत्र-
09449973910
09448948607**

पति: जब भी मैं पिताजी की तलवार देखता हूँ तो मेरा लड़ाई पर जाने को दिल चाहता है।
पत्नी: तो जाते क्यों नहीं?
पति: क्या करूँ, इसके तुरंत बाद उनकी नकली टाँग की याद आ जाती है।

❖ ❖ ❖

रमेश- सुरेश यार, तूने तो कहा था कि यहां घुटने-घुटने तक पानी है लेकिन मैं तो डूबने वाला था।
सुरेश- बात यह है कि मैं तो यहां नया आया हूं। मैंने सुबह बत्तखों को इस पानी से गुजरते हुए देखा था। उनके तो घुटने-घुटने तक ही पानी था।

❖ ❖ ❖

अनिल: कल मेरा बेटा आ रहा है।
सुनील: ज्लेकिन उसे तो पांच साल की सजा हुई थी।
अनिल: हां, लेकिन उसके अच्छे व्यवहार के कारण उसकी सजा का एक साल माफ कर दिया गया है।
सुनील: बहुत अच्छा! भगवान ऐसी औलाद सबको दे।

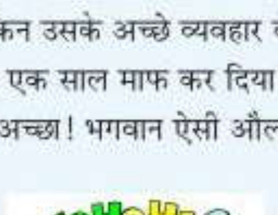

लड़ियाँ झूलती है और रात्री में आतिशबाजियाँ छोड़कर आनंद में झूमते हैं। हाँ, बंगाली परिवारों में लक्ष्मी-गणेश की पूजा कम देखने में आती है। कुछ शक्ति-भक्तों के घरों में सम्पूर्ण विधि-विधान से बिना किसी जीव की बलि के काली पूजा होती है। गलियों के क्लबों द्वारा मैदान या आम रास्ते पर दर्शनीय और कलात्मक पंडालों में हजारों की मात्रा में सार्वजनीन काली पूजा होती है। जिसमें कहीं-कहीं बकरों की बलि भी दी जाती है।

दीपावली देश और विदेश में

दीपावली के सम्बन्ध में स्कंद-पुराण, पद्म-पुराण और भविष्य पुराण में विभिन्न मान्यताएँ मिलती हैं। कहीं महाराज पृथु द्वारा पृथ्वी दोहन कर देश को धन-धान्यादि से समृद्ध बना देने के उपलक्ष में दीपावली मनाये जाने का उल्लेख मिलता है, कहीं समुद्र-मंथन के समय भगवती लक्ष्मी के प्रादुर्भाव होने की प्रसन्नता में दीपोत्सव वर्णित है तो कहीं भगवान श्रीकृष्ण द्वारा नरक चतुर्दशी को नरकासुर के वध किए जाने पर उसके बंदीगृह से सोलह हजार राजकन्याओं का उद्धार करने पर दूसरे दिन अमावस्या को श्री कृष्ण के अभिनन्दन के रूप में दीपावली मनाए जाने का उल्लेख है। कहीं पर (महाभारत में) पांडवों के वनवास से लौटने पर प्रजा द्वारा उनके स्वागत के लिए दीपामालाओं के आयोजन से सम्बन्ध जोड़ा गया है और कहीं भगवान श्रीराम के अयोध्या लौटने पर उनके स्वागत हेतु दीपमालाओं के आयोजन से सम्बन्ध स्थापित किया गया है। कहीं सम्राट विक्रमादित्य के विजयोत्सव में जनता द्वारा दीपावली मनाए जाने का प्रसंग है।

सनत्कुमार संहिता के अनुसार वामनरूप श्री विष्णु भगवान ने कार्तिककृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) से अमावस्या तक तीन दिनों में दैत्यराज बलि से सम्पूर्ण लोक ले, उसे पाताल जाने को विवश किया था। भगवान विष्णु ने जब बलि से वर मांगने को कहा था तो राजा बलि ने यह वर मांगा था कि जिन तीन दिनों में भगवान ने समस्त लोक ले लिए, उन्हीं तीन दिनों में जो मनुष्य देवता यमराज के उद्देश्य से दीपदान करें, उसे यम की यातना न भोगनी पड़े और उसका घर कभी लक्ष्मी से विहीन न हो। भगवान ने बलि का कथन स्वीकार किया था। तभी से दीपोत्सव और दीपदान का प्रचलन हुआ। दीपावली के दिन यम के दीपदान के साथ अपने समस्त पितृगणों को लोग ससंकल्प आज भी दीपदान करते हैं।

दूर्गा सप्तशती एवं रात्रिसूक्त में तीन रात्रियों का उल्लेख दारुण रात्रियों के रूप में हुआ है- कालरात्रि, महारात्रि और मोहरात्रि। 'काल रात्रिः महारात्रिः मोहरात्रि को शिवरात्रि और मोह रात्रि को दीपावली माना गया है। कुछ विद्वान दीपावली को काल रात्रि के रूप में मानते हैं। यही कारण है कि बंगाल में दीपावली की रात्रि को काली पूजा होती है। बंगाली समाज उस दिन को दीपावली न कहकर कालीपूजा कहते हैं, किन्तु हिन्दी भाषा-भाषी के निकट सम्पर्क में आने के कारण दीपावली भी मनाते हैं। घर-घर में दीप जलाए जाते हैं। बिजली के बल्बों की

दक्षिण भारत विशेषतः तमिलनाडु में दीपावली मनाने की मान्यता भगवान विष्णु द्वारा नरकासुर-वध से सम्बंधित है। दीपावली के एक दिन पहले नरक-चौदस को गंगा-स्नान का विशेष महत्व है। तेल का उबटन लगाकर प्रातःकाल स्नान करना, गंगा स्नान के समान माना जाता है। घर के सभी सदस्य इस तरह स्नान करके नये वस्त्र धारण करते हैं और प्रातःकाल दीपावली मनाते हैं। दीपावली के दिन सभी एक-दूसरे के घर जाते हैं और 'गंगा-स्नान आच्चा' (गंगा स्नान हुआ) पूछते हैं। उम्र में छोटे लोग बुजुर्गों को प्रणाम करके आशीर्वाद लेते हैं। लोग पटाखे छोड़ते हैं और घर पर आए हुए लोगों को उत्साहपूर्वक मीठे एवं नमकीन व्यंजन देते हैं। वैसे दीपावली ही ज्योति पर्व है, परन्तु कार्तिक की पूर्णिमा को दीपोत्सव पर्व विशेष रूप से मनाया जाता है। 'कार्तिगै उत्सव' पर बहनों द्वारा भाइयों के सुदीर्घ और सुखमय जीवन की मंगल कामना से दीप जलाने का रिवाज है। सुदूर रहने वाली बहनों को भी भाई शुभकामनाएं भेजते हैं। इस शुभ दिन का विशेष व्यंजन है- धान के लावे, चिवड़ा और गुड़ से बना लड्डू (पोरी लड्डू)

कुमाऊँ में भी दीपावली बड़े धूम-धाम से मनाई जाती है। यहाँ विचित्रता यह है कि दीपावली के एक दिन पहले स्नान करना आवश्यक होता है। शाम को घर में जितने सदस्य हैं उतनी बत्तियाँ बनाकर एक बड़े दीपक में उन्हें रखकर जलाया जाता है और उस दीपक को घर के बाहर यम के निमित्त रखा जाता है। दीपावली को घर-भर में 'ऐपण' (अल्पना) एवं महालक्ष्मी के पौ (चरण-चिन्ह) बनाते हैं।

सिन्धी लोगों में प्रत्येक पर्व पर व्रत करना जरूरी रहता है, चाहे कोई जयन्ती हो या पुण्यतिथि, मुंडन हो या यज्ञोपवीत अथवा विवाह। दीपावली के दिन भी सिन्धी लोग व्रत करते हैं तथा दीपकों से और आजकल बिजली के बल्बों से घर को सजाते हैं, इसके अलावा रात्रि में घर के बाहर मशाल से (काना बारै रखणु) रोशनी करते हैं। हटड़ी रखना अर्थात् मिट्टी का घर बनाकर उसमें दुकान जैसी सजावट करना इस समाज की पहचान है।

राजस्थान के भील आदिवासी दीपावली बड़े धूमधाम से अनोखे ढंग से मनाते हैं। वे पशुओं को लक्ष्मी मानकर उनके ललाट पर कुंकुम का तिलक लगा कर उनकी आरती उतारते हैं। इस उत्सव के प्रारम्भ में वे (खेतरपाल) खेत के प्रहरी देवता की पूजा करते हैं। खेत के किसी ऊँचे पत्थर पर सिन्दूर-चढ़ाकर उनके सामने नींबू काटकर नारियल फोड़ते हैं और दीपक जलाकर अर्चना करते हैं। किसी लोकप्रिय आदिवासी की असामयिक मृत्यु हो जाने पर उसका स्मारक बनाकर सभी त्यौहारों पर उसकी पूजा करते हैं जिसे 'गाता-पूजा' कहते हैं। इसी अवसर पर एक स्नेह-मिलन (मेर मेरिया) त्यौहार मनाते हैं। दीपावली के दूसरे दिन पशुओं को अलंकृत करना भी प्रचलित है।

हमारे देश के समस्त राज्यों में शायद ही ऐसा कोई घर हो जहाँ दीपावली के दिन दीपक न जलता हो। हाँ, धनकुबेरों के यहाँ अगर उस दिन लाखों रुपये घर की सजावट, बिजली का प्रकाश, आतिशबाजी और कीमती व्यंजनों पर खर्च होते हैं तो गरीबी के स्तर पर जीवित लोगों के यहाँ कम से कम एक दीया तो अवश्य ही जलता है। दीपावली के कुछ दिन पहले से ही घरों की रंगाई-पुताई और सफाई शुरु हो जाती है। जिससे वर्षा के कारण गंदे हुए घर स्वच्छ हो जाये और कीड़े-मकोड़े नष्ट हों। घर-घर दीपावली के दिन लक्ष्मी-गणेश की पूजा होती है और दीपदान। अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार लोग घरों को सजाते हैं, बिजली का प्रकाश करते हैं और आतिशबाजी छोड़ते हैं। खील, बताशे, चीनी के खिलौने, मिठाइयां तथा अनेक नमकीन व्यंजन भगवान को भोग लगाते हैं। कहीं-कहीं चांदी या कांसे की थाली में लक्ष्मी-गणेश चित्रित करके उनकी पूजा करते हैं। व्यापारी समुदाय उस दिन अपने नये खातों की भी कहीं-कहीं पूजा करते हैं। सभी लक्ष्मीजी से प्रार्थना करते हैं कि वे प्रसन्नचित्त से उनके यहाँ विराजमान रहें और अन्यत्र न जाएं, क्योंकि लक्ष्मी को चंचला कहा जाता है। अनेक जगह विशेषतः गुजराती समाज में दीपावली के दूसरे दिन नववर्ष मनाया जाता है और लोग एक-दूसरे के घर जाकर नमस्कार प्रणाम के साथ शुभकामनाएँ देते हैं।

हमारे देश में ही केवल नहीं, विश्व के कई देशों में दीपावली का पर्व बहुत धूम-धाम से मनाया जाता है, जिन देशों में हिन्दूओं और सिखों की बड़ी आबादी है, वहाँ तो रोशनी का जलसा तो देखते ही बनता है। श्रीलंका, म्यामां, थाईलेन्ड, मलेशिया, सिंगापुर, फिजी, इंडोनेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, मॉरीशस, केन्या तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनीदाद-टोबैगो, नीदरलैण्डस, कनाडा, ब्रिटेन और अमेरिका में दीपावली या ज्योति पर्व किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। नेपाल में भी दीपावली मनाई जाती है। इसे यहाँ 'स्वान्ति' कहा जाता है। यह पर्व पाँच दिन तक मनाया जाता है। भारत जैसी ही परम्परा है। थोड़े बदलाव के साथ। धनतेरस को कौवे और चतुर्दशी को कुत्ते को भोजन कराया जाता है। दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजा होती है और नेपाली संवत् शुरु होता है। प्रतिपदा

हमारे देश में मनाये जाने वाले सभी त्यौहारों में दीपावली का अपना विशेष स्थान है। इस पर्व के साथ हमारे देश का युग-युग का इतिहास इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि चाह कर भी हम उन सब तथ्यों को भूला नहीं सकते जो इतिहास और पुराणों के माध्यम से हम तक पहुंचे हैं।

के दिन उनका नया वर्ष होता है और द्वितीया को बहनें भाईयों को टीका करती है। श्रीलंका में तमिल समुदाय के लोग तेल स्नान करते हैं और नए वस्त्र पहनते हैं। पूजा (पोसई) करके बड़ों से आशीष लिया जाता है। रात्रि को पटाखे छोड़े जाते हैं। मलेशिया में हिन्दू सूर्य कैलेण्डर के सातवें महीने में दीपावली मनाई जाती है। सिंगापुर में दीपावली के दिन छुट्टी रहती है। वहाँ की दीपावली देखने योग्य रहती है। मालूम पड़ता है जैसे भारत की ही दीपावली हो। वहाँ 'हिन्दू एन्डाउमेन्ट बोर्ड सिंगापुर' कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करता है।

कैरेबियाई देशों में त्रिनीदाद-टोबैगो में बड़ी संख्या में भारतीय है, इस कारण बड़े धूमधाम से दीपावली मनाई जाती है। लोग वहाँ पूजा करते हैं और रोशनी से घर जगमगा उठते हैं। ब्रिटेन में भी दीपावली पर्व मनाया जाता है। लीसेस्टर में तो बहुत बड़ा आयोजन होता है। लेस्टर में हिन्दू, जैन और सिख समुदाय भारत जैसी ही दीपावली मनाते हैं। लेस्टर की ब्रेलग्रेव रोड़ पर हर साल 50 हजार से अधिक भारतीय एशियन और अन्य लोग दीप जलाने और आतिशबाजी का आनन्द लेते हैं। पार्कों में पटाखे छोड़ते है और अपने

रिश्तेदारों और प्रियजनों को मिठाई बाँटते हैं। अमेरिका में 2009 में पहली बार किसी अमरिकी राष्ट्रपति ने व्हाइट हाउस के ईष्ट रूप में दीपावली का परम्परागत दीया जलाया था। व्हाइट हाउस में दीपावली मनाने की शुरुआत जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने की थी, लेकिन प्रशासन के शीर्ष अधिकारी ही उसमें भाग लेते थे।

हमारे देश में वैदिक काल से ही ज्योति सदैव पूजनीय रही है। ज्योति को देव-स्वरूप माना गया है। सूर्य हो या चन्द्र, अग्नि हो या दीप सदैव पूजनीय एवं वंदनीय रहे हैं। हमारी संस्कृति और साहित्य सूर्य, चन्द्र अग्नि और अग्नि के अशं रूप दीपक के चारों ओर गुम्फित है। हमारे जन्म से लेकर समस्त संस्कारों में, पूजा-पर्व में एवं मृत्यु और श्राद्धादिक कार्यों तक यह दीपक साथ रहता है। दीपक को इसीलिए ब्रह्म-स्वरूप माना गया है- 'यो दीप ब्रह्मस्वरूपस्वत्वम्'। अनेकों विदेशी राष्ट्रों को अग्नि, मशाल और दीप की ज्योति का वंदनीय स्वरूप हमारी ही संस्कृति की 2500 से अधिक वर्षों पुरानी देन है। दुनिया के अनेक राष्ट्रों में मशाल जलाकर फायर-फेस्टिवल अलग-अलग नामों से विख्यात हैं जिन सब में एक प्रकार की मंगलकामना निहित है। दीपक का प्रकाश, जीवन और ज्ञान का प्रतीक है। नन्हा सा दीपक घने अंधकार और अज्ञान को अपनी समस्त क्षमता के अनुसार नष्ट करने के लिए संघर्ष करता है। जब तक उसमें तेल है- जीवन है, दीपक इसीलिए हमारा जीवन साथी है- संघर्ष के लिए यह आलोक ज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान हमेशा ही वंदनीय रहा है और रहेगा। दीपक भी इसी तरह वंदनीय रहा है और रहेगा। दीपकों का अनुशासित श्रृंखलाबद्ध संघर्ष करने का ही दूसरा नाम है- दीपावली।

'त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो
विद्युदग्नि तारकाः।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपावल्यै
नमो नमः।।

तुम (दीपक) ज्योति हो, इन समस्त ज्योति देने वाले सूर्य, चन्द्र, विद्युत, अग्नि और तारों में ज्योति स्वरूप हो, दीपावली तुम्हें बारम्बार नमस्कार है।

-गणेश शंकर नागर
शिवपुर, हावड़ा

दीपावली का त्यौहार हो और दरवाजे पर रंगोली न हो ऐसा तो हो ही नहीं सकता। हम सभी दीपावली पर घर सजाने के उद्देश्य से रंगावली बनाते हैं। पर अधिकतम लोगों को यह नहीं मालूम होता है कि यह क्यों बनाई जाती है। पुरातन काल से चली आ रही परंपरा सुबह घर की सफाई कर द्वार पर रंगावली बनाना यह रोज का कार्य होता था। एकल परिवार, फ्लेट सिस्टम निवास में स्थानाभाव के कारण यह कला सिर्फ दीपावली पर आकर सिमट गई।

धरती माँ का श्रृंगार–रंगावली

हमारी धरती माँ जो हमें रहने के लिये स्थान, पीने के लिये जल, खाने के लिये अन्न, शुद्ध हवा प्रदान करती है। जिसे हम गर्व से 'माँ' कहकर पुकारते हैं। इस माँ का श्रृंगार करना, उसे सुंदर बनाना, उसे विभिन्न रंगों से सजाना अर्थात् रंगोली निर्माण करना। घर के दरवाजे पर रंगोली निर्माण करना वह प्रातः सूर्योदय से पूर्व अर्थात् यह हमारे सूर्य देव को आमंत्रण देना है। कि वे हमारे घर पधारे व सभी को आरोग्य प्रदान करें। रंगोली निर्माण उन्हें एक तरह से आसन प्रदान करना होता है। रंगावली सफेद रंग की होती है। जिसमें सूर्य प्रकाश के सभी रंग समाहित होते हैं। यह वातावरण की नकारात्मक किरणों को अवशोषित कर सकारात्मक उर्जा का, किरणों का उत्सर्जन करती है। जिससे घर के वातावरण में प्रसन्नता का संचार होता है। अनुभव किया है कि यदि कोई व्यक्ति आपके घर गुस्से में, या किसी बुरे विचार के साथ प्रवेश करता है, या आता है, उस घर के द्वार पर सुंदर रंगोली बनी हो तो उसे देख व वह कुछ क्षण उन सब बातों को भूलकर प्रसन्न हो जाता है व प्रसन्न मन से घर में प्रवेश करता है। यह प्रभाव रंगोली का है।

रंगावली अनेक प्रकार से बनाई जाती है। विभिन्न प्रांतों में यह विभिन्न नाम से जानी जाती है। जैसे महाराष्ट्र रंगोली, राजस्थान, मांडना, बंगाल में अलिपना, (अल्पना) गुजरात-चोकपूरना, केरल पुवडिल आदि-आदि। अनेक माध्यमों से रंगावली निर्माण किया जाता है। जैसे- फूलों से, चांवल के आटे से, बालु रेती से, लकड़ी से, धान्य से इत्यादि। इसके अलावा पानी के अंदर, पानी के ऊपर व अन्य कई तरह से यहाँ तक कि सब्जी, मसाले एवं फलों से भी रंगावली निर्माण किया जाता है।

इन सभी के अलावा भारत भर में प्रसिद्ध एक रंगावली संस्कार भारती की रंगोली जो पांच उंगलियों की सहायता से बनाई जाती है। जिसके निर्माण में हमारे पारंपरिक चिन्हों का उपयोग किया जाता है। जैसे बिन्दू, लाइन, अर्ध गोल, पूर्ण गोल, केन्द्रवर्धिनी, गोपदम, शंख, चक्र, गदा, पद्म, ॐ श्री, स्वास्तिक आदि जिनका अपना आध्यात्मिक महत्व है। जैसे- बिन्दु-सौभाग्य एवं बीज का प्रतीक गोपद्म-लक्ष्मी का प्रतीक, शंख, चक्र, गदा, पद्म, विष्णु के आयुध आदि। सभी प्रतीकों से मिल दीपावली के इस पर्व पर हम सभी रंगावली निर्माण करें। सभी के घर सुख समृद्धि शांति व लक्ष्मी का आगमन हो। हम सभी संकल्प लें सिर्फ दीपावली पर ही नहीं पूर्ण वर्ष भर हम हमारे द्वार पर रंगोली निर्माण करें।

-सौ. भारती जितेन्द्र मिश्रा (रंगावली कलाकार)
100, जुना पीठा, इन्दौर मो.9424877216

विश्व का एक अमूल्य ग्रन्थ 'श्रीमद्भगद्गीता'

श्रीमद्भगद्गीता विश्व का एक अद्भुत ग्रन्थ है जो मानव मात्र को कर्म करते हुए अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसित करता है और विषम संकट को सहन करने की क्षमता प्रदान करता है एवं धैर्य को बनाये रखता है । साक्षात परम ब्रम्ह भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से मानव मात्र को यह परम रहस्य युक्त ज्ञान प्रदान किया है जिस ज्ञान को प्राप्त कर मानव इस नश्वर एवं दुस्तर संसार से पार हो सकता है । विश्व में श्रीमद्भगद्गीता के समान कल्याणकारक और कोई ग्रन्थ नहीं है । गीता में ज्ञान योग,ध्यान

योग,कर्मयोग और भक्तियोग आदि साधन मोक्ष प्राप्ति के लिए बताये गये हैं उनमें से कोई भी एक साधन का अनुसरण कर मनुष्य शीघ्र मोक्ष का अधिकारी हो जाता है,इतना ही नहीं यह सामान्य जीवन में उत्तम मार्गदर्शक तथा देशभक्ति,ईश्वर भक्ति को बढ़ाने वाला अनुपम ग्रन्थ है ।इसी 'गीता' के परम ज्ञान को प्राप्त कर देश भक्त भगत सिंह एवं अन्य देशभक्त हंसते-हंसते फांसी चढ़ गये, क्योंकि गीता ज्ञान से वह जानते थे कि आत्मा अमर है।

नैनं छिन्दति शस्त्राणि
नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो
न शोषयति मारुतः ।। 2/23

इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकता नहीं इसको आग में जलाया जा सकता है और नहीं इसे जल में गलाया जा सकता है और न हीं इसे वायु सुखा सकती है ।

यह नित्य है और शरीर अनित्य है यह शरीर वस्त्र की भांति है

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय ।
नवानि गृह्णति नरोऽपयाणि ।
यथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यनि
संयाति नवानि देही ।।

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नये वस्त्र धारण कर लेता है वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्याग कर नये शरीर को प्राप्त हो जाती है । अतः आत्मा तो अमर है हमारा (आत्मा का) कुछ भी नहीं बिगड़ सकता है और यह देह तो नाशवान है इसका तो नाश होना ही है हम फिर स्वतंत्र भारत में जन्म लेंगे यही सोचकर भारत के अनेक देशभक्तों ने फांसी के फंदे को स्वीकार कर लिया । यह गीता के ज्ञान का ही प्रभाव है । इसी प्रकार गीता के अध्याय 18 के श्लोक 45 में बताया है कि

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः
संसिद्धिं लभते नरः ।

अर्थात अपने-अपने स्वाभाविक कर्मों में तत्परता से लगा हुआ मनुष्य भगवत प्राप्ति रुप परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है। अर्थात कर्म करते हुए ईश्वर प्राप्ति की जा सकती है जैसे भक्त रैदास,भक्त कबीर इन्होने अपना कर्म नहीं छोडा परन्तु कर्म में नीति युक्त रहे एवं झूठ-कपट से रहित हो असत्य व्यवहार नहीं करें ऐसा संदेश दिया । इस प्रकार अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा ईश्वर की पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त कर सकता है ।

इस प्रकार घर में रह कर अथवा अपने कार्यस्थल पर ही स्वाभाविक कर्तव्य निर्वहन करना एवं कर्म द्वारा परमेश्वर की पूजा का गीता में प्रतिपादन किया गया है । इस प्रकार अनेक महत्वपूर्ण बातों का गीता में सरल से सरल ढंग से उल्लेख है जिसके अनुसरण से मानव अपने उत्कृष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है और मनुष्य देह प्राप्ति को सार्थक कर सकता है । अतः मानव मात्र के लिए 'गीता' का स्वाध्याय आवश्यक है जिससे सहज ढंग से ईश्वर प्राप्ति की जा सकती है । यही कारण था कि भारत के लोकप्रिय पूर्व राष्ट्रपति स्व.एपीजे अब्दुल कलाम एवं स्व.शंकरदयाल शर्मा भी गीता का अध्ययन करते थे ।

-डॉ.ओ.पी.नागर
श्री रामांक, 08 गोपालपुरा उज्जैन
फोन-0734-2526252

अजय- भाई विजय, तुम इतने दिन से नजर नहीं आ रहे थे, कहीं बाहर गए थे।
अजय: हां, मैं श्रमदान करने गया था।
विजय: मैं समझा नहीं।
अजय: दरअसल, मुझे छह महीने का सश्रम कारावास मिला था।

श्रीरामकथा के दुर्लभ अल्पज्ञात प्रसंग

कैकेयी से कद्रू तक सौत ईर्ष्या का दुष्परिणाम

श्रीराम के युवराज पद पर राज्याभिषेक की घोषणा से अत्यन्त दुःखी होकर दासी मंथरा, कैकेयी से कौसल्या के प्रति विष उगलती हैं। इस घटनाक्रम को गोस्वामी तुलसीदासजी ने बड़े ही सटीक रूप से दिया है। यथा -

चौ.-चतुर गँभीर राम महतारी। बीचु पाई निज बात सँवारी।।

पठए भरतु भूप ननिअउरें। राम मातु मत जानब रउरें।।श्रीरामचरितमानस आयो0 17-1

मन्थरा कैकेयी से कहती है कि कौसल्या (श्री राम की माता) बड़ी चतुर और गम्भीर हैं। उसके मन की बात जानना कठिन है। उसने अवसर पाकर अपनी बात बना ली है। कौसल्या के ही कहने पर राजा दशरथ ने भरत को ननिहाल भेज दिया। कैकेयी आप तो बस इसे कौसल्या की दशरथ को दी गई सलाह मान लीजिये।

इतना कहने के पश्चात् भी कुटिल मंथरा कौसल्या के विरूद्ध कैकेयी को उसकी (कौसल्या) को अन्य सौते जो सेवा करती है वैसी न करने से नाराज है।

चौ.सेवहिं सकल सवति मोहिनीकें। गरबित भरत मातु बल पी के।

सालु तुम्हार कौसिलहि माई। कपट चतुर नहिं होई जनाई।। श्रीरामचरितमानस आयो0 17-2

कौसल्या ऐसा समझती है कि और सब सौतें तो उनकी (कौसल्या की) अच्छी तरह सेवा करती हैं। एक भरत की माता पति (दशरथजी) के बल पर गर्वित रहती है इसी से हे माई कौसल्या को तुम ही साल (खटक) रही हो किन्तु कौसल्या कपट करने में चतुर है। अतः उसके हृदय का भाव जानने में नहीं आता। वह मन की बात छिपाये रखती है राजा का तुम पर विशेष प्रेम है। कौसल्या सौत के स्वभाव से उसे देख नहीं सकती। इसलिये उसने जाल रचकर राजा को अपने वश में करके भरत की अनुपस्थिति में राम के राज तिलक का ठीक समय निश्चित करवा लिया। मंथरा कहती है कि कैकेयी तुम्हें अभी भी कुछ समझ नही पड़ रहा है। अपने भले-बुरे अथवा मित्र शत्रु को तो पशु भी पहचान लेते हैं। मैं यह बात रेखा (लकीर) खींचकर बलपूर्वक कहती हूँ, कि हे भामिनी ! तुम तो अब दूध में गिरी हुई मक्खी हो दशरथ तुम्हें निकाल बाहर करेगें। जो पुत्र सहित कौसल्या की चाकरी बजाओगी तो घर में रह सकोगी अन्यथा घर में रहने का कोई दूसरा उपाय नहीं है।

कैकेई के हृदय में सौंत का विष धोलते हुएं मंथरा अत्यन्त ही पटु थी तथा अंत में उसने कद्रू एवं गरूड माता विनता के दासी जीवन का उदाहरण दिया -

कद्रू बिनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहि कौसिलाँ देब।

भरतु बंदिगृह सेंइहहिं लखनु राम के नेब।।

श्रीरामचरितमानस आयो0 दोहा- 19

कद्रू ने विनता को यह दुःख दिया था, तुम्हें कौसल्या देगी। भरत कारागार का सेवन करेगें और लक्ष्मण राम के नायब होगें। यहां इस उदाहरण से कैकेयी अत्यन्त ही भयभीत होकर श्री दशरथ जी से भरत का राजतिलक तथा श्रीराम को चौदह वर्ष वनवास माँगती है। यहां इस दोहे में कद्रू एवं विनता की अन्तर्कथा बड़ा महत्व रखती है क्योकि कद्रू ने विनता को क्या दुःख और क्यों दिया? ये दोनों कौन थी तथा दुःख का अंत कैसे हुआ। इस अन्तर्कथा का वर्णन संक्षिप्त गरूड पुराण, पद्मपुराण मत्स्यमहापुराण श्रीमद्देविभागवतांक तथा अन्य पुराणों में बड़े ही रोचक ढ़ंग से वर्णित है। प्रचेताओं के पुत्र दक्ष प्रजापति की पत्नी वीरिणी के गर्भ से साठ कन्याओं का जन्म हुआ उनमें से कश्यप ऋषि को तेरह कन्याएँ ब्याही गई थी। कश्यप ऋषि की 13 पत्नियों के ये नाम है - अदिति, दिति, दनु, अरिष्टा, सुरसा, सुरभि, विनिता, ताम्रा, क्रोधवशा, इरा, कद्रू, रवसा,और मुनि,। विनता की दो सन्तानों में एक पक्षियों के श्रेष्ठ गरूड और दूसरे अरूण थे। अरूण सूर्य देवता के सारथी थे। इसके अतिरिक्त विनता की एक सौदामिनी नामक कन्या भी थी जो कि सदैव आकाश में चमकती दिखाई देती थी। अरूण के दो पुत्र हुए सम्पाति एवं जटायु। सम्पातिए के भी दो पुत्र हुए बभ्रु और शीध्रग। इसमें शीध्रग बहुत प्रसिद्ध हैं। जटायु के भी दो पुत्र हुए - कर्णिकए और शतगामी ये दोनो भी पुराणों में प्रसिद्ध होकर वर्णित है। इन पक्षियों के असंख्य पुत्र-पौत्र हुए। सुरसा के गर्भ से 1000 सर्पो की उत्पत्ति हुई तथा उत्तम व्रत का पालन करने वाली कद्रू ने हजार मस्तक वाले एक सहस्त्र नागो को पुत्र के रूप में जन्म दिया इसमे 26नाग प्रधान रूप से प्रसिद्ध है यथा शेष, वासुकी, कर्कोटक, शंख, ऐरावत, कम्बल, धनंजय, महानील, पद्म अश्वतर, तक्षक, एलापत्र, महापद्म धृतराष्ट्र, बलाहक, शंखपाल, महाशंख, पुष्पद, शुभानन, शंकुरोमा, बहुल, वामण, पाणिन, कपिल, दुर्मुख तथा पंतजलिमुख। इनकी संख्या का कही भी अंत नही है इनमें से अधिकांश नाग राजा जनमेजय के यज्ञ में जला दिये गए।

(क्रमशः)

-डॉ. नरेन्द्र कुमार मेहता
ऋषिनगर विस्तार, उज्जैन
0734-2510708/9424560115

सिनेमा हॉल की कुर्सी का हत्था और मानव जीवन

जय हाटकेश वाणी के प्रिय पाठकगण जो वर्तमान में 30-35 के आस पास के हो चुके होंगे वे तो इस लेख के शीर्षक के संबंध में कुछ तो अनुमान लगा लेंगे कि लेख का आशय किस ओर इंगित कर रहा है क्योंकि वे महानुभाव पुराने सिनेमा हॉल एवं उसकी विभिन्न क्लास, कुर्सी आदि का अनुभव कर चुके होंगे किन्तु मेरे आधुनिक नौजवान पाठक शायद अधिक विचार कर रहे होंगे कि भला कुर्सी का हत्था और मनुष्य जीवन की परिस्थितियाँ कैसे मेच होंगी। हाऊएवर में उन्हें यकीन दिलाता हूँ कि वे अतिशीघ्र मेरे आशय को भली-भांती आत्मसात कर लेंगे क्योंकि आशा ही जीवन है।

तो, वो क्या है मित्रों कि पुराने जमानें में मनोरंजन के साधनों के नाम पर सिनेमा, सर्कस, नाटक, कठपुतली, नृत्य शो आदि हुआ करते थे कारण कि उस वक्त आधुनिक माध्यम जैसे टी.वी., सी.डी., पेन-ड्राईव, इन्टरनेट-विन्टरनेट, लेप-टॉप, सेट-टॉप आदि नहीं हुआ करते थे और घर में बैठे लेटे लेटे चलते फिरते खाते पीते और किचन मे रोटी बेलते फिल्मों का या टी वी सिरियल का लुफ्त नहीं उठा पाते थे जो आज उठा रहें हैं। उन्हें तो बस यदि फिल्म देखना हो तो सिनेमा हॉल का ही रूख करना पड़ता था और वही तीन घंटे अंधेरे में मुंगफली गेट क्लास से उठते हुए बीड़ी-सिगरेट के धुए में बैठकर सुनहरे पर्दे पर फिल्म दर्शन करने होते थे।

आजकल की बात अलग है कि चुनिन्दा लोग पी.वी.आर में फिल्मों का आनन्द लेते है और वहाँ बैठने की क्या व्यवस्था होती है यह तो बयां नहीं कर सकते क्योंकि हम कभी वहाँ गये हो तो ना। फिर आजकल तो कम्प्यूटर में घर बैठे फिल्म अपलोड-डाउनलोड करके भी सस्ते में देखी जाती है। तभी तो पुराने सिनेमा हॉल, बेहाल हो गये और उनके स्थान पर आजकल फ्लेट्स या मॉल बन गये। हाँ मॉल में पी.वी.आर भी होते हैं। यह अलग बात है।

तो मित्रों बात होती है सिनेमा हॉल की कुर्सी के हत्थे की। जिन्होंने अनुभव किया होगा वे लोग तो प्रेक्टीकली इस लेख को पढ़ते हुए ख्यालो में वो आनन्द या परेशानी का अनुभव कर लेंगे लेकिन आजकल के युवाओं-युवतियों के समझने में थोडा वक्त लग सकता है और नहीं भी क्योंकि आजकल की जेनेरेशन पूरी तरह से कम्प्यूटराईज्ड है। तो मित्रों पहले सिनेमा हॉल में यह होता था कि सभी क्लास में लाईन में लगी कुर्सियाँ होती थी।

लाईन में दो कुर्सीयों के बीच एक हत्था होता था। जो दर्शक उस पर बैठते थे उनके हाथ कुर्सी के हत्थे पर रखना स्वाभाविक होता था। अब जब एक व्यक्ति (दर्शक) ने अपनी दोनों कोहनीयों को फैलाकर कुर्सी के दोंनो ओर के हत्थों पर अपना अधिकार जमा लिया, फिर पडोसी दर्शक को हत्थे पर हाथ(कोहनी) रखने की गुंजाईश खत्म। तो वो बेचारा अपने हाथ अपने पेट पर रखकर ही फिल्म का आनन्द लेता था। परन्तु मन ही मन हत्थे पर हाथ रखने की या (कोहनी) टीकाने की चेष्ठा रखता एवं चान्स देखता रहता। जैसे ही पड़ोसी को जोर से छींक आई या खुजली आई या जम्हाई आई या मुंगफली खाने को हत्थे पर से अपना हाथ उठाया, कि पहले वाले पड़ोसी ने चान्स का लाभ लेते हुए अपनी कोहनी हत्थे पर टीका दी।

अर्थात, अब हत्थे पर अधिकार उसका। पहले वाले ने जो हाथ कुर्सी के हत्थे पर जमाऐ रखा था वो बेचारा अपनी कोहनी टिकाने का प्रयास करें तो भी, पड़ोसी, जिसने बाद में अपना हाथ रखा था वह हाथ की कोहनी हटाने को तैयार ही नहीं होता। जैसे आजकल के नेताओं से जनता भले ही, किसी हादसे की वजह से त्याग -पत्र मांगे किन्तु वह टस-से-मस नहीं होता। जैसे ही पड़ोसी अपना हाथ, किसी कारण से, हटाता, वो अपनी कोहनी हत्थे पर टिका देता और मन ही मन बोलता कि ले बेटा; अब रख हाथ; देखता हूँ।

पड़ोसी दर्शक भी फिल्म में इन्टरवेल की राह देखता और यह समाप्त होते ही हॉल में आकर अपने हाथ कुर्सी के हत्थों पर दोनों कोहनियाँ फैलाकर रख देता, जैसे अपने घर में सोफे पर विराजमान होते हैं। और उसके दाँए-बाऐं बैठे दर्शक बेचारे विलेन की मार खाए हुऐ हीरों की तरह बिना हत्थे के बैठे-बैठे शेष फिल्म को पूरा करते। यह सिलसिला फिल्म के एण्ड तक जारी रहता। आप जानते ही होंगे कि पुरानी फिल्मों में हीरों, ज्यादा मार खाता और दर्शकों की सहानुभूति बटोरता था।

उपरोक्त परिस्थिति तो पुरुष पड़ोसी दर्शक की थी लेकिन जब पड़ोस में महिला दर्शक विराजमान हो तो मामला और भी दयनीय या सेंन्सीटीव हो जाता क्योंकि यदि फिल्म देखने की धुन में, गलती से भी या अनजाने में, आपने कुर्सी के हत्थे पर हाथ रखा और उसने भी हाथ पहले से रखा हो तो बस वाक् युद्ध की नई फिल्म शुरु। अर्थात, वो कुर्सी का हत्था तो यूं समझें कि उस महिला दर्शक के लिए आरक्षित हो गया जैसा कि आजकल हर क्षेत्र में महिला आरक्षण का वर्चस्व है। तो मित्रों, आप में से अधिकांश पाठकों को उपरोक्त, चित्रण का अनुभव हुआ होगा।

यही वस्तु स्थिति मानव जीवन में भी दृष्ठीगोचर होती है। हर क्षेत्र, चाहे शिक्षा हो, व्यवसाय हो,नौकरी हो या राजनीति हो खेती हो, हर फिल्ड में, हाथ रखने की, कॉम्पीटीशन पर कॉम्पीटीशन अर्थात् प्रतिस्पर्धा। हर व्यक्ति सिनेमा हॉल की चेयर के हत्थे पर याने,

उपरोक्त, क्षेत्रों में अपना हक जमाऐ रखना चाहता है। और प्रयासरत भी रहता है। चाहे बहुत जरुरतमंद सही व्यक्ति वंचित रह जाऐ।

जैसे फिल्म देखने के लिये दर्शक टिकिट लेकर हॉल में प्रवेश पाता है कि चलो सुकून से फिल्म का आनन्द लेंगे किन्तु हॉल के भीतर का हाल देखकर व्यतीत हो जाता है। उसी प्रकार लाखों रुपये खर्च कर व्यक्ति ऊँची- ऊँची डिग्री हासिल करता है कि अच्छा जॉब। नौकरी प्राप्त हो जाएगी और ऊँची कुर्सी मिल जाएगी परन्तु आगे का हश्र कुछ और ही होता है और उम्मीदों पर पानी फिर जाता है। उदारहण देखिए:-

विगत दो तीन हफ्ते पहले अखबारों में प्रिय पाठको ने पढ़ा होगा कि महज 300-400 और 1313 चतुर्थ श्रेणी पदों पर चपरासी की भर्ती के लिये 4 लाख आवेदन प्रस्तुत हुऐ एवं प्रतियोगियों ने परीक्षा दी। जिसमें 15000 पोस्ट ग्रेजुऐट (MA., MSc.,M.Com) M.B.A., Ph.D, M.Tech), इंजीनियर और हजारों डिग्री होल्डरों ने चपरासी बनने की इच्छा व्यक्त की, जबकि उक्त पद हेतु न्यूनतम शेक्षणिक योग्यता केवल आंठवीं पास होना तय की गई थी। यदि उपरोक्त चतुर्थ श्रेणी के पदों के लिए अति शिक्षित व्यक्तियों (डिग्री होल्डरों का) चयन हुआ और न्यूनतम आंठवीं वाले वंचित रह गये तो वही हुआ न कि आंठवी पास वाले की कुर्सी के हत्थे पर पोस्ट ग्रेजुऐट (MA., MSc.,M.Com) M.B.A., Ph.D, M.Tech) इंजीनियर ने अपने हाथों की कोहनियों को टिका दिया एवं वास्तविक हकदार या उम्मीदवार, पिटे हुए हीरों जैसा दया का पात्र बन गया। उसी प्रकार इन्हीं पदों में आरक्षण व्यवस्था तो होगी ही और अन्य श्रेणीयों की तरह महिला आरक्षण भी होगा। यहाँ पर भी आठवीं पास महिला के स्थान पर उच्च शिक्षित महिला आसीन होगी। मानो या ना मानो आपातकाल या हड़ताल के वक्त स्कूल/कालेज में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी शिक्षण कार्य भी करें तो नई बात नहीं। सरकार को फायदा।

तो, मित्रों मेरा आशय आपको विदित हो चुका होगा कि मानव जीवन में भले ही संघर्ष महत्वपूर्ण है किन्तु सही अवसर, सही सोच या कुछ मात्रा में भाग्य या ये सब मिलाकर व्यक्ति को, उसके प्रयास पर, उचित कुर्सी के हत्थे उसके हाथ में सौंप, सकते है। जय हाटकेश

जिन्दगी भर हम यही भूल करते रहे
धूल जमीं थी चेहरे पर, हम आईना साफ करते रहे

-यशवंत नागर (सहायक आयकर आयुक्त(से.नि.) (बाँसवाड़ा वासी) उज्जैन (म.प्र.)
फोन-: 0734-2533151
चलते-फिरते: 08989219599

परिस्थितियों से पलायन

पुरानी कहानी है। एक चूहा था उसके मन में आया कि चूहा होना गलत है, क्योंकि बिल्लियों से खतरा रहता है। यदि मैं बिल्ली होता, यह सुनकर ईश्वर को चूहे पर दया आ गई उस चूहे को ईश्वर ने बिल्ली बना दिया। अब उसे कुत्तों से डर लगने लगा यदि में कुत्ता होता, वह सोचने लगा तब मैं घूम सकता था निडर होकर। ईश्वर ने उसे कुत्ता बना दिया। वह घूमा पर जब जंगल में गया तो शेर ने उसे देखा, बच कर आया वह बोला- यदि मैं शेर होता होता तो जंगल में बिना डर के घूमता, खुश होता रह सारे जानवर उससे डर रहे हैं। तभी वहां कुछ शिकारी आ गये उनके तीरों से बचने के लिये उसे छिपना पड़ा। शेर ने सोचा यदि में इन्सान होता, इस बार भगवान को उस पर दया नहीं आई। उन्होंने फिर से उसे चूहा बना दिया तथा कहा मैं तुम्हें कुछ भी बना दूं पर तुम रहोगे चूहे ही।

भावार्थ यही है कि जो भी परिस्थितियों से घबरा कर पलायन करता है उसे कितनी भी सुविधाएं दी जाये वह असंतुष्ट ही रहेगा।

-कु.टीशा नागर, देवास

कन्या पूजन

छम-छम करती घूमती
एक प्यारी सी मुस्कान है बेटी
आंगन में गूंजती-महकती
रोज की अजान है बेटी
इस कठोर-नीरस जीवन में उमंग उत्साह है बेटी
कलयुग में सतयुग का प्रमाण है, पहचान है बेटी
जिन्दगी की तपती धूप में ठंडी-ठंडी छांव है बेटी
माँ-बाप के लौटते बचपन का प्यारा अहसास है बेटी
घर कुल की परी साथी सहेली और प्राण है बेटी
संसार की अनिवार्यता का जीवंत प्रमाण है बेटी
दो-दो कुलों को संवारती और तारती है बेटी
कुल में अवतार लेकर हम पर
करती अहसान है बेटी
प्रकृति से भी सरल और
कोमल भगवान है बेटी
मेरा तो जीवन धन्य है,
गर्व है और अभिमान है बेटी
बेटी का पूजन करो
सब तीर्थों से महान है बेटी।

संकलित-
सौ.दीपिका नागर, देवास

आपके नाम का पहला अक्षर बताएगा कि आपका व्यक्तित्व कैसा है?

ए अक्षर से नाम वाले लोग काफी मेहनती और धैर्य वाले होते हैं। इन्हें अट्रैक्टिव दिखना और अट्रैक्टिव दिखने वाले लोग ज्यादा पसंद होते हैं। ये खुद को किसी भी परिस्थिति में ढाल लेने की गजब की क्षमता रखते हैं। इन्हें वैसी चीज ही भाती है, जो भीड़ से अलग दिखती हो। अध्ययन या करियर की बात करें तो किसी भी काम को अंजाम देने के लिए चाहे जो करना पड़े ये करते हैं, लेकिन लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ये कभी हारकर बैठते नहीं। ए से नाम वाले लोग रोमांस के मामले में जरा पीछे रहना ही पसंद करते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे प्यार और अपने करीबी रिश्तों को अहमियत नहीं देते। बस, इन्हें इन चीजों का इजहार करना अच्छा नहीं लगता। चाहे बात रिश्तों की हो या फिर काम की, इनका विचार बिल्कुल खुला होता है। सच और कड़वी बात भी इन्हें खुलकर कह दी जाए तो ये मान लेते हैं, लेकिन इशारों में या घुमाकर कुछ कहना-सुनना, इन्हें पसंद नहीं। ए से नाम वाले लोग हिम्मती भी काफी होते हैं, लेकिन यदि इनमें मौजूद कमियों की बात करें तो इन्हें बात-बात पर गुस्सा भी आ जाता है।

बी जिनका नाम 'बी' अक्षर से शुरु होता है वे अपनी जिंदगी में नए-नए रास्ते तलाशने में यकीन रखते हैं। अपने लिए कोई एक रास्ता चुनकर उस पर आगे बढ़ना इन्हें अच्छा नहीं लगता। 'बी' अक्षर वाले लोग जरा संकोची स्वभाव के होते हैं। काफी सेंसिटिव नेचर के होते हैं ये। जल्दी अपने मित्रों से भी नहीं घुलते-मिलते। इनकी लाइफ में कई राज होते हैं। जो इनके करीबी को भी नहीं पता होता। ये ज्यादा दोस्त नहीं बनाते, लेकिन जिन्हें बनाते हैं उनके साथ सच्चे होते हैं। रोमांस के मामले में ये थोड़े खुले होते हैं। प्यार का इजहार ये कर लेते हैं। प्यार को लेकर ये धोखा भी खूब खाते हैं। इन्हें खुद पर कंट्रोल रखना आता है। खूबसूरत चीजों के ये दीवाने होते हैं।

सी नाम के लोगों को हर क्षेत्र में खूब सफलता मिलती है। एक तो इनका चेहरा-मोहरा भी काफी आकर्षक होता है और दूसरा कि काम के मामले में भी लक इनके साथ हमेशा रहता है। इन्हें आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता है। अच्छी सूरत तो भगवान देते हीं हैं इन्हें, अच्छे दिखने में ये खुद भी कभी कोई कसर नहीं छोड़ते। 'सी' नाम वाले दूसरों के दुख-दर्द के साथ-साथ चलते हैं। खुशी में ये शरीक हों या न हों, लेकिन किसी के गम में आगे बढ़कर ये उनकी मदद करते हैं 'सी' नाम वालों के लिए प्यार के महत्व की बात करें तो ये जिन्हें पसंद करते हैं उनके बेहद करीब हो जाते हैं। यदि इन्हें अपने हिसाब के कोई न मिले तो मस्त होकर अकेले भी रह लेते हैं।

डी नाम वाले लोगों को हर मामले में अपार सफलता हाथ लगती है। कभी भाग्य साथ न भी दे तो उन्हें विचलित नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनकी जिंदगी में आगे चलकर सारी खुशियां लिखी होती है। लोगों की बात पर ध्यान न देकर अपने मन की करना ही इन्हें भाता है। जो ठान लेते हैं ये उसे करके ही मानते हैं। इन्हें सुंदर या आकर्षक दिखने के लिए बनने-संवरने की जरूरत नहीं होती। ये लोग बॉर्न स्मार्ट होते हैं। किसी की मदद करने में ये कभी पीछे नहीं रहते। यहां तक ये भी नहीं देखते कि जिनकी मदद के लिए उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया है वह उनके दुश्मन की लिस्ट में हैं या दोस्त की लिस्ट में ऊ- 'डी' नाम के लोग प्यार को लेकर काफी जिद्दी होते हैं। जो इन्हें पसंद हो, उन्हें पाने के लिए या फिर उनसे रिश्ता निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। रिश्तों के मामले में इन पर अविश्वास करना बेवकूफी होगी।

इ 'ई' या 'इ' से नाम वाले मुंहफट किस्म के होते हैं। हंसी-मजाक की जिंदगी जीना इन्हें पसंद है। इन्हें अपने इच्छा अनुरूप सारी चीजें मिल जाती है। जो इन्हें टोका-टाकी करे, उनसे किनारा भी तुरंत कर लेते हैं। ई या इ नाम वाले लोग सारी चीजें सलीके और सुव्यवस्थित रखना ही पसंद है। ई या इ से नाम वाले लोग प्यार को लेकर उतने संजीदा नहीं रहते, इसलिए इनसे रिश्ते पीछे छूटने का किस्सा लगा ही रहता है। शुरुआत में ये दिलफैंक आशिक की तरह व्यवहार करते हैं, क्योंकि इनका दिल कब किस पर आ जाए कह नहीं सकते। लेकिन एक सच यह भी है कि जिन्हें ये फाइनली दिल में बिठा लेते हैं, उनके प्रति पूरी तरह से सच्चे हो जाते हैं।

एफ नाम वाले लोग काफी जिम्मेदार किस्म के होते हैं। हां, इन्हें अकेले रहना काफी भाता है। ये स्वभाव से काफी भावुक होते हैं। हर चीज को लेकर ये बेहद कॉन्फिडेंट होते हैं। सोच-समझकर ही खर्च करना चाहते हैं ये। एफ से शुरु होने वाले नाम के लोगों के लिए प्यार की काफी अहमियत होती है। ये खुद भी आकर्षक होते हैं।

जी से शुरु होने वाले नाम वाले लोग दूसरों की मदद के लिए हमेशा ही खड़े होते हैं। ये खुद को हर परिस्थितियों में ढाल लेते हैं। ये चीजों को गोलमोल करके पेश करना पसंद नहीं करते, क्योंकि इनका दिल बिल्कुल साफ होता है। अपने किए से जल्द सबक लेते हैं और फूंक-फूंक कर कदम आगे बढ़ाते हैं ये। जी से नाम वाले प्यार को लेकर ईमानदार होते हैं। प्यार के मामले में ये समझदारी और धैर्य से काम लेते हैं। कमिटमेंट से पहले किसी पर बेवजह खर्च करना इनके लिए बेकार का काम है।

एच से नाम वाले लोगों के लिए पैसे काफी मायने रखते हैं। ये काफी हंसमुख स्वभाव के होते हैं और अपने आसपास का माहौल भी एकदम हल्का-फुल्का बनाए रखते हैं। ये लोग दिल के सच्चे होते हैं। काफी रॉयल नेचर के होते हैं। और मस्त मौला होकर जीवन गुजारना पसंद करते हैं। झटपट निर्णय लेना इनकी काबिलियत है और दूसरों की मदद के लिए आधी रात को भी ये तैयार होते हैं। प्यार का इजहार करना इन्हें नहीं आता, लेकिन जब ये प्यार में पड़ते हैं तो जी जान से प्यार करते हैं। उनके लिए कुछ भी कर गुजरते हैं ये। इन्हें अपने मान-सम्मान की भी खूब चिंता होती है।

आई से शुरु होने वाले नाम के लोग कलाकार किस्म के होते हैं। न चाहते हुए भी ये लोगों के आकर्षण का केन्द्र बने रहते हैं। हालांकि मौका पड़े तो इन्हें अपनी बात पलटने में पलभर भी नहीं लगता और इसके लिए वे यह नहीं देखते कि सही का साथ दे रहे हैं या फिर गलत का। इनके हाथ तो काफी कुछ लगता है, लेकिन उन चीजों के हाथ से फिसलने में भी देर नहीं लगती। ख से नाम वाले लोग प्यार के भूखे होते हैं। आपको वैसे लोग अपनी ओर खींच पाते हैं जो हर काम को काफी सोच-विचार के बाद ही करते हैं। स्वभाव से संवेदनशील और दिखने में बेहद आकर्षक होते हैं।

जे से नाम वाले लोगों की बात करें तो ये स्वभाव से काफी चंचल होते हैं। लोग इनसे काफी चिढ़ते हैं, क्योंकि इनमें अच्छे गुणों के साथ-साथ खूबसूरती का भी सामंजस्य होता है। जो करने की ठान लेते हैं, उसे करके ही मानते हैं ये। पढ़ने-लिखने में थोड़ा पीछे ही रहते हैं, लेकिन जिम्मेदारी की बात करें तो सबसे आगे खड़े रहेंगे ये। 'क्ष' से नाम वाले लोगों के चाहने वाले कईं होते हैं। हमसफर के रूप में ये जिन्हें मिल जाएं समझिए खुशनसीब है वह। जीवन के हर मोड़ पर ये साथ निभाने वाले होते हैं।

के से नाम वाले लोगों को हर चीज में परफेक्शन चाहिए। चाहे बेडशीट के बिछाने का तरीका हो या फिर ऑफिस की फाइलें, सारी चीजें इन्हें सेट चाहिए। दूसरों से हटकर चलना बेहद भाता है इन्हें। ये अपने बारे में पहले सोचते हैं। पैसे कमाने के मामले में भी ये काफी आगे चलते हैं। स्वभाव से ये रोमांटिक होते हैं। अपने प्यार का इजहार खुलकर करना इन्हें खूब आता है। इन्हें स्मार्ट और समझदार साथी चाहिए।

एल से शुरु होने वाले नाम के लोग काफी चार्मिंग होते हैं। इन्हें बहुत ज्यादा पाने की तमन्ना नहीं होती, बल्कि छोटी-मोटी खुशियों से ये खुश रहते हैं। पैसों को लेकर समस्या बनती हैं, लेकिन किसी न किसी रास्ते इन्हें हल भी मिल जाता है। लोगों के साथ प्यार से पेश आते हैं ये। कल्पनाओं में जीते हैं और फैमिली को अहम हिस्सा मानकर चलते हैं ये। प्यार की बात करें तो इनके लिए इस शब्द के मायने ही सब कुछ हैं। वैसे सच तो यह है कि अपनी काल्पनिक दुनिया का जिक्र ये अपने हमसफर तक से करना नहीं चाहते। प्यार के मामले में भी ये आदर्शवादी किस्म के होते हैं।

एम नाम से शुरु होने वाले लोग बातों को मन में दबाने वाली प्रवृत्ति के होते हैं। कहते हैं ऐसा नेचर कभी-कभी दूसरों के लिए खतरनाक भी साबित हो जाता है। चाहे बात कड़वी हो, यदि खुलकर कोई कह दे तो बात वहीं खत्म हो जाती है, लेकिन बातों को मन में रखकर चलने से नतीजा अच्छा नहीं रहता। ऐसे लोगों से उचित दूरी बनाएं रखना बेहतर है। इनका जिद्दी स्वभाव कभी-कभार इन्हें खुद परेशानी में डाल देता है। वैसे अपनी फैमिली को ये बेहद प्यार करते हैं। खर्च करने से पहले ज्यादा सोच-विचार नहीं करते। सबसे बेहतर की ओर ये ज्यादा आकर्षित होते हैं। प्यार की बात करें तो ये संवेदनशील होते हैं और जिस रिश्ते में पड़ते हैं उसमें डूबते चले जाते हैं।

एन से शुरु होने वाले नाम के लोग खुले विचारों के होते हैं। ये कब क्या करेंगे इसके बारे में ये खुद भी नहीं जानते। बेहद महत्वाकांक्षी होते हैं। काम के मामले में परफेक्शन की चाहत इनमें होती है। आपके व्यक्तित्व में ऐसा आकर्षण होता है, जो सामने वालों को खींच लाता है। ये दूसरों से पंगे लेने में ज्यादा देर नहीं लगाते। इन्हें आधारभूत चीजों की कभी-कभार फ्लर्ट चलता हैं, लेकिन प्यार में वफादारी करना इन्हें आता है। स्वभाव से रोमांटिक और रिश्तों को लेकर बेहद संवेदनशील होते हैं ये।

ओ अक्षर से नाम के लोगों के स्वभाव की बात करें तो बता दें कि इनका दिमाग काफी तेज दौड़ता है। ये बोलते कम हैं और करते ज्यादा हैं, शायद यही वजह है कि ये जल्दी ही उन पर ऊँचाइयों को छू लेते हैं जिनका ख्वाब ये देखा करते हैं। इन सबके बावजूद समाज के साथ चलना इन्हें पसंद हैं। जीवन के हर क्षेत्र में सफल होते हैं। प्यार की बात करें तो ईमानदार किस्म के होते हैं। साथी को धोखा देना इन्हें पसंद नहीं और ऐसा ही उनसे भी अपेक्षा रखते हैं। जिससे कमिटमेंट हो गया, बस पूरी जिंदगी उस पर न्योछावर करने को तैयार रहते हैं ये।

पी से शुरु होने वाले नाम के लोग उलझनों में फंसे रहते हैं। वैसे, ये चाहते कुछ हैं और होता कुछ अलग ही है। काम को परफेक्शन के साथ करते हैं। इनके काम में सफाई और खरापन साफ झलकती है। खुले विचार के होते हैं ये। अपने आसपास के सभी लोगों का ख्याल रखते हैं और सबको साथ लेकर चलना चाहते हैं। हां, कभी-कभार अपने विचारों से इनकी कोशिश इन्हें नुकसान भी पहुँचाती है। प्यार की बात करें तो सबसे पहले ये अपनी छवि से प्यार करते हैं। इन्हें खुबसूरत साथी खूब भाता है। कभी-कभार अपने साथी से ही दुश्मनी भी पाल लेते हैं, लेकिन चाहे लड़ते-झगड़ते सही साथ उनका कभी नहीं छोड़ते।

क्यु से नाम वाले लोगों को जीवन में ज्यादा कुछ पाने की इच्छा नहीं होती। लेकिन नसीब इन्हें देता सब है। ये स्वभाव से सच्चे और ईमानदारी होते हैं। नेचर से काफी क्रिएटिव होते हैं। अपनी ही दुनिया में खोए रहना इन्हें अच्छा लगता है। प्यार की बात करें तो ये अपने साथी के साथ नहीं चल पाते। कभी विचारों में तो कभी काम में असमानता इन्हें झेलना ही पड़ता है। वैसे, आपके प्रति आकर्षक आसानी से हो जाता है।

आर से नाम वाले ज्यादा सोशल लाइफ जीना पसंद नहीं करते। हालांकि, फैमिली इनके लिए मायने रखती है और पढ़ना-लिखना इन्हें नहीं भाता। जो भीड़ करे, उसे करने में इन्हें मजा नहीं आता। ये तो वह काम करना चाहते हैं, जिसे कोई नहीं कर सकता। आर से नाम वाले लोग काफी तेजी से आगे बढ़ते हैं और धन-दौलत की कोई कमी नहीं रहती। अपने से ऊपर सोच-समझ और बुद्धि वाले लोग इन्हें आकर्षित करते हैं। दिखने में खूबसूरत और कोई ऐसा जिस पर आपको गर्व हो उनकी ओर आप खिंचे चले जाते हैं। वैसे वैवाहिक जीवन में उठा-पटक लगा ही रहता है।

एस से नाम वाले लोग काफी मेहनती होते हैं। ये बातों के इतने धनी होते हैं कि सामने वाला इनकी ओर आकर्षित हो ही जाता है। दिमाग से तेज और सोच-विचार कर काम करते हैं ये। इन्हें अपनी चीजें शेयर करना पसंद नहीं। ये दिल से बुरे नहीं होते, लेकिन उनके बातचीत का अंदाज इन्हें लोगों के सामने बुरा बना देती है। प्यार के मामले में ये शर्मीले होते हैं। आप सोचते बहुत हैं, लेकिन प्यार के लिए कोई पहल करना नहीं आता। प्यार के मामले में ये सबसे ज्यादा गंभीर होते हैं।

टी से शुरु होने वाले नाम के लोग खर्च के मामले में एकदम खुले हाथ वाले होते हैं। चार्मिंग दिखने वाले ये लोग खुशमिजाज भी खूब रहते हैं। मेहनत करना इन्हें उतना अच्छा नहीं लगता, लेकिन पैसों की कभी कमी नहीं होती इन्हें। अपने दिल की बात किसी से जल्दी शेयर नहीं करते ये। प्यार की बात करें तो रिश्तों को लेकर काफी रोमांटिक होते हैं। लेकिन बातों को गुप्त रखने की आदत भी इनमें होती है।

यू से शुरु होने वाले नाम के लोग कोशिश तो बहुत-कुछ करने की करते हैं, लेकिन इनका काम बिगड़ते भी देर नहीं लगती। किसी का दिल कैसे जीतना है, वह इनसे सीखना चाहिए। दूसरों के लिए कैसे भी तरह ये वक्त निकाल ही लेते हैं। ये बेहद होशियार किस्म के होते हैं। तरक्की के मार्ग में आगे बढ़ने पर ये पीछे मुड़कर नहीं देखते। आप चाहते हैं कि आपका साथी हमेशा भीड़ में अलग नजर आए। वह साथ न भी हो तो आप हर वक्त उन्हीं के ख्यालों में डूबे रहना पसंद करते हैं। अपनी खुशी से पहले साथी की खुशियों का ध्यान रखते हैं ये।

वी से शुरु वाले नाम के व्यक्ति स्वभाव से थोड़े ढीले होते हैं। इन्हें जो मन को भाता है वही काम करते हैं। दिल के साथ होते हैं, लेकिन अपनी बातें किसी से शेयर करना इन्हें अच्छा भी नहीं लगता। बंदिशों में रखकर इनसे आप कुछ नहीं करा सकते। बात प्यार की करें तो ये अपने प्यार का इजहार कभी नहीं करते। जिन बातों का कोई अर्थ नहीं या यूं कहिए कि हंसी-ठहाके में कही गई बातों से भी आप काफी गहरी बातें निकाल ही लेते हैं।

डब्ल्यू से शुरु होने वाले नाम के लोग संकुचित दिल के होते हैं। एक ही ढर्रे पर चलते हुए ये बोर भी नहीं होते। ईगो वाली भावना तो इनमें कूट-कूटकर भरी होती है। ये जहां रहते हैं वहीं अपनी सुनाने लग जाते हैं, जिससे सामने वाला इंसान इनसे दूर भागने लगता है। हालांकि, हर मामले में सफलता इनकी मुट्ठी तक पहुँच ही जाती है। प्यार की बात करें तो ये न करते हुए ही आगे बढ़ते हैं। हालांकि, इन्हें ज्यादा दिखावा पसंद नहीं और अपने साथी को उसी रूप में स्वीकार करते हैं जैसा वह वास्तव में है।

एक्स से नाम वाले लोग जरा अलग स्वभाव के होते हैं। ये हर मामले में परफेक्ट होते हैं, लेकिन न चाहते हुए भी गुस्से के शिकार हो ही जाते हैं ये। इन्हें काम को

स्लो करना पसंद नहीं, फटाफट निपटाने में ही यकीन रखते हैं ये। बहुत जल्दी चीजों से बोरियत हो जाती है इन्हें। ये क्या करने वाले हैं इस बात का पता इन्हें खुद भी नहीं होता। प्यार के मामले में फ्लर्ट करना इन्हें ज्यादा पसंद है। कई रिश्तों को एक साथ लेकर आगे चलने की हिम्मत इनमें होती है।

वाय से शुरु होने वाले नाम के लोगों से कभी भी सलाह लें, आपको सही रास्ता दिखाएंगे वाह। खर्च के लिए कभी सोचते नहीं, बस खाना अच्छा मिले तो हमेशा खुश रहेंगे। अच्छी पर्सनेलिटी के बादशाह होते हैं। लोगों को दूर से ही पढ़ लेते हैं ये। इन्हें ज्यादा बातचीत करना पसंद आता है। बात प्यार की करें तो इन्हें अपने साथी की कोई बात याद नहीं रहती। हालांकि सच्चे, खुले दिल और रोमांटिक नेचर के होने के कारण इनकी हर गलती माफ भी हो जाती है।

जेड से नाम वाले लोग दूसरों से काफी जल्दी घुल-मिल जाते हैं। गंभीरता इनके स्वभाव में है, लेकिन बड़े ही कूल अंदाज में ये सारे काम करते हैं। जो बोलते हैं साफ बोलते हैं और जिंदगी को इंजॉय करना इन्हें आता है। न मिलने वाली चीजों पर रोने की बजाय उसे छोड़कर आगे बढ़ना इन्हें पसंद है। इन्हें दिखावा नहीं पसंद। इनकी सादगी को देख इन्हें बेवकूफ समझना बहुत बड़ी बेवकूफी होगी। स्वभाव से ये रोमांटिक होते हैं। आपकी ओर कोई भी बड़ी आसानी से अट्रैक्ट हो जाता है। अपने प्यार के सामने आप किसी को अहमियत नहीं देते।

दीपावली पर विशेष

1. दीपावली पर लक्ष्मी पूजन में हल्दी की गांठ भी रखें। पूजन पूर्ण होने पर हल्दी की गांठ को घर में उस स्थान पर रखें, जहां धन रखा जाता है।

2. दीपावली के दिन यदि संभव हो सके तो किसी किन्नर से उसकी खुशी से एक रुपया लें और इस सिक्के को अपने पर्स में रखें। बरकत बनी रहेगी।

3. दीपावली के दिन घर से निकलते ही यदि कोई सुहागन स्त्री लाल रंग की पारंपरिक ड्रेस में दिख जाए तो समझ लें आप पर महालक्ष्मी की कृपा होने वाली है। यह एक शुभ शकुन है। ऐसा होने पर किसी जरूरतमंद सुहागन स्त्री को सुहाग की सामग्री दान करें।

4. दीपावली की रात में लक्ष्मी और कुबेर देव का पूजन करें और यहां दिए एक मंत्र का जप कम से कम 108 बार करें।

मंत्र- ऊँ यक्षाय कुबेराय वैश्रववाय, धन-धान्यधिपतये धन-धान्य समृद्धि मम देहि दापय स्वाहा।

5. दीपावली पर लक्ष्मी पूजन के बाद घर के सभी कमरों में शंख और घंटी बजाना चाहिए। इससे घर की नकारात्मक ऊर्जा और दरिद्रता बाहर चली जाती है। मां लक्ष्मी घर में आती हैं।

6. महालक्ष्मी के पूजन में गोमती चक्र भी रखना चाहिए। गोमती चक्र भी घर में धन संबंधी लाभ दिलाता है।

7. दीपावली पर तेल का दीपक जलाएं और दीपक में एक लौंग डालकर हनुमानजी की आरती करें। किसी मंदिर हनुमान मंदिर जाकर ऐसा दीपक भी लगा सकते हैं।

8. रात को सोने से पहले किसी चौराहे पर तेल का दीपक जलाएं और घर लौटकर आ जाएं। ध्यान रखें पीछे पलटकर न देखें।

9. दीपावली के दिन अशोक के पेड़ के पत्तों से वंदनद्वार बनाएं और इसे मुख्य दरवाजे पर लगाएं। ऐसा करने से घर की नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाएगी।

10. किसी शिव मंदिर जाएं और वहां शिवलिंग पर अक्षत यानी चावल चढ़ाएं। ध्यान रहें सभी चावल पूर्ण होने चाहिए। खंडित चावल शिवलिंग पर चढ़ाना नहीं चाहिए।

11. अपने घर के आसपास किसी पीपल के पेड़ के नीचे तेल का दीपक जलाएं। यह उपाय दीपावली की रात में किया जाना चाहिए। ध्यान रखें दीपक लगाकर चुपचाप अपने घर लौट आए, पीछे पलटकर न देखें।

12. यदि संभव हो सके तो दीपावली की देर रात तक घर का मुख्य दरवाजा खुला रखें। ऐसा माना जाता है कि दिवाली की रात में महालक्ष्मी पृथ्वी पर भ्रमण करती हैं और अपने भक्तों के घर जाती हैं।

13. महालक्ष्मी के पूजन में पीली कौड़ियां भी रखनी चाहिए। ये कौडिया पूजन में रखने से महालक्ष्मी बहुत ही जल्द प्रसन्न होती हैं। आपकी धन संबंधी सभी परेशानियां खत्म हो जाएंगी।

14. दीपावली की रात लक्ष्मी पूजा करते समय एक थोड़ा बड़ा घी का दीपक जलाएं, जिसमें नौ बत्तियां लगाई जा सके। सभी 9 बत्तियां जलाएं और लक्ष्मी पूजा करें।

15. दीपावली की रात में लक्ष्मी पूजन के साथ ही अपनी दुकान, कम्प्यूटर आदि ऐसी चीजों की भी पूजा करें, जो आपकी कमाई का साधन हैं।

16. लक्ष्मी पूजन के समय एक नारियल लें और उस पर अक्षत, कुमकुम, पुष्प आदि अर्पित करें और उसे भी पूजा में रखें।

17. दीपावली के दिन झाड़ू अवश्य खरीदना चाहिए। पूरे घर की सफाई नई झाड़ू से करें। जब झाड़ू का काम न हो तो उसे छिपाकर रखना चाहिए।

देही तो कपाल, का करही गोपाल

बहुत पहले की बात है। एक ब्राह्मण और एक भाट में गहरी दोस्ती थी। रोज़ शाम को दोनों मिलते थे और सुख-दुख की बाते करते थे। दोनों के पास पैसे न होने के कारण दोनों सोचा करते थे कि कैसे थोड़े बहुत पैसा का जुगाड़ करे। एक दिन भाट ने कहा-चलो, हम दोनों राजा गोपाल के दरबार में चलते हैं। राजा गोपाल अगर खुश हो जाये, तो हमारी हालत ठीक हो जाये।

ब्राह्मण ने कहा-देगा तो कपाल, क्या करेगा गोपाल,

भाट ने कहा-नहीं, ऐसा नहीं। देगा तो गोपाल, क्या करेगा कपाल। दोनों में बहस हो गई। ब्राह्मण बार-बार यही कहता रहा- देही तो कपाल, का करही गोपाल।

भाट बार-बार कहता रहा-राजा गोपाल बड़ा ही दानी राजा है। वे अवश्य ही हमें देगा, चलो, एक बार तो चलते है उनके पास, कपाल क्या कर सकता है-कुछ भी नहीं, दोनों में बहस होने के बाद दोनों ने निश्चय किया कि राजा गोपाल के दरबार में जाकर अपनी-अपनी बात कही जाए।

इस तरह भाट और ब्राह्मण एक दिन राजा गोपाल के दरबार में पहुँचे और अपनी-अपनी बात कहकर राजा को निश्चित करने के लिए कहने लगे। राजा गोपाल मन ही मन भाट पर खुश हो उठे और ब्राह्मण के प्रति नाराज़ हो उठे। दोनों को उन्होंने दूसरे दिन दरबार में आने को लिये कहा।

दूसरे दिन दोनों जैसे ही राजा गोपाल के दरबार में फिर से पहुँचे, राजा गोपाल ने अपने देह रक्षक को इशारा किया। राजा के देह रक्षक ब्राह्मण को चावल, दाल और कुछ पैसे दिये। और उसके बाद भाट को चावल, घी और एक कद्दू दिया। उस कद्दू के भीतर सोना भर दिया गया था।

राजा ने कहा-अब दोनों जाकर खाना बनाकर खा लो। शाम होने के बाद फिर से दरबार में हाजिर होना। भाट और ब्राह्मण साथ-साथ चल दिए। नदी किनारे पहुँचकर दोनों खाना बनाने लग गये। भाट ब्राह्मण की ओर देख रहा था और सोच रहा था-राजा ने इसे दाल भी दी। मुझे ये कद्दू पकड़ा दिया। इसे छीलना पड़ेगा, काटना पड़ेगा और फिर इसकी सब्जी बनेगी। ब्राह्मण के तो बड़े मजे हैं। दाल झट से बन जायेगी। ऊपर से ये कद्दू अगर मैं खा लूँ, मेरा कमर का दर्द फिर से उभर आयेगा।

भाट ने ब्राह्मण से कहा-दोस्त, ये कद्दू तुम लेकर अगर दाल मुझे दे दोगे, तो बड़ा अच्छा होगा। कद्दू खाने से मेरे कमर में दर्द हो जायेगा।

ब्राह्मण ने भाट की बात मान ली। दोनों अपना-अपना खाना बनाने में लग गये।

ब्राह्मण ने जब कद्दू काटा, तो ढेर सारा सोना उसमें से नीचे गिर गया। ब्राह्मण बहुत खुश हो गया। उसने सोचा -देही तो कपाल, का करही गोपाल

उसने सोना एक कपड़े में बाँध लिया और कद्दू की तरकारी बनाकर खा लिया। लेकिन कद्दू का आधा भाग राजा को देने के लिये रख दिया।

शाम के समय दोनों जब राजा गोपाल के दरबार में पहुँचे, तो राजा गोपाल भाट की ओर देख रहे थे, पर भाट के चेहरे पर कोई रौनक नहीं थी। इसीलिये राजा गोपाल बड़े आश्चर्य में पड़े। फिर भी राजा ने कहा-देही तो गोपाल का करही कपाल-क्या ये ठीक बात नहीं?

तब ब्राह्मण ने कद्दू का आधा हिस्सा राजा गोपाल के सामने रख दिया।

राजा गोपाल ने एक बार भाट की ओर देखा, एक बार ब्राह्मण की ओर देखने लगे। फिर उन्होंने भाट से कहा-कद्दू तो मैंनें तुम्हें दिया था? भाट ने कहा-हाँ, मैंनें दाल उससे ली। कद्दू उसे दे दिया।

राजा गोपाल ने ब्राह्मण की ओर देखा-ब्राह्मण ने मुस्कुराकर कहा -देही तो कपाल, का करही गोपाल।

-शैलेष नागर

रिश्तों में कड़वाहट

रिश्तों में कड़वाहट क्यूँ?
मन में है घबराहट क्यूँ?
हाथ मिलाते-मिलते थके हैं-
मन में होती है चाहत क्यूँ?
बैरभाव ये रहे क्यूँ कब तक?
मिलती नहीं है राहत क्यूँ?
दिल हुआ पत्थर क्यूँ तेरा?
मन में है झन-झनाहट क्यूँ?
किसे सोचे समझें भारती,
नहीं चेहरे पर मुस्कुराहट क्यूँ?

इन बहारों में...

वक्त तेरी यादों को लिए चलता है
फिर भी ये मौसम नहीं बदलता है,
ये आरजू ये तिशनगी है महफिल में,
जुस्तजू कैसी है, दिल मचलता है?
तेरी दिवानगी में क्या-क्या न हुआ,
उन ख्यालों से दिल दहलता है।
वो कौन बुलाता है देकर के आवाजें
तेरे दीदार की बातों में सफर चलता है,
तेरी रूसवाईयाँ, मेरी तनहाईयाँ ही सही,
दिल गुनहगारे है, कैसे बदल सकता है?
भारती कैसी बनाता तू रहा तकदीरें
इन बहारों में ये दिल क्यूँ जलता है?

-सुभाष नागर 'भारती'
अकलेरा, राजस्थान 326033

बड़ा कौन?

एक बार पंच तत्वों की मंडली एक सुरम्य पर्वत पर पहुँची, चर्चा छिड़ी तो सभी अपनी-अपनी सीख देने लगे-

आकाश ने कहा- तुम्हारा हृदय इतना विशाल होना चाहिये- जितना कि मैं।

पृथ्वी बोली- तुम में सहनशीलता इतनी होनी चाहिये जितनी मुझमें हैं।

वायु ने कहा- तुम्हें मेरी तरह सदैव शांत व शीतल बनें रहना चाहिये।

जल बोला- तुम्हें सभी के लिये उसी प्रकार सहायक बनना चाहिये जैसे कि मैं।

अग्नि ने कहा- तुम्हें सभी प्रकार के अन्याय को उसी तरह भस्म कर देना चाहिये जैसे मैं करती हूँ।

चर्चा का रूख बदलते हुए अब सभी अपने-अपने बड़प्पन का बखान करने लगे- सबसे पहले पृथ्वी बोली- सारी दुनिया का बोझ तो मैं ही उठाती हूँ और मैं ही सबका भरण-पोषण भी करती हूँ। यह सुनकर जल ने कहा- मेरे बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते, न प्राणी न वनस्पति। मेरे बिना सब कुछ सूखने लगता है और चारों ओर त्राहि-त्राहि मच जाती है। मैं ही जीवन हूँ।

इस पर वायु तुरंत बोली मैं दिखती नहीं हूँ तो क्या हुआ? मेरे बिना तो सब की घुटन से मृत्यु ही हो जाती है, मेरे बिना तो अग्नि का भी अस्तित्व नहीं होता, मैं ही सूर्य की तपन की सहायता से सागर के जल को बादल बनाती हूँ- जो वर्षा के रूप में जल देते हैं।

बीच में ही बात काटते हुए अग्नि बोल उठी- यदि मैं उष्मा व रोशनी न दूं तो चहूं और निस्तब्धता के सिवा और क्या बचेगा?

अब आकाश की बारी थी- वह चुपचाप इन सभी की बातें ध्यान से सुन रहा था। अपनी चुप्पी तोड़ते हुए उसने सबसे केवल यही कहा-

'तुम सभी मेरे हो व मेरी ही गोद में खेलते हो।'

बड़प्पन का निर्णय बिना सोच-विचार के तुरंत ही हो गया।

श्रीमद् भागवत् गीता के अध्याय 13 के श्लोक 13 में यही बात टिप्पणी के रूप में दी गई है-

आकाश जिस तरह वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी का कारण रूप होने से उनको व्याप्त करके स्थित है- उसी तरह परमात्मा भी सबका कारण रूप होने से सम्पूर्ण चराचर जगत् को व्याप्त करके स्थित है।

-मोरेश्वर मंडलोई, खंडवा

मेरे पिता

मेरे पिता एक व्यक्तित्व हैं
अस्तित्व हैं, लिए तत्व-बोध
कर्त्तव्य-बोध के पथ पर..।
सदैव,
मार्ग-दर्शक है, सजग है, समर्पित हैं,
बहुत अनुशासित गर्वित और हर्षित है
जीवन के अंधियारों-उजियारों में..
मेरे पिता,
छाया है, वटवृक्ष की,
जीवन के संघर्ष की,
वो जन्मदाता, भाग्य-विधाता,
हम सभी के प्यारे सबसे न्यारे,
जिनकी हार में भी जीत है वो
परम्पराओं आदर्शों के गीत है,
मेरे पिता...।

-सुभाष नागर 'भारती'
अकलेरा, राजस्थान 326033

मानव सेवा ही उत्कृष्ट कर्मयोग

वह जिसने इस पृथ्वी पर जन्म लिया है उसको अपने शरीर के निर्वाह के लिये कर्म करना होता है। समाज में चाहे कोई किसान हो, श्रमिक हो, व्यापारी हो, प्रशासक हो, सैनिक हो, लेखक हो, वैज्ञानिक हो अथवा किसी भी उचित अथवा अनुचित कार्य में लगा हो, अपने जीवन-यापन के लिए कार्य करना होता है।

संत श्री विनोबाजी ने अपने गीता प्रवचन में भगवान द्वारा गीता में कहे गए तीन सिद्धांत का उल्लेख किया है-

- साधक को चाहिए कि वह अधर्म में टेढ़े-मेढ़े रास्ते को छोड़कर कर्म करने का सात्विक सहज एवं सरल मार्ग पकड़े।
- देह क्षण भंगुर है- यह समझकर उसका उपयोग अच्छे कर्म करने के लिए करें।
- आत्मा की अखंडता और व्यापकता का मान जागृत रखें।

साधारणतया यह पाया गया है कि व्यक्ति में कर्म करने के संदर्भ में उसके पालन-पोषण एवं संस्कारों के आधार पर समय के साथ भिन्न-भिन्न वृत्ति का विकास होता है। गुणात्मक विश्लेषण के आधार पर विकसित वृत्तियों को तीन प्रकार का बताया गया है- रजोगुणी, तमोगुणी एवं सत्वगुणी।

- कुछ लोगों के लिए कर्म का फल पाना उनका अधिकार है- यह उनकी रजोगुणी वृत्ति को दर्शाता है।
- कुछ लोगों के अनुसार- यदि फल न मिले तो वे कर्म ही नहीं करेंगे- यह उनकी तमोगुणी वृत्ति को दर्शाता है।
- गीता एक तीसरी वृत्ति बताती है। उसके अनुसार- 'कर्म तो अवश्य करो पर फल में अपना अधिकार मत मानो।' पहले और पीछे कहीं भी फल की आशा मत रखो। गीता के अनुसार उपर्युक्त दोनों वृत्तियों से ऊपर उठो- सत्वगुणी बनो- साथ में यह भी ध्यान रहे कि कर्म उत्कृष्ट होना चाहिए।

प्रायः सकाम व्यक्ति कर्म को स्वार्थ की दृष्टि से देखता है। जिसके कारण उसका काफी समय व शक्ति व्यर्थ जाती है, जबकि फल की इच्छा रहित निष्काम प्रवृत्ति के व्यक्ति का प्रत्येक क्षण-सारी शक्ति कर्म में ही लगी रहती है। विद्वानों ने इस फल त्याग की वृत्ति को जीवन की कला कहा है।

हम सड़क पर चलते हैं, वृक्ष के नीचे थकने पर आराम करते हैं, कुएं अथवा नल द्वारा पानी पीते हैं। बैंक में पैसा रखते हैं। निकालते हैं। रेल में सफर करते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण है जहाँ अपने निर्वाह के लिए जगत से सेवा लेनी पड़ती है। अतः वस्तुस्थिति ऐसी है जहाँ मानव का यह परम धर्म हो जाता है कि वह सबके हित के लिए कर्म करें। जितना वह लेता है उससे अधिक अपनी सेवा द्वारा देने की चेष्टा करे।

परमश्रद्धेय स्वामी रामसुखदासजी के अनुसार हमको जो कुछ मिला है वह सृष्टि से मिला है। इस कारण ईमानदारी से उसे सृष्टि की सेवा में लगा देना चाहिए। यही हमारा परम कर्त्तव्य है। यही गीता का कर्मयोग है।

कर्मयोग में सबसे बड़ा बाधक है- मनुष्य का अपना स्वार्थ। यह स्वार्थ भावना अपने लिए तो होती ही है, साथ में अपने कुटुम्ब के लिये, अपनी जाति के लिए, अपने देश के लिये भी हो सकती है। जितनी अधिक स्वार्थभावना होगी, उतने ही अधिक तुच्छ भाव आएंगे। घर में पालन-पोषण करने वाला व्यक्ति स्वयं इस

प्रकार की मानसिकता अपना ले कि वह कमाता है। अतः सब कुछ उसी के लिए है तो क्या यह न्याय-संगत प्रवृत्ति समझी जाएगी? ऐसे में माता-पिता, पत्नी व बच्चों का क्या होगा? ऐसी परिस्थिति में घर परिवार किस प्रकार चलेगा? इस प्रकार की स्वार्थी प्रवृत्ति के बहुत से व्यक्ति हो जाएं तो परिवार समाज और विशेष कर वृहत्ताकार सृष्टि का कार्य किस प्रकार चलेगा? भगवान ने गीता में सृष्टि चक्र के अनुसार न चलने वाले मनुष्यों का जीवन पापमय कहा है :

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायु रिन्द्रियारामो मोघां पार्थ स जीवति।।3.16।।

हे अर्जुन! जो मानव इस लोक में परम्परा से प्रचलित सृष्टि-चक्र का पालन नहीं करता वह इन्द्रियों के द्वारा भोगों में लिप्त रहने वाला अघायु (पापमय जीवन बिताने वाला) मनुष्य संसार में व्यर्थ ही जीवित रहता है।

विद्वानों के अनुसार संसार तथा मनुष्य दो वस्तु नहीं है। जैसे शरीर के साथ अङ्गों का और अङ्गों का शरीर के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है उसी प्रकार संसार का व्यक्ति के साथ व व्यक्ति का संसार के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। मनुष्य का प्रायः ऐसा स्वभाव हो गया है कि जिसमें उसको अपना स्वार्थ दिखाई देता है। उसी कर्म को बड़ी तत्परता से करता है। वर्तमान में घरों में, समाज में जो अशान्ति कलह, संघर्ष देखने में आ रहा है उसका मूल कारण यही है कि लोग अपने अधिकारों की मांग तो करते हैं पर कर्त्तव्य पालन नहीं करते। यह सांसारिक प्रवृत्ति है- देने के भाव से समाज में एकता, प्रेम उत्पन्न होता है। जबकि लेने के भाव से संघर्ष उत्पन्न होता है। मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो बुद्धि पूर्वक सभी को अपने कर्त्तव्य-कर्मों से तृप्त कर सकता है।

कर्म किए बिना मनुष्य के लिए शरीर निर्वाह सम्भव नहीं है। जब कर्म अपने लिए न करके दूसरों के लिए किया जाता है तब वह कर्मयोग कहलाता है। मनुष्य द्वारा मानवता की निःस्वार्थ सेवा करना ही कर्मयोग है। व्यक्ति द्वारा की गई सेवाओं के लिए उसे धन्यवाद अथवा प्रशंसा की आशा नहीं रखना है। उसे अपना कर्त्तव्य समझ कर सेवा करना है। कर्मयोग में सिद्ध महापुरुष कर्मों से अपने व्यक्तिगत सुख, आराम के लिए कोई सम्बन्ध नहीं रखता। उस महापुरुष को ऐसा अनुभव होता है कि पदार्थ, शरीर, इन्द्रियां, अंतःकरण आदि केवल संसार से मिले हैं, व्यक्तिगत नहीं है। अतः इनके द्वारा केवल संसार के लिए ही कर्म करना है। अपने लिए नहीं। कामना, ममता, अंहता, आसक्ति एवं स्वार्थ भाव से कर्म करना ही बंधन का कारण है। इनका त्याग ही कर्मयोगी को समबुद्धि प्राप्त करवाता है।

संसारी व्यक्ति व कर्मयोगी एक से कर्म करते हैं, परन्तु उनकी भावनाओं में भेद होने के कारण कार्यक्षमता एवं कार्यसिद्धि में अन्तर आ जाता है। संसारी मनुष्य जिस कर्म में सुख का अनुभव करता है वहीं कर्मयोगी संयम से काम लेता है। कर्मयोगी के निष्काम कर्मों द्वारा व्यक्ति तथा समाज दोनों का कल्याण होता है। अपने कर्तव्यों का पालन करने वाला कर्मयोगी जहाँ शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ रहता है वहीं उसके द्वारा किए कर्मों से समाज प्रगति की ओर अग्रसर होता है।

किसी भी मनुष्य का जीवन दूसरों की सहायता के बिना नहीं चल सकता। शरीर माता-पिता से मिलता है, विद्या योग्यता शिक्षा गुरुजनों से मिलती है। अन्न, धन, भोज सामग्री, मकान इत्यादि दूसरों से मिलता है। इस प्रकार मनुष्य का जीवन निर्वाह दूसरों पर आश्रित है। अतः मनुष्य द्वारा दूसरों की निःस्वार्थ भाव से सेवा करना आवश्यक है। जिससे वह ऋण से मुक्त हो जाए।

-अवनिन्द्र नागर
मो.09040592383

आत्मा का परकाया प्रवेश — एक सत्य घटना

श्लोक में आत्मा को अमर बतलाया गया है। बस मात्र वह चोला बदल देती है। इसकी पुष्टि में अपने ही परिवार की एक सत्य घटना से करना चाहूँगा। जो मृतात्मा का परकाया प्रवेश आत्मा की अमरत्वता का ज्वलंत एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है। वैसे पुनर्जन्म, भूत, चुड़ैल-डाकन का पर काया प्रवेश भी आत्मा की अमरत्वता के ही उदाहरण हो सकते हैं। यद्यपि वैज्ञानिकों के लिये अभी यह शोध का विषय है। फिर भी वैज्ञानिकों ने इसे यदि पूर्णतः स्वीकारा नहीं है तो नकारा भी नहीं है। तो आइये मुख्य एवं सत्य घटना की ओर तिथिवार अपना ध्यान आकर्षित करता हूँ।

घटना 33 वर्ष पुरानी है।

21 मई 1982- मेरा भतीजा चि. भूपेन्द्र नागर तत्कालीन आयु 20 वर्ष योग्यता हायर सेकण्डरी उत्तीर्ण, सामान्य किन्तु भरा पूरा परिवार।

उक्त दिनांक को भूपेन्द्र समीपस्थ ग्राम निपानिया हुरहुर से मध्यान्ह लगभग साढ़े बारह बजे साइकिल पर लगभग 15-20 किलो गेहूँ लेकर आ रहा था कि अचानक साइकिल एक आम की जड़ से टकराने से गिर गई। उसमें से लगभग आधी मात्रा के गेहूँ पता नहीं कैसे गायब हो गये। घटना से परिवार वालों को कुछ असहज लगा, किन्तु उस दिन बात आई गई हो गई।

22 मई 1982- अर्थात् उक्त घटना के दूसरे ही दिन भूपेन्द्र हमारे 'छैला कुआ' पर प्रातः 8 बजे गया। वहाँ आधा-एक घंटा बाद बेशर्मी (बेसरम) की कुछ डालियाँ छानने के बाद अचानक उसे चक्कर आने लगे और वहीं एक कै भी हुई। अतः वह काम छोड़कर घर आ गया तथा हल्के से चक्कर आने और कंठ अवरुद्ध होने की शिकायत की। नगर के एक प्रायवेट चिकित्सक डॉ.गेहलोत ने एक इंजेक्शन लगाया तथा कुछ गोलियाँ दी। बालक ने अपने को कुछ सहज महसूस किया।

इस प्रकार 21 से 26 मई तक ऐसा ही कुछ चलता रहा। इन दिनों में डॉ.गेहलोत तथा डॉ. शिवेशचन्द्र व्यास ने कुल 10 इंजेक्शन तथा गोलियां आदि दी, किन्तु स्थाई लाभ न हो सका। अतः परिवार ने उसे अन्यत्र चिकित्सालय ले जाने का निर्णय लिया।

26 मई 1982- इस दिन परिवार भूपेन्द्र को शाजापुर चिकित्सालय ले जाने की तैयारी में लगे थे कि डॉ.गेहलोत ने जैसे ही भूपेन्द्र को एक दो गोलियाँ खिलाने का प्रयास कर रहे थे कि अचानक भूपेन्द्र बोला कि 'अब मैं जा रहा हूँ, अब नहीं आऊँगा। इस वाक्य से मैं तथा मेरी भाभी (भूपेन्द्र की माता श्रीमती मनोरमा नागर) घबरा गये कि इसका क्या तात्पर्य है कि मैं जा रहा हूँ। तभी वह अचेत होकर दो-तीन मिनट बाद पुनः होश में आकर पलंग पर बैठ कर बोला काका सा. भूख लगी है, रोटी खाऊँगा। मैं यह सुनकर हैरान-परेशान था कि अभी तो इसके गले में गोली नीचे नहीं उतर रही थी और अचानक यह रोटी की माँग कैसी? मैंने कहा भूपेन्द्र आज दाल-सब्जी नहीं बची है। वह बोला अचार से ही खा लूँगा।

इतने में डॉ.गेहलोद ने हिदायत दी कि इसके गले में खराश है, अतः खटाई कदापि न दें। तब भूपेन्द्र ने दूध के साथ दो या तीन गेहूँ की रोटी खाई। अब मेरी समझ में सारा माजरा आ चुका था। मेरे अग्रज कथा-वार्ता हेतु बाहर ग्राम गये हुए थे अतः मैंने भाभी से एकांत में कहा, इसे कोई बीमारी नहीं है। अब डॉक्टर की नहीं अपितु किसी अच्छे ओझा को दिखाने की जरूरत है। भाई सा. के आने पर उन्होंने इस दिशा में खोजबीन शुरु की।

27 मई 1982- रात्री लगभग एक बजे भूपेन्द्र पुनः थोड़ी देर के लिये असहज हुआ। और कुछ बड़बड़ाया और फिर स्वतः स्वस्थ हो गया और सो गया।

28 मई 1982- प्रातः लगभग 5 बजे फिर आत्मा भूपेन्द्र के बदन में आई तथा अंग्रेजी में बोले It was a great Accident थोड़ी चर्चा हुई और आत्मा बिना अपना परिचय दिये यह कहकर 'बस अब जायेंगे' आत्मा चली गई। इसी दिन मध्यांह में हल्की बूँदा-बूँदी हो जाने से मौसम सुहावना हो गया था। मैंने भाभी को सख्त हिदायत दे दी कि भूपेन्द्र पर कड़ी नजर रखना है, क्योंकि कभी भी कुछ भी घटित हो सकता है।

भूपेन्द्र घर में चढ़ाव के पास पलंग पर लेटा था कि मध्यांह लगभग 3 बजे पलंग पर

से नीचे गिरा। गिरने की आवाज सुनकर मैं बदहवाश दौड़ा और उसे बाहर आंगन में लाना चाहा, लेकिन आत्मा वहीं बैठकर चर्चा करना चाहती थी पर मैं बरबस उसे उठाकर आंगन में ले आया। चर्चा में आत्मा ने अपना परिचय दिया। मेरा नाम श्रीधर पौराणिक है, आयु 90 वर्ष, शंकर का इष्ट तथा एक महात्मा के वेश में हर की पोढ़ी के पास एक छोटा सा आश्रम है। मेरे भाई के दो पुत्र थे, राम-लक्ष्मण। दोनों को काली माँ ने ले लिया।

मैंने पूछा! महात्माजी आप प्रातः 5 बजे पधारे थे, लेकिन बिना चर्चा किये तुरन्त चले गये, क्यों? उन्होंने बतलाया कि आपके पड़ोस में किसी के मर जाने से रोना-धोना चल रहा था ऐसे में यहाँ रुकना हमने उचित नहीं समझा (बात सही थी पड़ोस में बाबूलाल शर्मा पटवारी की एक लड़की मर गई थी) मैंने कहा महंतजी आप अकारण इस बालक को क्यों कष्ट दे रहे हैं? वे बोले, कहाँ कष्ट दे रहा हूँ। मैं तो इससे मिलने यहाँ चला आया। मैं इस बालक पर प्रसन्न हूँ। उन्होंने कारण बतलाया कि दो वर्ष पूर्व श्री शिवचरणजी, जगदीशचन्द्र कैलाशचन्द्र (वर्तमान में पं.श्रीकैलाशचन्द्र कर्मकांडी उज्जैन) तथा यह बालक संस्कृत कॉलेज में प्रवेश हेतु ट्रेन में यात्रा कर रहे थे कि इनसे मेरी भेंट सहयात्री के रूप में हुई थी। मैं कुछ अस्वस्थ था। इसलिये इस बालक ने स्टेशन पर मेरे लिये एनासीन गोली तथा पानी लाकर दिया और खूब सेवा की। मैंने स्टेशन पर ही बच्चों को मिठाई खिलाई और हमने एक-दूसरे से बिदाई ली। विदाई के समय शिवचरणजी मुझे लसुड़िया ब्राह्मण तथा बालक ने पीपलरावाँ आने का निमंत्रण दिया था। तथा लिखित में बेरछा स्टे. से बरगोदा, बटवाड़ी सम्मस खेड़ी होते हुए पीपलरावां तक का मार्ग सुझाया था।

मैं बेरछा तक ट्रेन से पश्चात् पैदल लसुड़िया पहुँचा तो वहाँ ज्ञात हुआ कि शिवचरण जी तो पास के ग्राम निपानिया धाकड़ यज्ञ में गये हैं। अतः वहाँ रुकना ठीक नहीं समझा और खास तो हमें इस बालक से मिलना था। इस लिये यहाँ चले आये। मैंने कहा महात्माजी हम भी पुराणिक है। आपकी दुर्घटना से सद्गति नहीं होने से आपकी आत्मा भटक रही है। आप आज्ञा दें तो हम आपका दशाकर्मादि विधिवत रूप से कर दें। संतात्मा बोले नहीं, मेरी मुक्ति हो चुकी है। कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। मैंने कहा हम आपकी आरती उतारना चाहते हैं वे बोले नहीं भगवान के मंदिर में दीपक लगा दो। एक्सीडेंट के समय अस्पताल में जब अंतिम श्वांस ले रहा था उस समय मुझे इस बालक का स्मरण हो आया कि इस समय यदि वह होता तो मेरी सेवा जरुर करता। कहते हैं कि 'अंत मति सो गति'।

यं यं वाऽपि स्मरन्भावं,
त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमैवैति कौन्तेय,
सदा तद्भाव भावितः।।

गी.अ. 8(5)

यहाँ मैं एक बात बहुत स्पष्ट कर देना अति आवश्यक समझता हूँ कि जिस समय संतात्मा बदन में रहकर बात कर रहे थे उस समय भूपेन्द्र के किशोर चेहरे पर न केवल वृद्धावस्था की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही थी। अपितु वाणी भी गहन-गम्भीर थी। मैंने पूछा महात्माजी हरिद्वार में मेरे अग्रज पं.श्री रामकृष्ण नागर के परिचित एक महंत बाल ब्रह्मचारी बालक दासजी महाराज का आश्रम है। क्या आप उन्हें जानते हैं? वे बोले बालकंदासजी अब ब्रह्मचारी नहीं है। अभी कुछ समय पूर्व उन्होंने शादी कर ली है। मैं उन्हें जानता हूँ पर वे मुझे नहीं जानते। महंतजी बोले 'बस अब हम जायेंगे'।

पाँच-छः वर्ष बाद आऊँगा। जब यह बालक कोई अफसर या जनप्रतिनिधि बन जावेगा। अब जायेंगे। अब हम नहीं आएंगे। यह कहते हुए संतात्मा चली गई। संयोग से भूपेन्द्र को वर्ष 2002 में पीपलरावां की प्रथम नगर परिषद् का प्रथम अध्यक्ष बनने का ऐतिहासिक अवसर मिला और संत की भविष्यवाणी सही सिद्ध हुई। लेकिन छः-सात दिन बात संतात्मा फिर बदन में आई और आने के प्रति क्षमा मांगते हुए हमें अवगत कराया कि मैं आज यह कहने के लिये आया हूँ कि आज से तीन-चार दिन बाद इस बालक के साथ कोई घटना घटेगी तो आप लोग मुझ पर शंका न करें। लेकिन घबराये नहीं। ईश्वर रक्षा करेगा। इस दिन संतात्मा ने बतलाया कि उनका कोई फोटो नहीं है। एक्सीडेंट नेमावर यात्रा के समय तथा मृत्यु अस्पताल में। इस घटना को तीन वर्ष हो गये हैं अर्थात् एक्सीडेंट 1979 में होना चाहिये।

8 जून 1982 को मध्यांह अपरांह लगभग साढ़े चार बजे भूपेन्द्र की तबियत फिर बिगड़ी, लेकिन आत्मा नहीं आई और न ही पूर्व जैसी कोई हरकत महसूस की। बस घबराहट के साथ हाथ-पैर में खूब बांवठिये आये। डॉ.गेहलोत ने एक इंजेक्शन लगाया तथा गोलियाँ दी। एक घंटे में भूपेन्द्र पूर्ण स्वस्थ हो गया।

घटना के कुछ माह पश्चात हमने भूपेन्द्र से इस बारे में पूछा तो उसने हरिद्वार की पूरी घटना जो संत ने बताई थी सुना दी।

कहते हैं कि जिस व्यक्ति की दुर्घटना अथवा आत्महत्या से मृत्यु होती है उसकी आत्मा उतने समय तक भटकती रहती है जिस दिन विधाता ने उसकी सहज स्वाभाविक मृत्यु लिखी है। सम्भवतः संतात्मा की घटना के दो-तीन वर्षों में ही स्वाभाविक मृत्यु लिखी होने से उनकी मुक्ति हो गई। इसीलिये वे फिर बदन में नहीं आये।

यह घटना सिद्ध करती है कि शरीर भस्मी सात अथवा सुपुर्द ए खाक होने पर भी आत्मा का अस्तित्व नष्ट नहीं होता। दुर्घटना में संत की मृत्यु के कारण तभी से मेरे परिवार में प्रतिवर्ष शस्त्र-हतो (घायल चौदस) तिथि को संतात्मा का श्राद्ध करते हैं।

-हरिनारायण नागर
(वरिष्ठ पत्रकार)
13, पं.शुक्ल नगर,
स्टेशन रोड़, देवास
मो. 07272-222822, 9425948177

गोदान की महिमा

गाय के दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर अमृत है। गोमूत्र व गोबर में लक्ष्मी का निवास है। महाभारत में वर्णन है कि एक बार लक्ष्मीजी-कपिला सुरभि आदि गोओं के पास अन्दर प्रार्थना करने लगीं कि मुझे शरण दो-

तब गोएँ बोली- हे लक्ष्मीजी! यशस्विनी! हम आपका मान रखते हुए आपको गोबर और गोमूत्र में निवास करने की स्वीकृति दे रही है। तब से प्रसन्न होकर गोबर और मूत्र में लक्ष्मीजी सदा रहती है।

गोदान कैसे पात्र को देना चाहिये-

त्यागी-तपस्वी वेदपाठी विद्वान ब्राह्मण को गोदान दें। जिनके पास गोचर भूमि हो, चारे की व्यवस्था, गो सेवा में रुचि हो। किसी बड़े मठमंदिर-आश्रम में गोदान करें, जहाँ गो दुग्ध साधु सन्तों, ब्राह्मण-ब्रह्मचारी आदि के उपभोग में आता हो।

गोदान की विधि- किसी योग्य विद्वान ब्राह्मण-गोदान के पूर्व स्वास्तिवाचन तथा गणपति एवं गौरी का पूजन कर लेना चाहिए। फिर प्रतिज्ञा संकल्प लेवें, पुण्याहवाचन कर यजमान अपने दाहिनी और यथा शक्ति चार ब्राह्मणों को उत्तराभिमुख बैठा लें, स्वयं पूर्वाभिमुख होकर आसन पर बैठे।

दक्षिणा की विधि अनुसार गो के अंगों में देवताओं का आह्वान करें। प्रतिष्ठा करें। विविध उपचारों द्वारा गो पूजन करें। प्रदक्षिणा करें। तत्पश्चात् गोपुच्छादक-तर्पण करें। देव तर्पण, ऋषितर्पण दिव्य मनुष्य तर्पण, दिव्य पितृ तर्पण, यम तर्पण, गोत्र तर्पण इत्यादि तर्पण करें। कलश स्थापन कर वरुण पूजन करें। अंत में गोदान संकल्प कर गोदान करें एवं ब्राह्मण की प्रार्थना करें।

गोदान से मनचाहा वरदान मिलता है

दानानामपि सर्वेषां गवां दानं प्रशस्यते।
गावः श्रेष्ठाः पवित्राश्च पावनं ह्येतदुत्तम्।।

सभी दानों में गोदान अधिक प्रशंसनीय है, क्योंकि गौएँ श्रेष्ठ और पवित्र है- पवित्र करती है।

गोदान का महत्व-

न गोदनात् परम् किञ्चित विद्यते वसुकाधिव।
गोहिं न्यायागत्ता दत्ता सद्यते स्तारयते कुलम् ।

अर्थात् गोदान से बड़ा कोई दान नहीं, गोदान से समस्त कुल का उद्धार हो जाता है। गुण सम्पन्न, बछड़ेवाली, दुग्धवती युवा धेनु का दान वस्त्र और दुग्ध पात्र सहित ब्राह्मण को देने से समस्त पातकों से निवृत्ति होती है।

गाय के कान में मंत्र जप करें। 11 बार या 21 बार मंत्र- ॐ ह्रीं नमो भगवत्ये ब्रह्म मात्रे विष्णु भगिन्यै रुद्र देवततायै सर्व पाप्रमोचिन्यै।

गोदान बड़ा ऊँचा, एक बार करो जीवन में। महापुण्य है गोरक्षा, सो बार करो जीवन में।

-आचार्य पं.सन्तोष कुमार व्यास 'देवज्ञ'
बीमा नगर, इन्दौर

लघु कथा

भगवान कहाँ है ?

कल्याणी के दो बेटे थे। दोनों दिन भर शैतानी करते रहते थे। कालोनी के सभी लोग उनसे परेशान थे। कल्याणी उनकी शैतानियों से और रोज रोज की शिकायतों से तंग आ चुकीं थी। कभी दोनों किसी के स्कूटर या बाइक की हवा निकाल देते थे। कभी किसी की कार की ड्राइविंग सीट के सामने का शीशा काला पोत देते थे। किसी का दरवाजा बाहर से बंद कर देते तो कभी किसी के घर की क्यारियो से फूल तोड़ लेते। कालोनी में सब जानते थे कि ये सब करतूतें कल्याणी के दोनों बेटों की है। एक दिन कल्याणी पास के एक मंदिर के पुजारी के पास पहुंची और याचना की कि वे उसके दोनों बेटों के मन में भगवान का डर इस कदर पैदा कर दे कि वे सारी शैतानियाँ छोड़ कर अच्छे बन जाएँ। पुजारी जी ने उसे आश्वासन दिया और कहा कि वह दोनों बच्चों को एक साथ न भेजे। कल्याणी ने पहले छोटे बेटे को पुजारी के पास भेजा। उसकी उम्र ग्यारह के आसपास थी।

पुजारी ने उसे पास में बैठाया और उससे पूछा-अच्छा, बेटा क्या तुम जानते हो, भगवान कहाँ है ?

बच्चा असमंजस में पड़ गया, पर उसने चुप रहना ही ठीक समझा कोई जवाब नहीं दिया। पुजारी ने थोड़ी ऊँची आवाज में फिर पूछा, भगवान कहाँ है ?

बच्चा समझ नहीं पा रहा था कि क्या माजरा है, वह फिर चुप ही रहा। लेकिन पुजारी ने तीसरी बार जब फिर यही प्रश्न पूछा तो लड़का जम्प मार कर उठा और भाग गया। वह सीधा अपने भाई के पास पहुंचा, धीरे से उसके कान में फुसफुसाया, भैया, हम बहुत बड़ी कठिनाई में फँसने वाले हैं। बड़े ने चिंतित हो कर पूछा-जल्दी बता हमारी कौन सी शैतानी से ये बवाल मचा है ?

भगवान गायब हैं, और सबको ये लग रहा है कि इसमें भी हमारा ही हाथ है। छोटे ने चिंतित होकर कहा।

आशा नागर, सी-12/9, ऋषिनगर, उज्जैन

पुत्री रत्न प्राप्ति पर बधाई
सौ.राधिका–पवन नागर
(सुपुत्र– सौ.छाया–गिरिजाशंकर नागर, राऊ)
को दिनांक 7 अक्टूबर 2015 पर पुत्री रत्न प्राप्ति पर बधाई
शुभाकांक्षी– समस्त नागर (चक्कीवाला) परिवार,
राऊ, इन्दौर मो.9826042050

माह नवम्बर 2015
प्रथम वैवाहिक
वर्षगांठ
पर हार्दिक शुभकामनाएँ
श्रीमती नंदिता देराश्री (नागर)
श्री रौनकजी तरंगजी देराश्री बड़ौदा
शुभेच्छु– श्रीमती धीरज दवे(नानीजी) उज्जैन
श्रीमती किरण–जगदीशचन्द्र देराश्री (बांसवाड़ा)
श्रीमती उमा–सी.पी.नागर (उज्जैन)
मामी–मामा– श्रीमती प्रीति–प्रवीण दवे, ऋषि नगर (उज्जैन)
श्री प्रखर दवे तथा समस्त देराश्री एवं नागर परिवार

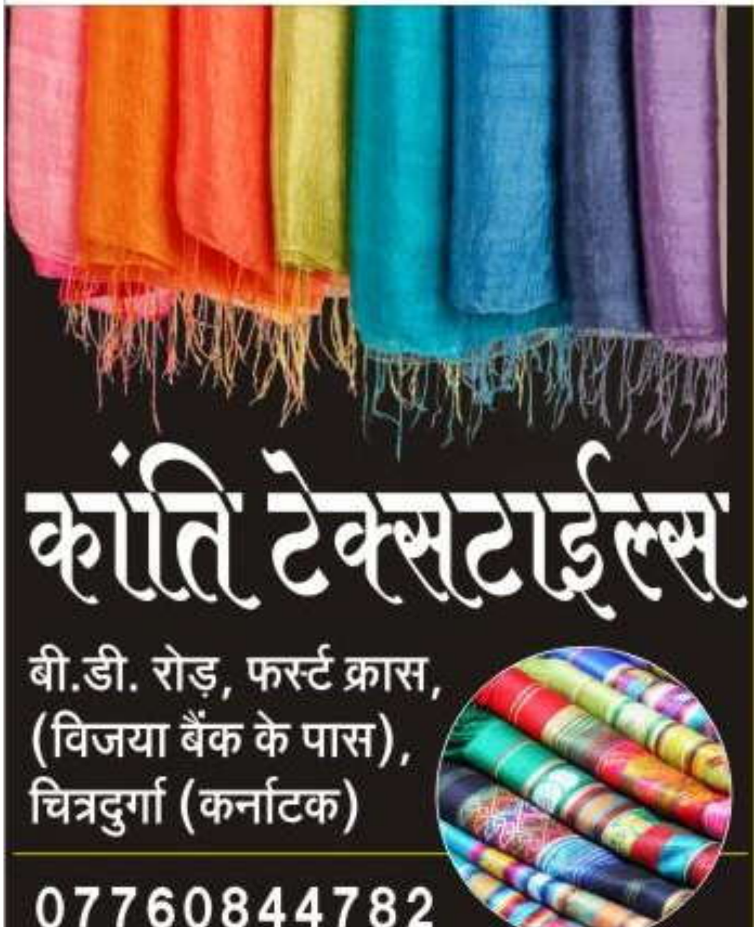
कांति टेक्सटाईल्स
बी.डी. रोड़, फर्स्ट क्रास,
(विजया बैंक के पास),
चित्रदुर्गा (कर्नाटक)
07760844782

हर्षित ज्वैलर्स
मुकेश नागर
9731355018
ओल्ड पोस्ट ऑफिस रोड़,
मर्चेन्ट बैंक के पास, चित्रदुर्गा

स्मृतिशेष : सरल स्वभाव की धनी श्रीमती ऊषा नागर (कम्मू बेन)

अपने मुख से मां शब्द का उच्चारण होते ही कितने ही अर्थ एवं भाव हमारे मस्तिष्क में उत्पन्न हो जाते हैं। माँ वह शख्सियत है, जो कर्त्तव्यनिष्ठ, दयालू, परिश्रमी, त्यागमयी होती है। अपने परिवार व बच्चों के लिए पूर्णतः समर्पित रहती है। ऐसी ही, अर्पिता एन्क्लेव्ह, नानाखेड़ा उज्जैन निवासी श्री सुनील नागर व सुमित नागर की माताजी तथा प्रोफे. मनोहरलालजी नागर की धर्मपत्नी श्रीमती उषा नागर (कम्मू बेन) का गुरुवार दि. 22 अक्टूबर 2015 को बीमारी के उतार-चढ़ाव उपरांत बाम्बे अस्पताल, इन्दौर में स्वर्गवास हो गया। वे 72 वर्ष की थी।

स्व.कम्मू बेन अपने सरल-सरस व हंसमुख स्वभाव के लिये जानी जाती रही है। वे नम्रता, सौम्यता व शालीनता की प्रतिमूर्ति थी। इसी कारण वे मिलने वालों का मन मोह लेती थी।

स्व.ऊषाजी का जन्म 2 मार्च 1944 में पीपलरावां (देवास) में (स्व.) शिवशंकरजी शुक्ला (जागीरदार सा.) के यहाँ उनकी प्रथम संतान के रूप में हुआ। आपकी माता (स्व.) मणीबाई थी। चार बहनों और दो-भाईयों में कम्मूबेन सबसे बड़ी थीं। इनके एक अनुज डॉ.सतीश शुक्ला स्वास्थ्य विभाग, उज्जैन में ही सेवारत है।

मई 1960 में इनका विवाह (स्व.) घासीरामजी नागर के सुपुत्र- अर्थशास्त्र में प्राध्यापक प्रोफे. मनोहरलालजी नागर के साथ सम्पन्न हुआ। आध्यात्मिक रुचि और विरासत में मिले संस्कारों से सम्पन्न कम्मू बेन की सामाजिक धार्मिक मूल्यों परंपराओं में गहरी आस्था रही है।

श्रीमती ऊषाजी नागर अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई है। आपके दो सुपुत्र- श्री सुनील और सुमित नागर तथा दो पुत्रियां श्रीमती सीमा-संजीव नागर (मुम्बई) तथा संगीता-प्रदीप नागर-(अटलांटा, यू.एस.ए.) है। 'हाटकेश्वर-वाणी' परिवार तथा संपूर्ण नागर समाज की ओर से (स्व.) ऊषाजी नागर ने प्रकाशित शोक पत्र में सकारात्मक सुधारात्मक नोट दिया है- मामा परिवार के अलावा किसी की पगड़ी स्वीकार नहीं की जाएगी।

-सी.पी. नागर
4/7, भार्गव नगर, उज्जैन

अपने, अपने ही होते हैं
भुलाए नहीं जा सकते
दशम पुण्य स्मरण
स्व.श्रीमती सुशीला जीवनलाल नागर
नागर परिवार 79 एवं 25 गणगौर घाट उदयपुर
श्रद्धावनत- जोशी, नागर, जाधव, तिवारी परिवार, इन्दौर-महू
प्रेषक- पी.आर. जोशी, इन्दौर

22वां पुण्य स्मरण

खिलचीपुर (राजगढ़-ब्यावरा) की प्रथम महिला शिक्षिका स्व.गीतादेवी नागर को हार्दिक श्रद्धासुमन
विनित- नागर-मेहता परिवार
खिलचीपुर, उज्जैन, राजगढ़(ब्यावरा)
अरुण-पवन मेहता (नरसिंहगढ़)

पंचम पुण्य स्मरण | **सप्तम पुण्य स्मरण**

स्व.देवकुंवर नागर राऊ
अवसान दि.29-10-2010

स्व.देवन्द्रा दवे लुनेरा रतलाम
अवसान दि.6-11-2008

ननंद भोजाई के त्याग व सहयोगात्मक दृष्टि व आदर्शों का स्मरण परिवार में उपस्थिति की झलक देता है।

श्रद्धावनत- मनोहरलाल नागर राऊ, भुवनेश दवे, रामलाल दवे लुनेरा, जीवनलाल दवे, विकास दवे इन्दौर व नागर व दवे परिवार राऊ, इन्दौर व लुनेरा

आपके सपनों को साकार करना ही हमारा संकल्प है...

हमारे मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्त्रोत

श्रद्धेय श्री गोवर्धनलालजी मेहता

संस्थापक– दैनिक अवन्तिका

अवसान– 27 नवम्बर

सादर श्रद्धासुमन

श्रद्धावनत– दैनिक अवन्तिका परिवार
एवं श्री हाटकेश्वर धाम के समस्त न्यासीगण

॥ पुण्य स्मरण ॥

स्व.पं.श्री मोतीलालजी जोशी

ब्रह्मलीन कार्तिक सुदी
आँवला नवमी वि.सं.2050

जीवन पर्यन्त सेवाकर्म में लीन रहकर
आपने हमारे लिए भी संस्कारों की
मजबूत आधारशिला रखी है,
आपका पावन स्मरण हमारे
लिए एक प्रकाश स्तम्भ है।

पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन समर्पित

शत् शत् नमन....

श्रद्धावनत– जोशी परिवार उज्जैन, राऊ, बटवाल परिवार वारंगल (आंध्र)

2 नवम्बर 2015

भारत के संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य एवं
निमाड़ गौरव मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री पद्मभूषण

पं.भगवन्तरावजी अन्नाभाऊ मण्डलोईजी

को समस्त नागर समाज सादर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।
समस्त मंडलोई परिवार एवं नागर समाज खण्डवा
के प्रेरणा स्त्रोत कोसादर नमन।

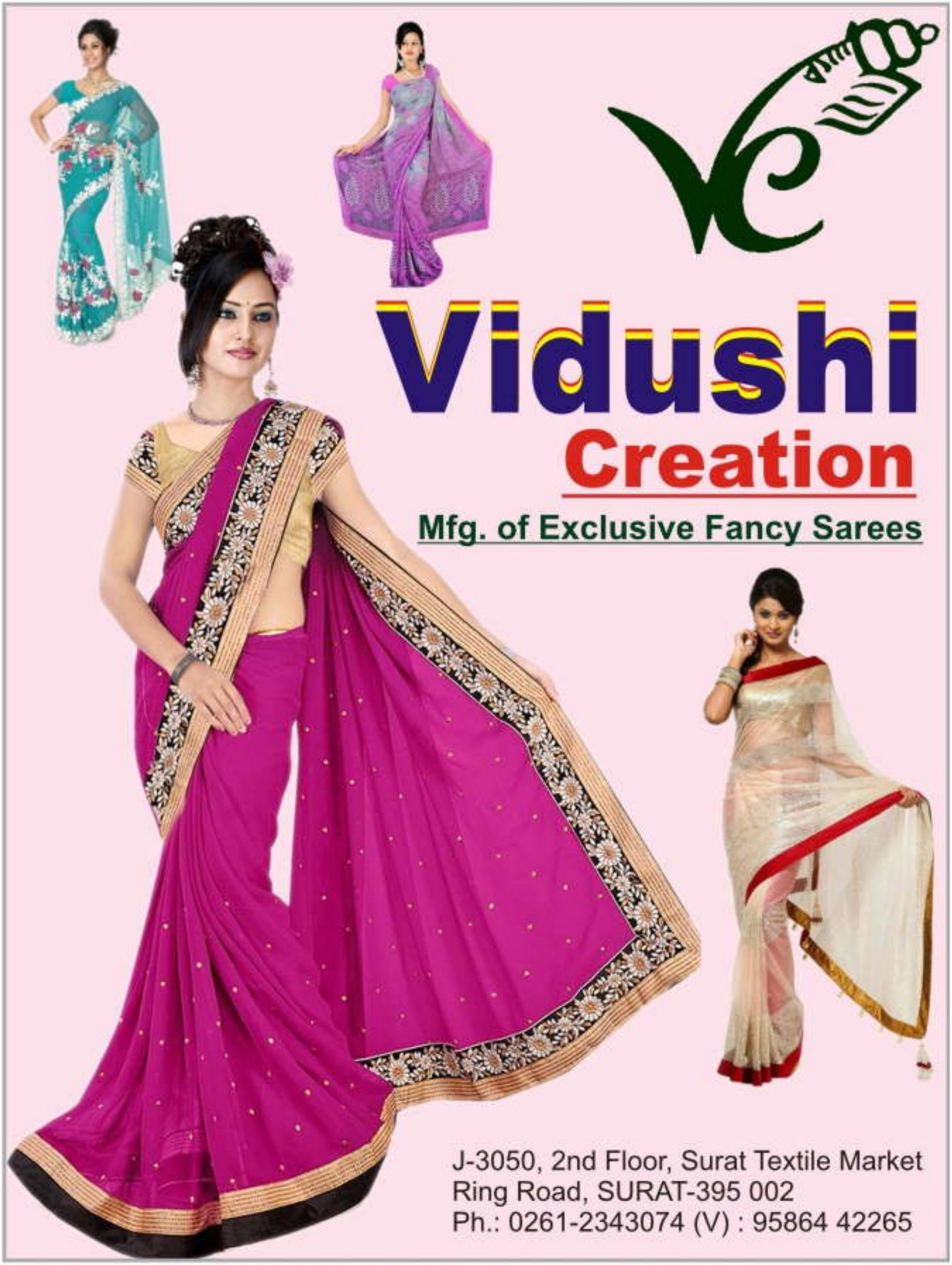
Vidushi
Creation
Mfg. of Exclusive Fancy Sarees
J-3050, 2nd Floor, Surat Textile Market
Ring Road, SURAT-395 002
Ph.: 0261-2343074 (V) : 95864 42265

RYDAK®
(RED)
Strong CTC Tea
रायडक चाय
कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय
Marketed By : KANT & COMPANY LTD.
71, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925
Local Address-
KANT & COMPANY LIMITED
306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा चैतन्य लोक प्रिंटर्स,
20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यही से प्रकाशित
सम्पादक : सौ. संगीता शर्मा मो. 94250 63129
LATE POSTING